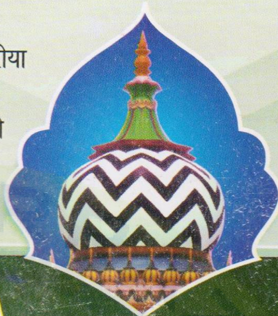
फ़कीहे स्लाम, जानशेने मुफ़्ती आज़म हिन्द ताजुश्शरीया
हज़रत अल्लामा अल्हाज अल्शाह
मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा खां कादरी
अज़हरी के हालाते ज़िंदगी पर मुशतमिल



ला जवाब किताब

हयाते ताजुश्शरीया

जदीद इज़ाफ़ा

मुसन्नीफ़
मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

प्रकाशक
स्लामिक रिसर्च सेन्टर
58,कसगिरान, सौदागिरान, बरेली शरीफ़ यू०पी०

तकसीमकार: **ग़रीब नवाज़ अकेडमी**, आनंद विहार, देहली रोड, बरेली शरीफ़
Mobile:. 9927506409, 9837207863, 9868436228



وارثِ علومِ اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ علیہ

نبیرۂ حجۃ الاسلام رحمۃ اللہ علیہ جانشین مفتیِ اعظم ہند رحمۃ اللہ علیہ

جگر گوشۂ مفسرِ اعظم رحمۃ اللہ علیہ شیخ الاسلام والمسلمین قاضی القضاۃ تاج الشریعہ

مفتی محمد اختر رضا خان قادری ازہری رحمۃ اللہ علیہ

اور خانوادۂ اعلیٰ حضرت کے دیگر علمائے کرام

کی تصنیفات اور حیات و خدمات کے مطالعہ

کے لئے وزٹ کریں

www.muftiakhtarrazakhan.com



/muftiakhtarrazakhan

/muftiakhtarrazakhan1011

/muftiakhtarraza

+92 334 3247192

تاج الشریعہ فاؤنڈیشن



www.muftiakhtarrazakhan.com

हालाते ज़िन्दगी जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती आज़म
ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी
दामत बरकातोहुमुलआलिया

हायात ताजुश्शरीआ

मुसन्निफ़
मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

नाशिर
इस्लामिक रिसर्च सेन्टर
58–कसगरान,सौदागरान बरेली शरीफ़

जुमला हुकूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब : हयात ताजुशरीआ(आल्लाम अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी)

मुसन्निफ़ : मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दी रज़वी

तर्जमा व कोम्पोज़िंग : मौलाना मुहम्मद शफ़ीकुल हक़ रज़वी

मुबाइल न.9997662550

तहरीक : मौलाना आलहाज मुहम्मद सईद नूरी,रज़ा एकेडमी मुम्बई

बएहतिमाम : हाफ़िज़ गुलाम मुहयुद्दीन रज़वी हशमती

साले इशआत : अव्वल फ़रवरी 2008 / सफ़्फ़रुलमुज़फ़्फ़र 1429हिजरी

इशाअत दौमः दिसम्बर 2013 सफ़्फ़रुलमुज़फ़्फ़र 1434 हिजरी

नाशिरः अ़ब्दुल हफ़ीज़ नूरी,हाफ़िज़ आमिर रज़ा क़ादरी

सफ़हात 232

कीमत : 130 / रुपये

मिलने का पता

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58–कसगरान,सौदारिन बरेली शरीफ यूपी

E-mail:mrazvi.razvi@gmail.com

www alahazratbooks.com

Mob:09897385339,08923721109

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर्फ़े आग़ाज़

काम वह ले लीजये तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ो दुरूद

राकिमुस्सुतूर को पीरे तरीक़त मुरशिदे बर हक़ आरिफ बिल्लाहि ताजुश्शरीआ फ़क़ीह-ए-इस्लाम जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म क़ाज़ियुकुज़्ज़ात फ़िलहिन्द नबीरा-ए-आला हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज अश्शाह मुफ़्ती क़ारी मुहम्मद इस्माईल रज़ा उर्फ़ मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अज़हरी दामत बरकातोहुमुल आलिया की सब से पहले ज़ियारत का शर्फ़ उर्स रज़वी 25/सफरुलमुज़फ्फ़र 1402 हिजरी 1981 ई. के मौक़ा पर हासिल हुआ। मैं अम्मे मोहतरम मौलाना हाफ़िज़ बशारत अली रज़वी इमाम व ख़तीब जामेअ मस्जिद चन्दरपुर के हमराह बरेली शरीफ़ हाज़िर हुआ था। उसी मौक़े पर मुझे हज़रत से बैत व इरादत का शर्फ़ भी हासिल हो गया। हज़रत ने शजरा मुबारका पर अपने दस्ते मुक़द्दस से तीन जगह नाम तहरीर फरमा कर अता फ़रमाया था।

हज़रत क़िबला की शख़्सियत कोई मोहताजे तआरुफ़ व बयान नहीं, अल्लाह तआला ने आप की ज़ाते बा बरकत को बैनलअक़वामी सतह पर मरज-ए-ख़लाइक़ बना दिया है, तिशनिगाने उलूम व मअरफ़त आप से आ कर इक्तिसाबे फ़ैज़ हासिल करते हैं। आप की ज़ाते गिरामी उन नुफ़ूसे

कुद्सिया में से है जिन की इलमी शौकत व जलालत, अज़मत व बुज़ुर्गी,तक़वा व तहारत,मुसल्मिुस्सुबूत के दर्जा पर फ़ाइज़ है। आप के फ़ज़ाइल व कमालात,उ़लूम व फुनून, ख़िदमात व कारनामे और जोह्द व तक़वा का डंका शश जिहालते आलम में बज रहा है।

अलह़म्दु लिल्लाह मेरी ज़िन्दगी के इन्तिहाई मुबारक व मसऊद अय्याम हैं कि उस हक़ीर को अपने मुरशिदे गिरामी की मुईत में सफ़र व हज़र और शब व रोज़ रहना नसीब हुआ है। और बहुत क़रीब से आप के मामूलात व मशग़ूलात देखने और इरशादात सुनने का मौक़ा हर रोज़ मिलता है। बिला शुबह आप की पूरी ज़िन्दगी शरीअ़त व तरीक़त और सुन्नत नबविया(स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के सांचे में ढली हुई है। मैंने अपनी 35/साला ज़िन्दगी में जिन अस्लाफ़ की ज़ियारत की,और उनके साथ कुछ लमहात गुज़ारने का मौक़ा मिला,और जिन की विलायत व बुज़ुर्गी,तक़वा व परहेज़गारी की क़स्म खाई जा सकती है। इस मुबारक जमाअत औलिया,उ़लमा व मशाइख के सरख़ील व सरदार ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अख़तर रज़ा क़ादरी अज़हरी बरेलवी हैं। मैंने ह़ज़रत से सूरए फ़ातिह़ा की तफ़सीर,अलक़यूबी,अलअशबाह वन्नज़ाइर, दलाइलुलख़ैरात शरीफ़,क़सीदा बुर्दा शरीफ़,और बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा कुतुब भी पढ़ी हैं। मेरे लिए क़ाबिले फख्र की बात यह है कि मेरे साथ ह़ज़रत क़िब्ला और हुज़ूर पीरानी अम्मा साह़िबा की बेकराँ शफ़क़त व मोह़ब्बत और उलफ़त

व मुरव्वत रहती है। हज़रत के साहबज़ादे गिरामी मेरे हमदर्स रफ़ीक़ और पीर ज़ादे हज़रत मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी और आप की शरीके हयात मोहतर्मा राशिदा नूरी साहिबा(भाबी जान साहिबा)की सरपरस्ती व दुआयें हमा वक़्त मुझे हासिल हैं। जो कुछ भी मैं दीन–ए–इस्लाम की ख़िदमत अन्जाम दे रहा हूँ यह सब इन हज़रात बाबरकात की दुआये सहरगाही और सरपरस्ती का नतीजा है। अल्लाह तआला इस ख़ानवादे को हज़ारों हज़ार साल सलामत रखे,और मुआनिदीन व हासिदीन से महफूज़ व मामून रखे (अमीन) जिन्होंने आज के तरक़्क़ी याफ़ता दौर में खुर्दनवाज़ी की एक बेहतरीन मिसाल क़ाइम की है।

राक़िमुस्सुतूर ने 1989 ई. में हज़रत क़िबला से वक़्तन फ़ौक़तन हालात दरयाफ़्त किए थे,वह इस वक़्त तरतीब दे कर अपनी किताब "मुफ़्ती–ए–आज़म और उन के ख़ुलफ़" जिल्द अव्वल"(मतबूआ रज़ा एकेडली मुम्बई 1990ई.)में शामिल कर दिए थे। मगर चन्द सालों से अकसर यह दिल में उमंग उठती थी कि हज़रत के तफ़सीली हालात मुरत्तब करूँ,मगर क़ौमी व मिल्ली मसरूफ़ियात और ज़िम्मादारियाँ की वजह से वक़्त नहीं निकाल पाता था। अल्लाह भला करे आली जनाब अल हाज अब्दुर्रहमान ताबानी व जनाब अब्दुल्लतीफ़ रज़वी (ओहदेदारान आलइन्डिया जमाअत–ए–रज़ा–ए मुस्तफ़ा शाख़ मालीगाँ ज़िला नासिक)का,उन्होंने फ़ौन पर फ़ौन कर

के मुझे लिखने पर मजबूर कर दिया। अलहम्दु लिल्लाह यह ज़ेरे नज़र किताब सिर्फ़ एक हफ़्ता की मेह़नत में तैयार हो कर आप के हाथों में है। अब कारनामे,और ख़ुलफ़ा व तलामिज़ा पर मब्सूत अन्दाज़ में लिखूगा। क़ारेईन से दुआ की दरख़्वास्त है।

आख़िर में उस्ताज़ गिरामी मुहक़्क़िक़ अस्र हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी मद्दजुल्लाहुल आली(क़ाज़ि-ए-शरअ व मुफ़्ती शहर रामपुर)का ममनून हूँ कि आप ने नज़रे सानी के साथ बहुत जगह इस्लाह फ़रमाकर हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई। हमदर्द क़ौम व मिल्लत हज़रत मौलाना अलहाज मुहम्मद सईद नूरी का भी मशकूर हूँ, और मौलाना अमीनुलक़ादरी कि उन्होंने तस्हीह़ की ज़िम्मेदारी बख़ुबी निभाई। अल्लाह तआला सभी को ख़िदमते दीन-ए-इस्लाम और मसलक अहले सुन्नत की मज़ीद तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और बारगाहे मुरशिद में यह ह़क़ीर सा नज़राना अक़ीदत व मोहब्बत क़बूलियत से सरफ़राज़ हो जाये। (आमीन)

सगे आस्ताना-ए-रज़विया

मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

(14/शअबानुल मुअज़्ज़म 1428 हिजरी/28अगस्त2007ई.

डाइरेक्टर इस्लामिक रीसर्च सेन्टर

क़ौमी जन्रल सिक्रेट्री

अलइन्डिया जमाअत-ए-रज़ा-ए-मुस्तफ़ा

तक़दीम

अज़: मुहक़्क़िक़ अस्र हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली हसनी रज़वी मुहद्दिस रामपुरी

मर्कज़ी इल्म व इरफ़ान बरेली शरीफ़ और ख़ानवाद–ए–रज़विया तैरहवी सदी हिजरी में मुजाहिद जंग आज़ादी इमामुलउलमा मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा अली ख़ाँ नक्शबन्दी बरेलवी (1286 हिजरी)उनके फ़रज़न्द सईद इमामुल मुतकल्लिमीन मुफ़्ती मुहम्मद नक़ी अली ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(1297हिजरी)चौदहवी सदी हिजरी में इमामुलउलमा के पोते और इमामुलमुतकल्लिमीन के नूरे नज़र लख़्ते जिगर, फ़रज़न्द सईद,इस्लाम के बतले जलील,हुज्जतुल अस्र, फ़रीदुदहर,यगाना–ए–अस्र,आशिक़े रसूल,चौदहवी सदी हिजरी के मुज़द्दिदे आज़म, आला हज़रत,इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी कुद्दुस सिर्रुहुम(1921ई / 1340)की इल्मी,दीनी,इशक़ी और फ़िक्री अबक़रियत,तजदीदी कारनामों और लाज़वाल ख़िदमत मकबूला के सबब पूरे आलम–ए–इस्लाम में मशहूर व मअरूफ़ है। ग़ैर मुन्क़सिम हिन्दुस्तान में अपनी इल्मी व रुहानी ख़िदमत,दीनी क़ियादत और मुतावातिर फ़िक्री वरासत की हिफ़ाज़त और तब्लीग़ी व इशाअती लिहाज़ से देहली के मशहूर ख़ान्दान वलियुल्लाह से भी ज़्यादा नुमायाँ और महबूब व मक़बूल ख़ानवादा है। इन दोनों ख़ानवादों की ख़िदमत जलीला बर्रे सग़ीर की इस्लामी तारीख़ का निहायत अहम लाइक़ क़द्र व मन्ज़िलत

और शान्दार व ताबनाक हिस्सा हैं। दोनों ख़ान्दानों ने बर्रे सग़ीर ही नहीं बल्कि पूरी इस्लामी दुनिया के मुसलमानों और अहले ईमान को मुतास्सिर किया है। दोनों ख़ान्दानों में कई नसलों और पुशतों पर मुहीत इल्मी व दीनी ख़िदमात का एक ऐसा तसलसुल मौजूद है जो दूसरे ख़ानवादों में बहुत कम पाया जाता है।

ख़ान्दाने वलियुल्लाह जिस के ख़ियालात व नज़रियात को "फ़िक्र वलियुल्लाही" के नाम से याद किया जाता है। यह ख़ान्दान इमाम आज़म अबूहनीफ़ा का मुक़ल्लिद था, तसव्वुफ़ का इल्मबरदार था, अस्लाफे किराम की इक़दार व रिवायात का वारिस व अमीन था। इस ख़ान्दान के साहबजादगान, नबीरगान उनके सच्चे वारिस थे जो सब के सब सवादे आज़म अहले सुन्नत के अकाबिर उलमा व मशाइख़ और सुफ़िया किराम की उसी रोश पुर क़ाइम व दाइम रहे जो उन्हें बतौर वरासत मिली थी। सिवा–ए–मौलवी इस्माईल देहलवी के कि यह ख़ान्दान वलियुल्लाह का बदनाम ज़माना एक फ़र्द था। हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी (1172हिजरी 1762 ई) के नाफ़रमान व नालाइक पोते शाह मुहम्मद इस्माईल देहलवी (1246हिजरी 1831ई) फ़िक्री व ऐअतिक़ादी या जमहूरे उम्मत के मुतवारिसात व राइज इस्लामी अक़ाइद से मुतासादिम बहुत से अफ़कार व ख़ियालात के सबब इस ख़ान्दान के इल्मी व दीनी वक़ार और मक़बूलियत को बड़ा नुक़सान पहुँचा और इस नंगे ख़ान्दान शख़्स ने अपने ही

बुज़ुर्गों से खुली बग़ावत कर दी,जिस से इस ख़ान्दान की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत दाग़दार हो गई। फिर इस्माईल देहलवी के मानने वालों ने यह सितम भी किया कि ह़ज़रत शाह वलियुल्लाह मुह़द्दिस देहलवी उन के साह़बज़ादगान और नबीरगान की तसानीफ़ व तालीफ़ात में तह़रीफ़ कर के उन के अस़ल अक़ाइद व नज़रियात और मामूलात को मस्ख़ कर दिया। और अपने नये नज़रियात के मुताबिक़ बनाने की कोशिश की और"फिक्रे वलियुल्लाह" को"फ़िक्र इब्ने तैमीया" से जोड़ दिया फिर उस ख़ान्दान में कोई ऐसा नुमाया आलिमे दीन भी पैदा न हुआ जो तह़रीफ़ात को अस़ल अक़ाइद व नज़रियात और मामूलात से अलग कर के"फ़िक्र वलियुल्लाह" को मुमताज़ और ताबनाक करता और अस़ल"फ़िक्र वलियुल्लाह"को आगे बढ़ाता। लिहाज़ा रोज़ बरोज़ ख़ान्दाने वलियुल्लाह की मक़बूलियत और इन्फ़िरादियत गहनाती चली गई। और उस ने एक अ़लाह़ीदा रुख़ तै कर लिया।

जब्कि ख़ानवादा–ए–रज़विया में इमामुलउ़लमा के विसाल के बाद उन के फ़र्ज़न्द गिरामी इमामुलमुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ाँ क़ादरी बरेलवी और मौलाना हादी अ़ली ख़ाँ क़ादरी बरेलवी और उन के पोते आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी क़ुद्दुस सिर्रुहु,दूसरे पोते उस्ताज़े ज़मन अ़ल्लामा ह़सन रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी और तीसरे पोते माहिर इ़ल्म मीरास अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी अ़लैहिमुर्रिज़वान ने इस सिलसिला

को क़ाइम रखा और उस में आला ह़ज़रत फाज़िले बरेलवी ने मज़ीद वुस्अ़त अ़ता कर के शोहरा–ए–आफ़ाक़ और आ़लमगीर बनाया। आ़ला ह़ज़रत के विसाल के बाद भी यह सिलसिला तसलसुल के साथ,बिला इन्किताअ़ नुमाया इल्मी व दीनी शख़्सियात का एक ऐसा आ टूट जरीं सिलसिला है जो ता हाल वसीअ़ तर दराज़ है। उन शख़्सियतों में (1) हुज्जतुल इस्लाम मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ह़ामिद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(शहज़ादा–ए–अकबर आ़ला हज़रत,1362 हिजरी 1943 ई)।(2) मुफ़्ती आज़म मौलाना मुह़म्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(शहज़ादा–ए–असग़र आला ह़ज़रत 1402 हिजरी 1981 ई)(3)मुफ़स्सिरे आज़म अल्लामा इब्राहीम रज़ा क़ादरी ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(पोते आ़ला हज़रत1385 हिजरी1965ई) (4) अ़ल्लामा हम्माद रज़ा ख़ाँ रज़वी बरेलवी(पर पोता आ़ला ह़जरत म.1375 हिजरी 1965 ई.) (5)रैह़ाने मिल्लत अ़ल्लामा मुह़म्मद रैह़ान रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(पर पोता आ़ला ह़ज़रत म 1405 हिजरी 1985 ई.) (6)ताजुश्शरीआ,फ़कीहे इस्लाम अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद इस्माईल रज़ा ख़ाँ अलमअ़रुफ़ ब मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी अज़हरी मद्दजुल्लाहुल आ़ली(7) उस्ताज़ुल उ़लमा अ़ल्लामा हसनैन रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(दामाद व भतीजे आ़ला हज़रत,1401हिजरी1981ई.) (8) अमीन शरीअ़त अ़ल्लामा सिबतै़न रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी(पर पोते उस्ताजे़ ज़मन मद्द जुल्लाहुलआ़ली) (9)स़दरुल उ़लमा मुफ़्ती मुह़म्मद तह़सीन रज़ा ख़ाँ क़ादरी

बरेलवी(उस्ताज़ ज़मन के पोते म 1428 हिजरी 2007 ई.) (10)अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद तक़द्दुस अ़ली ख़ाँ क़ादरी बरेलवी इब्ने मौलाना सरदार वली ख़ाँ इब्ने मौलाना हादी अ़ली ख़ाँ इब्ने मौलाना रज़ा अ़ली ख़ाँ नक़्शबन्दी बरेलवी(पर पोते इमामुलउ़लमाम 1408 हिजरी1988 ई.)(11)मुफ़्ती ऐजाज़ वली ख़ाँ रज़वी बरेलवी इब्न मौलाना सरदार वली ख़ाँ(पर पोते इमामुलउ़लमा,म1393हिजरी1973ई) अ़लैहिमुर्रहमा वर्रिज़वान नुमाया नज़र आते है।

फ़क़ीहे इस्लाम अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद इस्माईल रज़ा ख़ाँ मारुफ़ ब ताजुशरीआ़ मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी क़ादरी बरेलवी इब्ने मुफ़स्सिर आज़म अ़ल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ(हुज्जतुल इस्लाम के पोते,आ़ला हज़रत के पर पोते और मुफ़्ती आज़म के नवासे)दामत बरकातुहुमल कुद्सिया वलआ़लिया,मतउ़ल्लाहुलमुस्लिमीन बतौल बक़ा–इही–ख़ास तौर से मुमताज़ हैसियत के मालिक हैं। इल्मी व रुहानी दुनिया में मुशारुन इलाहै व मोअ़तमिद और मुस्तनद मरजा अ़लमा व फुक़्हा और मशाइख़ व सूफ़िया हैं। उन मजकूरा बाला उ़लमा व मशाइख़ किराम ने ख़ानवादा–ए–रज़विया की पाकीज़ा और मुक़द्दस रिवायात, अक़ाइद व नज़रियात और अफ़कार को जिन्दा व ताबन्दा रखा। दर्से रज़ा,फ़िक़्हे रज़ा,इशके रेज़ा फिक्र रज़ा और अमले रज़ा से क़ौम को रोशनास किया और उन सब की तब्लीग़ व इशाअ़त में नुमाया किरदार अदा किया और ख़ान्दाने रज़ा के इल्मी व दीनी पलैट फ़ार्म से अपने अपने

आहेद में क़ौम व मिल्लत की भरपुर नुमाइन्दगी की और अपनी ज़र्री ख़िदमात से और ऐसी ग़ैर मामूली शोहरत व मक़बूलियत हासिल की जिस की नज़ीर आज की दुनिया में नहीं मिलती।

अस्रे हाज़िर में आला हज़रत के उलूम व फ़नून के सच्चे वारिस,हुज्जतुलइस्लाम और मुफ़्ती–ए–आज़म के सही जानशीन,रुहानियत के ताजदार,मसन्द बरकातियत के रमज़सनास,रज़वियत के अमीन,ताजुश्शरीआ,फ़क़ीहे इस्लाम, क़ाज़ियुलक़ुज़्ज़ात फिल हिन्द अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अज़हरी दामतबरकातुहुमुल क़ुदसिया हैं जो अहले सुन्नत व जमाअत की आलमी सतह पर इल्मी व दीनी,ऐअतिक़ादी व फ़िक्री क़ियादत व रहबरी फरमा रहे हैं। जिन के आफ़ताबे शोहरत व इक़बाल की किरनें सारे आलम को रौशन व मुनव्वर कर रही हैं। ख़ान्दाने रज़ा के यह तमाम मुतक़द्दिमीन व मुताअख़्ख़िरीन उलमा व मशाइख़ तीन औसाफ़ में इम्तियाज़ी मक़ाम रखते हैं। (1)इश्क़े रिसालत (2) तहफ़्फुज़ व इशाअत इस्लाम व सुन्नियत(3) और फ़िक्ह व इफ़्ता के ज़रीआ ख़िदमत। यह तीन ऐसे औसाफ़ हैं जो ख़ान्दाने रज़ा के अफ़राद में क़द्रे मुश्तरक की हैसियत रखते हैं।

फ़क़ीर नूरी के मुरशिद व मुरब्बी शरीअत व तरीक़त और उस्ताज़ गिरामी वक़ार हज़रत ताजुश्शरीआ मद्द ज़ुल्लाहुल आली में यह तीनों ख़ान्दानी औसाफ़ बदर्जा–ए–अतम मौजूद हैं और इस वक़्त आप ही इस ख़ान्दान की

इल्मी व रुहानी वरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। सन्ने ईसवी के लिहाज़ से आप अपनी उम्रे मुबारक की(72)बहत्तरवीं मन्ज़िल तै कर रहे हैं।

हज़रत ताजुश्शरीआ मद्द जुल्लाहुलआली ने एक ऐसे इल्मी,रूहानी और मजहबी घराने में आँखें खोलीं कि जिस में कई पुश्तों से इल्म व इरफ़ान और रुशद व हिदायत का सिलसिला क़ाइम व जारी था। उन अस्लाफ़े किराम के उलूमे नाफ़िआ और आमाले सालिहा का पाक वर्सा यके बाद दीगरे मुन्तकिल होता रहा जिन की हक़ गोई,हक़ शनासी,जुरअत व बेबाक़ी और इश्क़े रसूल में सरशारी व जांनिसारी,मग़रूराने तख़्त व ताज और बन्दगाने माल व जाह के मुक़ाबिले में इस्तिग़ना व बे नियाज़ी उन्हें अपने इस्लाफ़ के वर्सा में मिली थी। आप की विलादत के वक़्त पर दादा आला हज़रत और जद्दे अमजद हज़रत हुज्जतुलइस्लाम विसाल फ़रमा चुके थे। वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म की उम्र का 36वाँ साल था जिन की दर्स व तदरीस का चढ़ता सूरज पूरे शबाब पर था। दूर-दूर से तिशनिगाने इल्म व फज़्ल परवाना वार हाज़िर हो कर दर्से मुफ़स्सि-ए-आज़म में शरीक हो रहे थे।

नाना जान हज़रत मुफ़्ती आज़म जो अपने वक़्त के फ़र्दे फ़रीद,उलूमे नक़्लिया के ताजदार,उलूमे अक़्लिया के ग़व्वास,मैदाने फ़क़ाहत के शहसवार और मैदाने सियासत के इल्मबरदार थे,अर्ब व अजम में उनकी धूम थी,सारे जहान में उन का चर्चा था,इल्म व फ़ज़ल का आफ़ताब रौशन था,यह

इल्म व इरफ़ान के बह़र नापैदा किनारे थे, जिन की न जाने कितनी मौजें थीं,वह एक कारख़ाना थे,जहाँ पुर्ज़े नहीं ढलते,शख़्सियत साज़ी होती थी,उस रौशन और शख़्सियत साज़ माह़ोल में ह़ज़रत ताजुशरीआ का अहदे तिफ़्ली शुरू हुआ। ह़ज़रत ताजुशरीआ को पीरे मजाज़ ज़ुबदतुस्सादात अहसनुलउ़लमा ह़ज़रत अ़ल्लामा सैद हैदर हुस्न क़ादरी बरकाती नूरी(1995 ई)का ईक़ान और नामूर नाना जान ह़ज़रत मुफ़्ती आज़म का शोहरा आफ़ाक़ ईमान मयस्सर आया। होश की आँखें खुलीं तो हर तरफ़ कुरआन व सुन्नत की हुक्मरानी नज़र आई। फ़िक्ह ह़न्फ़ी का सिक्का चलते देखा,दीन मतीन और अ़ज़मते रसूल की ह़िमायत,अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मुनों की अ़दावत में अपने नाना जान और वालिद माजिद को यक्ता–ए–रोज़गार पाया।

ह़ज़रत ताजुश्शरीआ ने अपने वालिदैन,दारूलउ़लूम मन्ज़र–ए–इस्लाम और जामिआ़ तुलअज़हर क़ाहिरा मिस्र में मुख़्तलिफ़ असातिज़ा किराम से ता़लीम व तरबियत पाई और सन्द व दस्तार से सर फ़राज़ हुये। जामिआ़ अजहर में हुसूल इल्म के दौरान ही वालिद माजिद ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे आज़म का विसाल हो चुका था,तीन साल के बाद जामिआ़ अज़हर मिस्र से वापस हुई। बरेली शरीफ़ में ह़ज़रत मुफ़्ती आज़म की सर परस्ती में तारीख़ी इस्तिक़बाल हुआ। वापसी के बाद 1967 ई में अपने मादर इल्मी,यादगार रज़ा,मरकज़ इल्म व इरफान,जामिआ रज़विया,"मन्ज़र–ए–इस्लाम"में दर्स व तदरीस का सिलसिला शुरू फ़रमाया। आज दर्स व

तदरीस का तअ़ल्लुक़ उन के जिस्म से नहीं बल्कि उन की रूह से है,दर्स तदरीस उन की रूहानी ग़िज़ा है। ग्यारह साल बाद आप के बरादरे अकबर ह़ज़रत रैह़ाने मिल्लत ने दारुलउ़लूम ''मन्ज़र–ए–इस्लाम''के स़दरुलमुदर्रिसीन की ज़िम्मददारी आप के कांधों पर डाल दी। आप ने इस मन्स़ब की ज़िम्मेदारियों को हुस्न व ख़ुबी के साथ निभाते हुये तालीमी व तन्ज़ीमी एतिबार से दारुलउ़लूम की शोहरत और क़बूलियत का पाया बहुत बलन्द फ़रमा दिया। मस़रुफ़ियतों का दाइरा वसीअ़ तर होता चला गया तो बाज़ाब्ता दर्स व तदरीस का सिलसिला मुम्किन नहीं रह सका। तब आप ने अपने दौलते कदा पर मख़सूस़ औक़ात में दर्स कुरआन व ह़दीस की महफ़िल सजादी। यहाँ दर्स व तदरीस की इफ़ादियत इतनी बड़ी और मक़बूल व मअ़रुफ़ व मशहूर हुई कि इस ह़ल्क़ा–ए–दर्स में शर्फ़ तिलमिज पाने और ज़ानवे तिलमिज़ तह करने के लिए तीन तीन जामिआत मन्ज़र इस्लाम,मज़हरे इस्लाम और जामिआ नूरिया के त़लबा की बड़ी तादाद जमा हो गई। ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ तदरीस की ऊँची मन्ज़िल है। आप ने यह काम भी बहुत हुस्न व ख़ुबी से अन्जाम दिया। इफ्तिताह़ बुख़ारी फिर ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ का सिलसिला अहले सुन्नत के मदारिस में शुरू हुआ तो बढ़ता ही चला गया। मर्कज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिअ़तुलइस्लामिया गंज क़दीम रामपुर में सर परस्त आला की हैसियत से 33 साल के अ़र्से में मुतअ़दि्द बार फ़क़ीर नूरी और इन्तिज़ामिया की दअ़वत,असातिज़ा व

तलबा की ख़्वाहिश पर जलवा बार होकर इपि तताहे बुख़ारी और ख़त्मे बुख़ारी की महफ़िलों को रौनक़ बख़्शी,उलमा व तलबा और अवाम व ख़ास के बीच इल्मी गोहर लुटाये और फ़ैज़ व करम की मुसलाधार बारिश से दिलों की सुखी खेती को हरयाली बख़्शी। ऐसा लगता था कि इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम की महफ़िलों को जानशीन की हैसियत से संवार रहे हैं। अपने जद्दे, आला आला हज़रत जद्दे अमजद हुज्जतुल इस्लाम,वालिद माजिद मुफ़स्सिर आज़म और नाना जान मुफ़्ती आज़म,अपने असातिज़ा हज़रत बहरूलउलूम वग़ैरहुम की तालीमी व तदरीसी यादों को ताज़ा कर रहे रहै हैं। जामिआ फ़ारुक़िया बनारस में "साहिब बुख़ारी और बुख़ारी"की आख़री हदीस पर ढाई घन्टा तक़रीर फरमाई और दारुलउलूम"ज़ियाउलइस्लाम"हावड़ा में ख़त्मे बुख़ारी के मौके पर अल्लामा अरशदुलकादरी,अल्लामा गुलाम आसी, अबूलउलाई अज़ीज़े मिल्लत मौलाना अब्दुलहफ़ीज़ अज़ीज़ी और दर्जनों उलमा की मौजूदगी में आख़िरी हदीस पर सैर हासिनल गुफ़्तगु की। आप का तअल्लुक़ जिस अज़ीम ख़ानवाद–ए–रज़विया से है इस ख़ान्दान का मा बिहीलइम्तियाज़ वसफ़ फ़तावा नवैसी है।

ख़ान्दान का मूरोसी जंगी मिज़ाज उलूम दीनिया की तरफ़ मोड़ने में इमामुलउलमा मुफ़्ती रज़ा अली ख़ाँ नक़्शबन्दी बरेलवी ने अहम किरदार अदा किया,फ़न्ने सिपाह गरी के महबूब मशग़ला को तर्क कर के फतवा नवैसी को इख़्तियार करने का सेहरा आप ही के सर बंधता

है। आप के दो फ़रज़न्द हुये, मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ाँ और मौलाना तक़ी अ़ली ख़ाँ। मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ा ने उ़लूमे दीनी में कलाम हासिल किया और फ़तावा नवैसी शुरू की,उसे भी कमाल तक पुचाँया। आप के तीन साहब ज़ादे हुऐ, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी,मौलाना ह़स्न रजा ख़ा बरेलवी और मुफ़्ती मुह़म्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी। आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने फ़िक़्ह ह़न्फ़ी को इस्तिह़काम अ़ता करे के साथ साथ उम्मत मुस्लिमा को इब्ने तैमिया के फैलाये हुये ज़हर से आलूद दिल व दिमाग़ को सवादे आज़म पर गामज़न करने के लिए अपनी पूरी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी। बरादरे औसत़ मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने ख़िदमत दीन और मन्ज़र–ए–इस्लाम के एहतिमाम के साथ उर्दू नअ़तिया शाइरी को नई रिफ़अ़तों से आशना किया। फ़तवा नवैसी को मशग़ला–ए– रोज़ व शब बनाकर मुफ़्ती मुह़म्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने फ़िक़्ह व इफ़ता की ख़ान्दानी ख़िदमत को मजीद बलन्दियाँ अ़ता कीं। इमाम अहमद रज़ा के फ़र्जन्द अकबर हुज्जतुलइस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ाँ बरेलवी ने फ़तवा नवैसी में अपना कमाल दिखाया। आला ह़ज़रत के फ़र्जन्द असग़र ने उस कारे ख़ैर का आग़ाज़ 1910 ई में किया जो उन के विसाल 1981 ई तक जारी रहा। नाना जान के फ़ज़्ल व कमाल के सच्चे वारिस,सच्चे जानशीन और परदादा के उ़लूम व फ़ुनून के सही वारिस हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने इस मुबारक काम का आग़ाज़ चौदह साल

की उम्र शरीफ़ में किया आप ने इस दुशवार गुज़ार राह की मन्ज़िल को पाने की ख़ातिर आग़ाज़ में नाना जान हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म और मुफ़्ती सय्यद अफ़ज़ल हुसैन मुंगीरी के नुकूश हाय क़दम की पैरवी की, यानी उन बाकमाल हस्तियों की निगाहों से अपने लिखे हुये फतवा गुज़ारते रहे। पहला फतवा लिखा तो मुफ़्ती अफ़ज़ल हुसैन मोंगीरी को दिखाया। उन्होंने देख कर शाबाशी दी, तहसीन की और होसला बढ़ाने के लिए कहा नाना जान की अ़मीक़ निगाहों तक उसकी रसाई होनी चाहिए। नाना जान ने देखा तो फ़र्ते मुसर्रत से चेरा–ए–अनवर ख़िल गया, दादे तहसीन से नवाज़ा। यह सिलसिला ज़्यादा दिनों तक नहीं चला। जल्दी ही आप के नाना जान हज़रत मुफ़्ती आज़म ने यह अज़ीम ज़िम्मेदारी भी आप को सोंप दी। मुफ़्ती–ए–आज़म के अल्फ़ाज़ में बक़ौल मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी: "अख़तर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिनकी भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम इस (फ़तवा नवैसी के)काम को अन्जाम दो मैं (दारुलइफ़्ता) तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ मौजूदा लोगों से मुख़ातिब हो कर हज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म ने फ़रमाया :

"अब आप अख़तर मियाँ सल्लामहु से रजूअ़ करें,उन्हीं की मेरा क़ाइम मक़ाम और जानशीन जाने।"

हज़रत ताजुश्शरीआ अपनी फ़तवा नवैसी के तअ़ल्लुक़ से ख़ुद रक़म तराज़ हैं :

"मैं बचपन से ही हज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म से

दाख़िले सिलसिला हो गया हूँ,जामिअ़ अज़हर से वापसी के बाद मैंने दिल चस्पी की बिनापर फ़तवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफ़्ती सय्यद अफ़ज़ल हुसैन साहब अ़लैहिर्रह़मा और दूसरे मुफ़्तियाने किराम की निगरानी में यह काम करता रहा और कभी कभी ह़ज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म की ख़िदमत में हाज़िर हो कर फ़तवा दिखाया करता था,कुछ दिनों के बाद इस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तक़िल ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने लगा,ह़ज़रत की तवज्जों से मुख़्तस़र मुद्दत में इस काम में वह फ़ैज़ हासिल हुआ जो किसी के पास मुद्दतों बैठने से भी नहीं होता। मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी के हवाले से ह़ज़रत ताजुश्शरीअ़ा के अल्फ़ाज़ मुलाह़िज़ा फ़रमाये :

"मैंने दारुलउ़लूम मन्ज़र–ए–इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया,जामेअ़ अज़हर में भी पढ़ा,शुरू से ही मुझे मुतालअ़ का बहुत शौक़ था। अपनी दर्सी किताबों के एलावा शुरूह़ व ह़वाशी और ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ किताबों का रोज़ाना कसरत से मुताला करता और ख़ास़ ख़ास़ चीज़ों को डाइरी में नोट कर लिया करता था। इसके एलावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म कुद्दुस सिर्रुहु की सोह़बत व इस्तिफ़ादा सालों की मेह़नत व मुश्क़्क़त पर भारी पड़ते थे मैं आज हर जगह हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म का इल्मी व रूह़ानी फ़ैज़ान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हें की सोह़बत कीमया

असर का सदक़ा है।

हज़रत मुफ़्ती आज़म कुददुस सिर्रुहु की हयात मुक़द्दसा में यह काम चन्द मुफ़्तियाने किराम के तआउन से घर से ही करते रहे। उन के विसाल के बाद 1981 ई में इस बात की शदीद ज़रूरत महसूस की गई कि बाज़ाब्ता तौर पर दारुलइफ़्ता का क़ियाम अमल लाया जाये लिहाज़ा उसी ज़रूरत की तक्मील की ख़ातिर मर्कज़ी दारुलइफ़्ता की निशात सानिया के तौर पर क़ियाम अमल में लाया गया। आप की सर परस्ती में मुफ़्ती क़ाज़ी अ़ब्दुर्रहीम बस्तवी,मुफ़्ती मुहम्मद नाज़िम अ़ली क़ादरी और मुफ़्ती ह़बीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी पर मुश्तमिल क़ाफ़िला तशकील दिया गया। मुफ़्ती अ़ब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी को नक़्ले फ़तावा का काम सोंपना गया,मौलाना अ़ब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी के इन्तिक़ाल 2005 ई तक फ़तावा के 80 रजिस्टर तैयार हो चुके थे। मर्कज़ी दारुलइफ़्ता बरेली के यह रजिस्टर तबअ़ हो कर मन्ज़र आम पर आ जायें तो फ़िक़्ह हन्फ़ी का आलमी सरमाया,होंगे। बक़ौल मुहद्दिसे कबीर मदद्ज़ुल्ला–हुलआली :

जामेअ़ अज़हर के दौरे तहसील में जब आप का अ़रबी कलाम अज़हर के शुयूख़ सुनते तो कलाम की सलासत व निज़ाकत और हुस्ने तरतीब पर झूम उठते और कहते थे कि यह कलाम किसी ग़ैर अ़रबी का महसूस ही नहीं होता। अल्लाह तआला ने आप को कई ज़बानों पर मलका–ए–ख़ास अ़ता फ़रमाया है। उर्दू ज़बान गो आप की

घरेलू ज़बान है और अ़रबी आप की मज़हबी ज़बान है। इन दोनों ज़बानों में आप को ख़ुसूसी मलका ह़ासिल। जिस पर आप की उर्दू व अ़रबी नअ़तिया शाइरी शाहिद आ़दिल हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं :

ज़ंबाबोवे में एक मिस्री शैख़ ने एक बार ह़म्दिया अशआ़र सुने तो बहुत महज़ूज़ हुये और इस की नक़्ल की फ़रमाईश भी कर डाली।

ह़ज़रत मुह़द्दिस कबीर मद्दज़ुल्लाहुलआ़ली फ़रमाते हैं :

ह़ज़रत अ़ल्लामा अज़हरी को मैंने इंगलैन्ड,अमरीका, अफ़रीक़ा,साऊथ अफरीक़ा,ज़म्बाबोवे वग़ैरा में बर जस्ता अंग्रेज़ी ज़बान में तक़रीर व वअ़ज़ करते देखा है और वहाँ के तालीम याफ़्ता लोगों से आप की तअ़रीफ़ें भी सुनीं। और यह भी उन से सुना कि ह़ज़रत को अंग्रेज़ी ज़बान के क्लासकी उस्लूब पर उ़बूर ह़ासिल है।

आप जो कुछ बोलते,लिखते हैं उस में तकलिफ़ात का दख़ल नहीं होता बल्कि आप के मज़ामीन या तर्जमा निगारी उ़मूमन बज़रिअ़ा इमला ही ज़ब्त क़लम किए जाते हैं। इसलिए आप के इल्मी कारनामे बर जस्तगी से ही मुत्तिसफ़ होते हैं। फिर हर बात दलाइल से मुबरहन,दिक़्क़ते मुआ़नी से मुश्तमिल जामइयत से लबरेज़ होती है। ह़ज़रत ताजुश्शरीअ़ा को चालीस उ़लूम व फ़नून पर उ़बूर व मलका ह़ासिल है जिन में से बहुत से उ़लूम व फ़नून पर आप की तस्नीफ़ात व तालीफ़ात शाहिद आ़दिल हैं। इल्मे तफ़सीर, इल्मे ह़दीस इल्मे फ़िक्ह व इफ़्ता इल्मे कलाम इल्मे

तसव्वुफ़,इल्मे लोगत,इल्मे बलागत,इल्मे नूह,इल्मे अ़रबी अदब ख़ास आप के मौज़ूआत हैं।

हज़रत ताजुश्शरीआ मद्दजुल्लाहुलआली को जुमला उ़लूम अ़रबिया और फुनून अ़रबिया की त़रह उर्दू व अदब पर भी कामिल उ़बूल हासि़ल है। इस लिए निहायत नफ़ीस, आसान उस्लूब में तर्जमा फरमाने की कोशिश फरमाई है। हमारे मदारिस इस्लामिया के त़लबा–ए–किराम बहुत आसानी से समझ सकते हैं और समझेंगे। मतन व ह़वाशी से ख़ास बल्कि अख़स्सुलख़ास ही मुस्तफ़ीद हो पाते थे मगर बिहम्दिही तआला अब अ़वाम व ख़्वास़ सभी मुस्तफ़ीज़ हो सकते हैं।

हजरत ताजुश्शरीआ इल्म व फ़ज़ल,जहद व तक़वा तवक्कुल व कनाअ़त,सब्र व इस्तिकामत और तदय्युन व तफ़क़्क़ह में फ़रीदुद्दहर,वहीदुलअ़स्र और यगाना–ए–रोजगार हैं। अलवलद सरलाबिया के तिह़त सय्यदिना आ़ला हजरत, हुज्जतुलइस्लाम,हज़रत मुफ्ती आज़म के अक्स जमील हैं। चमन रज़वियत के ऐसे शुगुफ्ता फुल हैं जिन के इल्म व फ़ज़ल,तबह़र व तफ़क्कुह,अख़लास़ व लिल्लाहियत, ख़ौफ़ व ख़शीब,फ़िक्ह व इफ़्ता शैर व अदब,तसानीफ़ात व तालीफ़ात,ज़कावत व फ़तानत और दीनी बसी़रत की खुशबूओं की महक से पूरी दुनिया–ए–सुन्नियत मुअ़त्तर व मुश्क बार है। ज़बान अ़रबी में हमा दानी मज़हब अहले सुन्नत और मसलके आला ह़ज़रत के रौशन मिनारा हैं जिस की ताबिशों और ज़ियाबारियों से पूरी दुनिया–ए–सुन्नियत

रौशन है।

हज़रत ताजुश्शरीआ अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरेलवी की ख़िलाफ़त व इजाज़त की तक़रीब,एक हसीन और शान्दार तक़रीब थी। दारुल उ़लूम मज़हर–ए–इस्लाम बरेली के सेह रोज़ा इजलास 6/7/8 शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म 1381 हिजरी 13/14/15 जनवरी 1962 ई की स़दारत और सर परस्ती ताजदार अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रुहु ने फ़रमाई।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रुहु ने मौलाना साजिद अ़ली ख़ाँ बरेलवी मोहतमिम दारुलउ़लूम मज़हरे इस्लाम को हुक्म दिया कि 8 शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म 1381 हिजरी15 जनवरी 1962 ई को सुबह 8 बजे घर पर महफ़िल मीलाद शरीफ़ का इन्अे़क़ाद किया जाये। मीलाद ख्वाँ हज़रात उ़लमा व मशाइख़ और त़लबा मदारिस व फ़ारिगुत्तहस़ील होने वाले त़लबा की दअ़वत शिरकत दे दी जाये। शदीद सरदी के मोसम में कई हज़ार लोगों ने मीलाद शरीफ़ की उस ख़ुस़ूसी तक़रीब में शिरकत की। महफ़िल मीलाद शरीफ़ के आख़िर में हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म तशरीफ़ लाये और ताजुश्शरीआ अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी को बुलवाया,अपने क़रीब बिठाया,दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ़ सलासिल आ़लिया क़ादरिया,सहरवर्दिया,नक़्शबन्दिया चिश्तिया और जमीअ़ सलासिल अहादीस मुसलसल बिलअव्विलयत की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। तमाम औराद

व वज़ाइफ़,आमाल व अश्ग़ाल,दलाइलुलख़ैर,ह़ज़बुलबह़र, तअवीज़ात वग़ैरा वग़ैरा की इजाज़त. मरह़मत फ़रमाय?।

मुअर्रिख़ बरेली शरीफ़,मेरे फ़र्ज़न्द रूहानी मौलाना मुह़म्मद शहाबुद्दीन रज़वी जन्रल सिक्रेट्री आल इन्डिया जमाअ़त रज़ा–ए–मुस्तफ़ा,मुअल्लिफ़"मुफ़्ती–ए–आज़म और उन के ख़ुलफ़ा" अपनी तालीफ़ लत़ीफ़"ह़याते ताजुश्शरीआ़"· जिस का पहला एडीशन 80 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल है। उसे ह़ज़फ़ व इज़ाफ़ा और नज़रे सानी के बाद 200 दो सौ से ज़ाइद सफ़ह़ात पर दूसरा एडीशन ला रहे हैं। मौसूफ़ की यह किताब ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ मद्दज़ुल्लाहुलआ़ली की ह़यात व ख़िदमात,अफ़कार व नज़रियात और आलमी सतह़ पर क़बूले ख़ास व आ़म में नक़्शे अव्वल और संगे मील की हैसियत रखती है। जिस की इशाअ़त के बाद ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ मद्दज़ुल्लाहुलआ़ली की सवानेह़ निगारी की रास्ते हमवार हुये और सीरत निगारी का मवाद फ़राहम करने के लिए राहें खुली।

मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी नौ जवान क़लमकारों में ज़ौदनवीस,पुख़्ता क़लम और मुतअ़द्दिद किताबों के मुसन्निफ़ व मुअल्लिफ़ हैं,मर्कज़ इल्म व इरफ़ान बरेली शरीफ़ के अह़वाल व मुआरिफ़ और उन के मा आख़ज़ व मराजअ़ और ख़ान्दान रज़ा के मशहुर,अकाबिरीन की सीरत व सवानेह़ पर गहरी नज़र रखने वाले रम्ज़शनास शख़्सियत के मालिक हैं। ह़याते ताजुश्शरीआ़ के दूसरे एडीशन में मौसूफ़ ने जिन ख़ारदार वादियों से गुज़र कर क़ीमती

मालूमात फ़राहम की हैं वह लाइक़ तवज्जोह भी हैं और क़ाबिल स़द सताइश भी, इस राह की मुश्किलों और दुशवारियों को वही कुछ जानता है जो इस राह से गुज़रता है। दूसरा इन लज़्ज़तों से वाक़िफ़ नहीं। आज इस बात की शदीद ज़रूरत है कि हम अपने अकाबिर और बुज़ुर्गों के इल्मी और रूहानी हालात व कैफ़ियात,फ़ज़ाइल व कमालात,अ़क़ाइद व नज़रियात,ख़िदमाते जलीला और ज़र्री कारनामों से अ़वाम व ख़्वास़ अहले सुन्नत को ज़्यादा से ज़्यादा मुतआरफ करायें। ताकि उन के इल्मी फ़ैज़ान और रूहानी इक़्दार से ज़्यादा से ज़्यादा लोग फ़ैज़याब हो सकें। आदा–ए–दीन और ह़ासिदीन के ज़बान व क़लम को क़ाबू में किया जा सके।

हज़रत ताजुश्शरीआ़ मद्दज़ुल्लाहुलआ़ली के दीनी और ख़ान्दानी दुश्मुनों ने जहाँ अपनी दुशमुनी में कोई कसर नहीं छोड़ी हमेशा सताते और इम्तिहान की वादियों से गुज़ारते रहे। दूसरी त़रफ़ ह़ासिदीन का दाइरा भी रोज़ बरोज़ बढ़ रहा है जहाँ वह रश्क व हस़द की आग में ख़ुद जल रहे हैं,भून रहे हैं। वही दुनिया–ए–सुन्नियत को भी रश्क व ह़सद की आग में झोंक देना चाहते हैं। मिल्लत का शीराज़ा बिखैर देना और इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ को पारा कर देना चाहते हैं।

आतिशे आग से पत्थर भी नहीं है ख़ाली
जल गया तूर जो मूसा से हुई प्यार की बात

इन ह़ालात के पेशे नज़र हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ अपने

जद्दे आला आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत कुदुस के इस्तिग़ासा को सब्र व इस्तिक़ामत के साथ बज़बाने हाल दोहराते हुये अर्ज़ गुज़ार हैं।

इक तरफ़ आदा–ए–दीं एक तरफ़ हैं हासिदीं
बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोरों दुरूद

और अपने आक़ा व मौला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह बे कस पनाह में यूँ अर्ज करते हैं:

तुझे किया फ़िक्र है अख़तर तेरे यावर है वह यावर
बलाओ को जो तेरी ख़ुद गिरफतार बला करदें

ख़ान्दाने–रज़ा के उमूमन और हज़रत ताजुश्शरीआ के ख़ुसूसन आदा–ए–और हासिदीन कान खोल कर सुन लें

सब इन से जलने वालों के गुल हो गये चिराग
अहमद रज़ा की शमअ फिरोज़ा है आज भी

अल्लाह तआला जल्ल मजदहु बे वसीला–ए–सय्यदिल मुरसलीन ताहा या सीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व बे तुफ़ैल ग़ौस व ख़्वाजा व बरकात व रज़ा,हुज्जतुलइस्लाम,मुफ़्ती आज़म और मुफ़स्सिरे आज़म तमाम ख़ान्दाने रज़ा ख़ुसूसन हज़रत ताजुश्शरीआ उन के अहले ख़ाना ख़ुसूसन हज़रत मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी जानशीन ताजुश्शरीआ उनकी आले नस्बी व रूहानी व जुमला वाबस्तगाने सिलसिला–ए–आलिया रज़विया सब को दुशमुनों के शर,हासिदों के हसद,जुमला अमराज़े जिस्मानी व रूहानी और आसीबे रोज़गार से मामून व

महफूज़ फरमाये और हज़रत ताजुश्शरीआ़ दामत बरकातुहुमल कुदसिया वलआ़लिया व मतअ़ल्लाहुलमुस्लीमीन बतौल बक़ाइही के साया आ़तिफ़त को ता देर हम सभों के सरों पर क़ाइम व दाइम रखे और उन के फुयूज़ाते अ़लमिया व रूहानिया से माला माल फ़रमाये। अमीन व मा अ़लैना इल्ललबलागुलमुबीन.

दुआ़ गो

फ़क़ीर नूरी सय्यद शाहिद अ़ली ह़स्नी रज़वी जमाली ख़लीफ़ा–ए–हुज़ूर मुफ़्ती आज़म,क़ाज़ी शरह़ व मुफ़्ती ज़िला रामपुर नाज़िम आला व शैख़ुलह़दीस मर्कज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिअ़तुल इस्लामिया,गंजे क़दीम,रामपुर।

मुख़्तसर हालात

ताजुश्शरीआ अ़ल्लामा मुहम्मद **अख़्तर रज़ा अज़हरी** बरेलवी
जानशीन–ए– मुफ़्ती–ए–आज़म
मसनदे रुशद व हिदायत आस्ताना–ए–आ़लिया क़ादरिया
बरकातिया रज़विया सौदागिरान,बरेली शरीफ़

يبين نور الدجى عن نور طلعته   كالشمس بنجاب عن اشراقها الظلم
يغضى حياء و يغضىٰ سهابة   فما يكلم الا حين يتبسم
سهل الحليقة لا يخفى بوادره   بزيّنه اثنان حسن الخلق و التمم
مشتقة عن رسوله الله بنعمته   طالبت عناصره و الخيم و الشيم
كلتا يديه غياث عما نفعها   تستو كفان و لا يعود هما الحرم
من معشر حسبهم دين و بغضهم   كفر و قربهم منجى و معتصم

1.उनकी पेशानी की चमक से ज़ुलमतें दूर होती हैं, जिस तरह तुलूअ़ आफ़ताब से अंधेरा छुट जाता है।

2.और उन की हैबत से लोगों की आँखें झुक जाती हैं।

3.वह नर्म खु हैं,उनकी ख़सलतें पौशीदा नहीं हैं,ख़ुश ख़ल्क़ी और ख़ुश मिज़ाजी ने जीनत बख़्शी है।

4.उनकी सिफ़ात,सिफ़ाते रसूलुल्लाह कि आइना दार हैं। उनकी आ़दतें व ख़सलतें बहुत खुब हैं।

5.दोनों हाथ मुसला धार बारिश की तरह फ़ैज़े रसाँ हैं चाहे माल हो या न हो।

6.वह इस मुक़द्दस गिरोह के फ़र्द फ़रीद हैं,जिन की

मोहब्बत दीन है और नका कुर्ब निजात देने वाला है।

विलादत :

जानशीन मुफ्ति–ए–आज़म अ़ल्लामा मुफ़्ती आलहाज अश्शाह मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी क़ादरी इब्ने मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी इब्ने हुज्जतुलइस्लाम मौलाना मुहम्मद हामिद रज़ा इब्ने आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी25/फ़रवरी 1942 ई. को मह़ल्ला सौदागिरान बरेली शरीफ़ में पैदा हुये।

ख़ान्दानी पस मन्ज़रः

ताजुश्शरीअ़ा का ख़ान्दान अफ़ग़ानिन्नसल और क़बील–ए–बढ़ेच से तअ़ल्लुक़ रखता है। मुरिस आ़ला शहज़ादा सईदुल्लाह ख़ाँ क़न्दहार हुकूमत अफ़ग़ानिस्तान के वली अ़हद थे,ख़ान्दानी इख़्तिलाफ़ की वजह से क़न्दहार को तर्क वत़न कर लाहूर आये। यहाँ पर गवर्नर ने आप शीश महल में आप के क़ियाम का इन्तिज़ाम किया और दरबार मुहम्मद शाह बादशाह देहली को इत्तिलाअ़ भेजवाई,दरबार से शाही मेहमान नवाज़ी का हुक्म स़ादिर हुआ। फिर शहज़ादा सईदुल्लाह ख़ाँ ने देहली बादशाह मुहम्मद शाह से जा कर मुलाक़ात की,आप को बादशह ने फौज का जन्रल बना दिया और आप के साथियों को भी फौज में अच्छी जगह मिल गई। रूहैल खन्ड में कुछ बग़ावत के आसार नुमाया हुये तो बादशाह ने आप को रुहेलख़न्ड की दारुस्सुलतनत बरेली भेज दिया ताकि वहाँ अमन व अमान क़ाइम करें। आप के स़ाहबज़ादे सअ़ादत यारख़ाँ दरबार

देहली में वज़ीर–ए–मुम्लिकत थे,उनको कलैदी क़लमदान मिला था,उनकी अपनी अ़लाहि़दा महर थी। हाफ़िज़ काज़िम अ़ली ख़ाँ के आहद में मुग़लिया हुकूमत का ज़वाल शुरू हो गया। हर तरफ़ बग़ावतों का शौर और आज़ादी व ख़ुद मुख़्तारी का ज़ोर था। आप अवध की कमान संभालने पहुँचे। आप के फ़रज़न्द मौलाना शाह रज़ा अ़ली ख़ाँ बरेली जिन्होंने 1857 ई. में अहम किरदार अदा किया। इंग्रेज़ ने उनका सर क़लम करने के लिए पाँच हज़ार के इन्आम का एलान किया था। आप के दो फ़रज़न्द मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ा बरेलवी और दूसरे मौलाना ह़कीम तक़ी अ़ली ख़ाँ बरेलवी तवल्लुद हुये, जिन्होंने दरजनों किताबें लिखे, मौलाना नक़ी अ़ली ख़ाँ बरेलवी के तीन फ़रज़न्द तवल्लुद हुये। (1) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी फ़ाज़िल बरेलवी (2)मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी (3) मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी।

तस्मिया ख़्वानी :

जानशीन मुफ़्तिए–आज़म की उमर शरीफ़ जब चार साल, चार माह, चार दिन की हुई तो वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी ने तक़रीब बिस्मिल्लाह ख़्वानी मुन्अक़िद की, और उस में दारूलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम के जुमला त़लबा को दअ़वत दी। हुज़ूर मुफ़्ति–ए–आज़म कुद्दिदसा सिर्रहु,ने रस्मे बिस्मिल्लाह अदा कराई। और मुहम्मद नाम पर अ़क़ीक़ा हुआ। पुकार ने का नाम "मुहम्मद इस्माईल रज़ा" और उ़र्फ़

मुहम्मद अख़्तर रज़ा तजवीज़ हुआ। हुज़ूर मुफ़्ति– ए–आज़म की साहबज़ादी यानी जानशीने मुफ्ति–ए–आज़म की वालिदा माजिदा ने तअ़लीम का ख़ास ख़्याल रखा। चुंकि नाना जान का सहीह जानशीन इसी नवासे को मुस्तक़बिल में बन्ना था, और सारी तवक़्क़ुआ़त उन्ही से वाबस्ता थीं। इसी लिए नाना जान हुज़ूर मुफ़्ति–ए–आज़म की सहर आमूज़ दुआ़ये भी आप ही के हक़ में निकलती रहीं।

अल्क़ाब : जानशीने मुफ़्ति–ए–आज़म ने 1984 ई / 1404 हिजरी में सुराश्टर का दौरा फ़रमाया, वीरावल, पुरबन्दर, जामजौधपुर,ईलटिया,धोराजी,और जीतपूर होते हुये 15 / आगस्त 1984 ई. 1404 हिजरी को अमरीली तशरीफ़ ले गये। वहाँ हज़ारों लोग दाख़िले सिलसिला हुये। रात 12 बजे से दो बजे तक जानशीन मुफ़्ति–ए–आज़म की तक़रीर हुई। और 18 आगस्त को जोनागढ़ में बज़म रज़ा की जानिब से एक जलसा रज़ा मस्जिद में रखा गया। जिस में अमीरे शरीअत हाजी नूर मुहम्मद रज़वी मारफ़ानी ने "ताजुल– इस्लाम" का लकब दिया। जिसकी ताईद मुफ़्ती गुजरात मौलाना मुफ़्ती अह़मद मियाँ ने आम जलसा में की।

जानशीन मुफ्ति–ए–आज़म को सदरूलमुफ़त्तीन, सनदुल मुफ़त्तीन,और फ़क़ीह–ए–इस्लाम का लक़ब 1984 ई 1404 हिजरी में रामपुर के मशहूर आ़लिमे दीन हज़रत मौलाना सय्यद मुफती शाहिद अ़ली रज़वी शैख़ुल हदीसअलजामियातुल इस्लामिया गंज क़दीम रामपुर ने एक आम जलसा में दिया।

फ़ख़रे अहले सुन्नत,फ़क़ीहे आज़म और शैख़ुल मुहद्दीसिन का लक़ब14/शव्वालुलमुकर्रम 1405 हिजरी 1985 ई. को मौलाना हकीम मुज़फ्फ़र अहमद रज़वी बरकाती दातागंज बदायूँ ने दिया। उस के एलावा मसलन ताजुश्शरीआ मरजउलउलमा वलफ़ुज़ला वग़ैरा,और बहुत से अलक़ाब उलमा व मशाइख़ ने दीए। जिसकी एक तवील फ़िहरिस्त है जामेअ अज़हर मिस्र के शैख़ुलहदीस ने आप को फ़ख्र अज़हर का ख़िताब 2010 को क़ाहिर में मुन्अक़िद तक़रीब में दिया।

हुसूले उलूम इस्लामिया :

जानशीने मुफ्ति-ए-आज़म ने घर पर वालिदा माजिदा से क़ुरआन करीम नाज़रा ख़त्म किया। उसी दौरान वालिद माजिद से उर्दू की किताबें पढ़ी। घर पर तअलीम हासिल करने के बाद वालिद बुज़ुर्गवार ने दारूलउलूम मन्ज़रे इस्लाम में दाख़िल करादिया। नहमीर,मीज़ान, मुन्शइब वग़ैरा से हिदाया आख़ेरैन तक की कितबें दारूलउलूम मन्ज़रे इस्लाम के कुहना मशक़ असातिज़ा किराम से पढ़ीं। ताजुश्शरीआ ने फ़ारसी की इब्तिदाई कुतुब पहली फ़ारसी,दूसरी फ़ारसी,गुलज़ारे दबिस्ता,गुलिस्ताँ और बुस्ताँ मन्ज़र-ए-इस्लाम के उस्ताद हाफ़िज़ इन्आमुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी से पढ़ी। 1952 ई. में एफ आर इस्लामिया इन्टर कालेज में दाख़िला लिया। जहाँ पर हिन्दी और अंग्रेज़ी की तालीम हासिल की।

मुफ़स्सिरे हिन्द कुद्दुस सिर्रुहु के मुरीद ख़ास जनाब निसार अहमद हामिदी सुलतान पूरी मरहूम की कोशिश से

जामिअ़ा अज़हरी क़ाहिरा(मिस्ऱ)से अ़रबी अदब में महारत हासिल करने के लिए फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अ़ब्दुत्तवाब मिस्री की ख़िदमात हासिल की गई थीं। शैख़ साहिब दारुल उ़लूम मन्ज़रे में दर्स व तदरीस दिया करते थे। उनके ख़ास तलामिज़ा में आप का शुमार होता था। आप दौराने त़ाल्ब इल्मी मामूल था कि अलस्सुबह अ़रबी अख़बारात उस्ताद को सुनाते और उर्दू हिन्दी के अख़बारात की ख़बरों व इत्तिलाआ़त को अ़रबी ज़बान में तर्जमा कर के सुनाते। आप को शैख़ साहिब बड़ी तवज्जोह और इन्हेमाक से पढ़ाते आप की ज़िहानत व फत़ानत को देखते हुये जामिआ़ अज़हर में दाख़िला का मशवरा मौलाना इब्रहीम रज़ा ख़ाँ जीललानी को दिया तो वह तैयार हो गये। ताजुश्शरीआ जानशीन मुफ्ति–ए–आज़म1963 ई. में जामिया अजहर क़ाहिरा मिस्र तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप ने "कुल्लिया उसुलुद्दीन" (एम–ए–)में दाख़ला लिया मुसलसल तीन साल तक जामिया अज़हर मिस्र में फ़न तफ़सीर व ह़दीस के माहिर असातिज़ा से इक्तिसाब इल्म किया।

ताजुश्शरीआ बचपन ही से ज़हानत व फ़ित़ानत और कुव्वते हाफ़िज़ा के मालिक थे। और अ़रबी अदब के दिलदादा थे। जामिया अज़हर मिस्र में दाख़िला के बाद जब आप की जामिया के असातिज़ा और त़लबा से गुफ़्तगु हुई तो वह आप की बे तकल्लुफ़ फ़स़ीह़ व बलीग़ अ़रबी गुफ़्तगु सुन कर महवे ह़ैरत हो जाते थे और कहते थे कि।

एक अजमियुन्नसल हिन्दुस्तानी   अ़रबियुन्नसल अहले इल्म हजरात

से गुफ़्तगु करने में कोई तकल्लुफ़ महसूस नहीं करता

जामिया अज़हर मिस्र के शौअबा–ए–कुल्लिया–उसूलुद्दीन का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था। मगर मालूमात अम्मा(जन्रल नालेज) का इम्तिहान तक़रीरी होता था। चुनाँचेह जामिया के सालाना इम्तिहान के मौक़ा पर जब जानशीन मुफ़्ति–ए आज़म का इम्तिहान हुआ तो मुम्तहिन ने आपकी जमाअत से इल्मे कलाम के चन्द सवालात किए, पूरी जमाअत में से कोई एक भी सवालात के सहीह जवाब न दे सका। मुम्तहिन ने रूये सुख़न आप की तरफ़ करते हुये सवालात को दोहराया। जानशीन मुफ़्ति–ए–आज़म ने उन सवालात का ऐसा शाफ़ी व काफ़ी जवाब दिया कि मुम्तहिन तअज्जुब की निगाह से देखते हुये कहने लगा कि। "आप तो हदीस व उसूले हदीस पढ़ते हैं, तब इल्मे कलाम में कैसे जवाब दिया"। जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने जवाब में कहा "कि मैंने दारूलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में इल्मे कलाम पढ़ा था"।

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुम्तहिन जामिया ने आप को जमाअत में पहला मक़ाम दिया।

जामिया अज़हर से फ़रागत,एवार्ड,और बरेली आमद :

ताजुश्शरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी मदद्ज़ुल्लाहु 1963 ई में जामिया अज़हर मिस्र तशरीफ ले गये,और वहाँ पर तीन साल मुसलसल रह कर हुसूले इल्म में मशगूल रहे। दूसरे साल के सालाना इम्तिहान में आप ने शिरकत की, अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ले अमीम से पूरे

जामिया अज़हर क़ाहिरा में इम्तिहान में आला काम्याबी अता फ़रमाई। उस काम्याबी पर इडीटर माहनामा आला ह़ज़रत बरेली कवाइफ़ अस्ताना रज़विया के उ़नवान से रक़मतराज हैं।

नबीर–ए– आला ह़ज़रत हुज्जतुलइस्लाम अ़लैहिर्रह़मा और ह़ज़रत मुफ़सिस्रे आज़म के फ़रज़िन्द दिलबन्द मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ स़ाह़ब ने अ़रबी में बी–ए–की सनद फ़रागत निहायत नुमाया और मुम्ताज हैसियत से हासिल की.मौलाना अखरत रज़ा ख़ाँ स़ाह़ब न सिफ़ जामिया अज़हर में बल्कि पूरे मिस़ में अव्वल नम्बरों से पास हुये। मौला तआ़ला उन को इस से ज़्यादा बेश अज़ बेश काम्याबी अ़ता फ़रमाये। और उन्हें ख़िदमात का अहल बनाये, और वह स़ह़ीह मअ़ना में आ़ला ह़ज़रत इमाम अहले सुन्नत के जानशीन कहे जायें। अल्लाहुम्मा ज़िद फ़ज़िद।

ताजुश्शरीअ़ा1966 ई. जामेअ़ अज़हर काहिरा से फ़ारिग़ हुये तो करनल जमाल अब्दुन्नासिर ने आप को बत़ौर इन्आ़म जामे "अज़हर ईवार्ड" पेश किया और साथ ही साथ सनद से भी नवाजे गये।

जब आप जामेअ़ अज़हर से बरेली शरीफ़ तशरीफ़ लाये तो उस की कैफ़ियत शहर के मशहूर बुजुर्ग उमीद रजवी यूँ तह़रीर फ़रमाते हैं, बउनवान आमदनत बाइस.........

गुलिस्ताने रज़वियत के महकते फूल, चमनिस्ताने आ़ला हज़रत के गुल ख़ुशरंग, जनाब मौलाना मुह़म्मद अख़रत रजा ख़ाँ साह़ब इब्ने ह़ज़रत मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द रह़मतुल्लाहि अ़लैहि एक अ़र्सा दराज़ के बाद जामेअ़ अजहर

से फ़ारिगुत्तहसिल हो कर 17/नवम्बर 1966ई 1386हिजरी की सुबह को बहार अफ़ज़ाये गुलशन बरेली हुये,बरेली के जंकशन स्टेशन पर मुतअल्लिक़ीन व मुतवस्सिलीन व अहले ख़ान्दान; उलमा–ए–किराम व तल्बा–ए– दारूलउलूम(मन्ज़रे इस्लाम)के एलावा बेशुमार मोअतक़दीन हज़रात ने(जिन में बेरूने जात ख़ुसूसन कानपुर के अहबाब भी मौजूद थे) हज़रत मुफ्ती आज़म मद्दज़ुल्लाहु की सर परस्ती में परतिपाक और शान्दार इस्तिक़बाल किया, और साहबज़ादा मौसूफ़ को खुशरंग फूलों के गजरों और हारों की पेशकशी से अपने वालिहाना जज़बात व ख़ुलूस और अक़ीदत का इजहार किया।

इदारा मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी और मुतवस्सिलीन को उस कामयाब वापसी पर हदया –ए–तबरिक व तहनियत पेश करता है,और दुआ करता है कि अल्लाह तआला बतुफ़ैल अपने हबीब करीम अलैहिस्सलात वत्तस्लीम उन के आबा किराम ख़ुसूसन आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का सच्चा सही वारिस व जानशीन बनाये। ई दुआ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद।

(मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ मुदीर माहनामा आला हज़रत बरेली दिसम्बर 1966 ई. 1386 हिजरी)

"हुज़ूर को लेने के लिए हज़रत बज़ाते ख़ुद बनफ़्स नफ़ीस तशरीफ़ ले गये,और ट्रेन का बे ताबाना इन्तिज़ार फ़रमाते रहे,जैसे ही ट्रेन पलेट फ़ार्म पर उतरी,सब से पहले हज़रत ने गले लगाया, पेशानी चुमी और बहुत दुआयें दी

और फ़रमा कि कुछ लोग गये थे मगर बदल कर आये मगर मेरे बच्चे पर जामिआ की तहज़ीब का कुछ असर नहीं हुआ,मा शाअल्लाह।"

अन्दाज़े तर्बियत

हज़रत ताजुश्शरीआ के वालिद माजिद मुफ़स्सिर–ए–आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने आप की नशू व नुमा बड़े नाज़ व नअ़म और ख़ुसूसी एहतिमाम के साथ की, दौराने त़ालिबइल्मी आप को तक़रीर व वअ़ज़ की तरबियत देते थे। एक बार वालिद माजिद ने आप को क़रीब बुला कर बैठाया और फ़रमाया कि कल से त़लबा(मन्ज़र–ए–इस्लाम)को सैफुलजब्बार(मुस़न्निफ़ा सैफुल्ला अलमसलूम अ़ल्लामा शाह फ़ज़ले रसूल उस्मानी बदाँयूनी)सुनाया करोगे। आप ने अ़र्ज किया कि अब्बा हुज़ूर अभी मेरी उर्दू भी अच्छी नहीं है,फ़रमाया कि सब ठीक हो जायेगी,यह काम तुम्हारे ज़िम्मा किया जाता है। आप ने दूसरे दिन से हम दर्स त़लबा को जमा किया और ख़ानक़ाहे आ़लिया रज़विया की छत पर बैठ कर "सैफुलजब्बार"का दर्स शुरू करदिया। इस त़रह मुतअ़दिद बार सैफुलजब्बार का दर्स दिया और मुतालअ़ किया,वालिद माजिद के इस से कई मक़ासि़द पौशीदा थे,एक तो यह कि उर्दू एबारत ख़्वानी बेहतर हो जायेगी,दूसरी अक़ाइद–ए–अहले सुन्नत व जमाअ़त की ख़ुब जानकारी हा़सि़ल होगी,तीसरी वजह यह थी कि तक़रीर व ख़िता़बत करने में तकल्लुफ़ और झिझक ख़त्म हो जायेगी।

दौराने तालीम वालिद माजिद का इन्तिक़ालः

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म जब जामेअ अज़हर में तालीम व तरबियत हासिल कर रहे थे। उसी दौरान आप के वालिद माजिद मुफस्सिर-ए-आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रजा खाँ जीलानी बरेलवी का 60 साल की उमर में 11/सफ़फ़रुलमुज़फ़्फ़र 1385 हिजरी 12/जून 1965 ई. को इन्तिक़ाल हो गया। इन्तिक़ाल की ख़बर पहुचते ही आप के क़ल्ब पर गहरा सदमा पहुँचा। आप के हम दर्स मौलाना शमीम अशरफ़ अज़हरी(मारीशश) ने आप के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ रहमानी मियाँ को ताज़ीयती मकतूब लिखा,और आप की कैफ़ियत तहरीर की है,इस से बख़ूबी अन्दाज़ा होता है। जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने एक तवील ख़त बरादरे अकबर के नाम तहरीर किया और वालिद साहब के इन्तिक़ाल की तफ़सीलात मालूम की और एक ताज़ीयती नज़म भी तहरीर फ़रमाई। यह तमाम चीजें राकिमुस्सुतूर के पास महफ़ूज़ हैं।

किसी के गम में हाये तडपा ता है दिल ☆ और कुछ ज्यादा उमन्डआता है दिल
हाय दिल का आसरा ही चल बसा ☆ टुकड़े टुकडे अब हो जाता है दिल
अपने अख़तर पर एनायत कीजिए ☆ मेरे मौला किस को बहकाता है दिल

असातिज़ा किराम :

आप के असातिज़ा में क़ाबिल ज़िक्र असातिज़ा किराम यह हैं।

1- हुज़ूर मुफ़्ती आज़म मौलाना अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरेलवी क़ुद्दुस सिर्रहु

2- बहरूलउ़लूम हज़रत मौलाना मुफ़्ती सैयद मुहम्मद

अफ़ज़ल हुसैन रज़वी मोंगरी

3 –मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी रज़वी बरेलवी

4 –फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अल्लामा मुहम्मद समाही शैख़ुल हदीस वत्तफ़सीर जामेआ अज़हर क़ाहिरा

5– हज़रत अल्लामा मौलाना महमूद अब्दुलग़फ़्फ़ार उस्ताज़ुलहदीस जामेआ अज़हर क़ाहिरा

6–उस्ताज़ुलअसातिज़ा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अहमद उर्फ़ जहाँनगीर ख़ाँ रज़वी आज़मी

7 रैहान मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा रहमानी रज़वी बरेलवी

8 फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री उस्ताद मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली

9 मौलाना हाफ़िज़ इन्आमुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी।

दर्स व तदरीस : ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी को 1967 ई में दारूलउलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में दर्स देने के लिए पेश कश की गई। आप ने उस दअवत को क़बूलियत से सरफ़राज़ किया, 1967 ई. से तदरीस के मसन्द पर फ़ाइज़ हो गये। ताजुश्शरीआ के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रज़ा रहमानी बरेलवी ने 1978 ई. में सदरूलमुदर्रिसीन के आला ओहदा पर तक़र्रूर किया। और उस ओहदे के साथ "रज़वी दारूलइफ़्ता" के सदर मुफ़्ती भी रहे। दर्स व तदरीस का सिलसिला मुसलसल

बाराह साल तक चलता रहा।

हिन्दुस्तान गीर तब्लीग़ी दौरे की वजह से यह सिलसिला कुछ अय्याम के लिए मुन्क़तअ हो गया। मगर कुछ ही दिनों बाद अपने दौलत कदे पर दर्स कुरआन व ह़दीस का सिलसिला शुरूअ़ किया। जिस में मन्ज़रे इस्लाम,मज़हरे इस्लाम और जामिआ नूरिया रज़विया के त़लबा कसरत से शिरकत करते, 1407 हिजरी और 1408 हिजरी को मदरसा अलजामियातुल इस्लामिया गंजक़दीम रामपुर में ख़त्म बुख़ारी शरीफ़ कराया।1408 हिजरी को जामिआ फारूकिया भोजपुर ज़िला मुरादाबाद में बुख़ारी शरीफ़ का इफ़्तिताह़ किया। 1409 हिजरी को दारूलउलूम अमजदिया कराची (पाकिस्ता)में बुख़ारी शरीफ़ का इफ़्तिताह़ फ़रमाया,और ज़िलहिज्जा1409हिजरी को अलजामिअतुल क़ादरिया रिछा बेहड़ी ज़िला बरेली शरीफ में शरह़ वक़ाया का त़वील सबक़ पढ़ाया। अब तक मुल्क व बैरुने मुमालिक में न जाने कितने मदारिस वजामीआत में दर्स बुखारी दिए हैं। जामिआ फ़ारूक़िया बनारस में ख़त्म बुख़ारी के मौक़ा पर साह़िबे बुख़ारी और आख़िरी ह़दीस पर ढाई घन्टा तक़रीर फ़रमाई।

ख़ान्दान रज़ा की फ़तवा नवैसी :

ख़ान्दान इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी की मुद्दत फ़तवा नवैसी का मन्दर्जा ज़ैल जाइज़ा ईमान और यक़ीन को रौशन करता है। ह़ज़रत मौलाना रज़ा अ़ली ख़ाँ की फतवा नवैसी का आग़ाज़ 1246 हिजरी 1831 ई अन्जाम

1282 हिजरी 1865 ई. इमाम अहमद रज़ा की फ़तवा नवैसी का आग़ाज़ 1286हिजरी / 1869 ई.अन्जाम 1340 हिजरी 1831 ई. हुज्जतुलइस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद हामिद रज़ा की फ़तवा नवैसी का आग़ाज़ 1338 हिजरी 1910 ई. अन्जाम 1981 ई. / 1402। है।

बहम्देही तआला यह सिलसिला–ए–ज़रराँ जिसकी मुद्दत 1408 हिजरी 1988 ई. तक 162 साल होती है,अब भी ख़ानक़ाह आलिया क़ादरिया बरकातिया रज़विया सौदागिरान बरेली से ताजुश्शरीआ 1967 ई से अन्जाम दे रहे हैं। आप हुज़ूर मुफ़्ती आज़म कुद्दिसा सिर्रहु और मुफ़्ती सैयद मुहम्मद अफ़ज़ल हुसैन रज़वी मोंगीरी की ज़ेरे निगरानी फ़तावा लिखते रहे। मुफ़्ती आज़म कुद्दिसा सिर्रहु के पास फ़तावा की कसरत की वजह से कई काम करते। मुफ़्ती आज़म ने फ़रमाया :

अखतर मियाँ घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम उस काम को अन्जाम दो। में तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ।" लोगों से मुख़ातब हो कर मुफ़्ती आज़म ने फ़रमाया :

"आप लोग अब अख़तर मियाँ सल्लमहु से रजूअ़ करें उन्हीं को मेरा क़ाइम मक़ाम और जानशीन जानें।"

उसी दिन से लोगों का रूजहान ताजुश्शरीआ की तरफ़ हो गया। आप ख़ुद अपने फ़तवा नवैसी की इब्तिदा यूँ तहरीर फ़रमाते हैं।

फतवा नवैसी का आग़ाज़ :

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ्ती–ए–आज़म अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी दामत बरकातुहुमुल आ़लिया को अल्लाह तआ़ला ने वदीअ़त के तौर पर इल्मी व फ़कही स़लाहियतों और जुज़यात फ़िक़्हिया पर कामिल दसर्तस,इल्मे कुरआन व ह़दीस पर मुकम्मल इदराक अ़ता फ़रमाया। आप ने सब से पहले फ़तवा 1966ई / 1382हिजरी में तह़रीर फ़रमा कर मुफ़्ती सैयद अफ़ज़ल हुसैन मुंगीरी स़द्र दारुलइफ़ता मन्ज़र–ए–इस्लाम को दिखाया,आप ने फ़रमाया कि अब मैंने देख लिया है नाना मोह़तर्म को दिखा आइये. फिर आप ने अपने नाना ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रुहु की ख़िदमत में पेश किया। ह़ज़रत ने मुलाह़िज़ा फ़रमा कर आप से मुख़ात़ब हो कर दादे तह़सीन और हौस़ला अफ़ज़ाई फ़रमाई और हिदायत की दारुलइफ़ता में आ कर फ़तवा लिखा कर और मुझे दिखाया करो। इस से पहले फ़तवा में सवालात के शाफि व काफी जवाबात दिये। यह इस्तिफ़ता मरकज़ इस्लाम मदीनतुल मुनव्वर से आया था। जिस में त़लाक़,निकाह मीरास़ से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल शरइ़या दरयाफ़्त किए गये थे। आप ने तफ़स़ील से दलाइल व बराहीन के साथ फ़तवा को मुज़य्यन कर के उस्ताज मोह़तर्म और नाना जान से दाद व तह़सीन ह़ासिल की।

नबीरा–ए–उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी कहते हैं कि:

"कभी कभी नाग़ा हो जाता था तो ह़ज़रत की

अहलिया मोह़तर्मा पीरानी अम्माँ साहिबा अलैहिर्रमा दरयाफ़्त फ़रमाती कि आज अख़तर मियाँ नहीं आये हैं। उन से कहो कि रोज़ाना आया करे। हज़रत इन को बहुत पसन्द फ़रमाते हैं।''

ताजुश्शरीआ जब भी फ़तावा की इस्लाह़ के लिए हाज़िरे ख़िदमत होते तो हज़रत आप को अपने क़रीब बैठाते,फ़तावा मुलाहिज़ा फ़रमाते और ज़रूरत के तेह़त कुछ इज़ाफ़ा या तरमीम व तदलील फ़रमा कर दस्तख़त फ़रमा देते,यह मामूल बरसों रहा। और हज़रत के अय्यामे अलालत दफ़तरी कामों,दारुलउ़लूम मज़हर इस्लाम और सन्द ख़िलाफ़त व इजाज़त पर दस्तख़त़ करने और महर की तमाम तर ज़िम्मा दारियाँ आप के सुपुर्द फ़रमा दी थीं। जिस को आप ने बहुस्न व ख़ुबी अन्जाम दिया। आप ख़ुद अपने फ़तवा नवैसी की इब्तिदा यूँ तह़रीर फ़रमाते हैं।

''मैं बचपन से ही हज़रत(मुफ्ती आज़म)से दाख़िले सिलसिला हो गया हूँ,जामिआ अज़हर से वापसी के बाद मैंने अपनी दिलचस्पी की बिना पर फ़तवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफ़्ती सैयद अफ़ज़ल हुसैन साह़ब अलैहिर्रह़मा और दूसरे मुफ़्तियाने किराम की निगरानी में मैं यह काम करता रहा। और कभी कभी हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो कर फ़तवा दिखाया करता था। कुछ दिनों के बाद उस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तक़िल हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होने लगा। हज़रत की तवज्जोह से मुख़्तसर मुद्दत में उसकाम में मुझे

वह फ़ैज़ ह़ासिल हुआ कि जो किसी के पास मुद्दतों बैठने से भी न होता।''

(माहनामा इस्तिकामत कानपूर स.151 रज्जबुलमुरज्जब 1403 हिजरी 1983 ई.)

ताजुश्शरीआ ने राकिमुस्सुतूर के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया कि : मैं ने दारुलउ़लूम मन्ज़र-ए-इस्लाम में पढ़ा और पढाया,जामिआ अज़हर में भी पढ़ा,शुरू से ही मुझे मुत़ालअ़ का बहुत शौक़ था अपनी दरसी किताबों के अ़लावा शुरूह़ व ह़वाशी और ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ किताबों का रोज़ाना कसरत से मुतालअ़ करता,और ख़ास़ ख़ास़ चीज़ों को डाइरी पर नोट कर लिया करता था। उसके अ़लावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला वह हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुद्दुस सिर्राहु की स़ोहबत व इस्तिफ़ादा से ह़ासिल हुआ। उनके एक घन्टा की सोह़बत, इस्तिफ़सारात और इस्तिफ़ादा सालों की मेह़नत व मुशक़्क़त पर भारी पड़ते थे। मैं आज हर जगह हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आ़ज़म का इल्मी व रूह़ानी फ़ैज़ान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हें की स़ोह़बत किमया असर का स़दक़ा है।

तक़रीबन चौबीस साल से मुसलसल मुफ़्ती आ़ज़म कुद्दिसा सिर्रहु के उस मनस़ब को बहुसन व ख़ूबी अन्जाम दे रहे हैं ताजुश्शरीआ़ के फ़तावा इक़साये आ़लम में सनद का दर्जा रखते हैं। एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ ता दम तह़रीर फ़तावा के रजिस्टरों की तअ़दाद 31 से मुतजावज़ हो गई है।

मर्कज़ी दारुलइफ़्ता का क़ियामः

1981 ई.में ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रहु के इन्तिक़ाल के बाद आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िल बरेलवी के दौलत कदा पर(जहाँ ताजुश्शरीअ़ा की मुस्तक़िल सुकूनत है) मर्कज़ी दारुलइफ्ता की बुनियाद डाली,1982 ई.में घेर पर ही मसाइल के जवाबात एनायत फ़रमाते थे। बाज़ाबता तौर पर किसी इदारा की बुनियाद नहीं पड़ी थी,मगर उ़लमा व मशाइख़ और अ़वामे अहले सुन्नत की ज़रूरत का ख़ियाल करते हुये"मर्कज़ी दारुलइफ़्ता"के क़ियाम का फ़ैसला किया।

उस वक़्त ह़ज़रत रोज़ाना दारुल इफ़्ता में जलवा अफरोज़ होते और आप ने मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी अ़ब्दुर्रह़ीम बस्तवी,मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नाज़िम अ़ली क़ादरी बारा बंकी,मौलाना मुफ़्ती ह़बीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी को मुफ़्ती की हैसियत से मरकज़ी दारुलइफ़्ता में मुक़र्रर फ़रमाया। फ़तावा को रजिस्टर में नक़ल की ख़िदमत के लिए मौलाना अ़ब्दुलवह़ीद ख़ाँ बरेलवी को मामूर किया गया। मौलाना अ़ब्दुल वह़ीद बरेलवी मरहूम ने 1983 ई से 2005 ई तक फ़तावा की नक़ल का काम किया। आज मरकज़ी दारुलइफ़्ता में मौलाना के हाथ से मुन्दर्जा फ़तावा के 80 / रजिस्टर होंगे। मौजूदा वक़्त में मर्कज़ी दारुलइफ़्ता से जारी फ़तावा की हैसियत मुल्क व बैरूने ममालिक में ह़र्फ़ आख़िर का दर्जा में हैं। जिस मस्नद इफ़्ता की बुनियाद मुजाहिद जंग आज़ादी मौलाना मुफ़्ती रज़ा अ़ली ख़ाँ बरेलवी रह़मतुल्लाहि अ़लैहि ने रखी थी वह आज तक बारौनक़ है।

अज़दवाजी ज़िन्दगी:

जानशीन मुफ़्ती आज़म का अक़्द मसनून हकीमुलइस्लाम मौलाना हुसनैन रज़ा बरेलवी अ़लैहिर्रहमा की दुख़्तरनेक अख़तर सालेह सीरत के साथ 3 नवम्बर 1968 ई शअबानुलमुअ़ज़्ज़म 1388 हिजरी बरोज़ इतवार को महल्ला कांकर टोला पुराना शहर से हुआ, जिन से फिलहाल एक साहबज़ादा मख़दूम गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा क़ादरी बरेलवी और पाँच साहबज़ादयाँ तवल्लुद हुयें। जिन में सब की शादियाँ हो चुकी हैं।

अल्लाह तबारूक व तआ़ला आप की औलाद अमजाद को सलफ़े सालिहीन और ख़ान्दान रज़ा का नमूना बनाये और साहबज़ादा गिरामी को वालिदे बुज़ुर्ग गवार ताजुश्शरीआ का सही मअ़नों में जानशीन और क़ाइम मक़ाम बनाये (आमीन)

हज व ज़ियारत

ताजुशशरीआ मुफ्ती मुहम्मद अख़रत रज़ा अजहरी ने पहला हज 1403/4सितम्बर 1983 ई., दूसरा हज 1405/1985 ई. तीसरा हज 1406 हिजरी 1986 ई., में अदा फ़रमाये। और मुतअ़द्दिद बार उमरा से भी फैज़याब हुये।

नस्बनदी के ख़िलाफ़ फ़तवा :

श्रीमती इंद्रागाँधी साबिक़ वज़ीर–ए–आज़म हिन्द का मिजाज आमराना था,उनके दौरे इक्तिदार में अवाम पर ज़ुल्म व जबर किया गया,कांग्रेस पार्टी की सारी कुव्वत का नुक़्ता, इरतिकाब सिर्फ़ और सिर्फ़ इंद्रागाँधी की जात थी।

उन्होंने यह सब बिला शिरकत ग़ैर इक़्तिदार पर अपनी गिरफ़्त क़ाइम रखने के लिए ही किया था। वह सियासी मुख़ालिफ़ीन को बे दर्दी से कुचल देने के लिए सख़्त से सख़्त इक़दाम करने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करती थीं। इंद्रागाँधी के साथ उन के बेटे श्री संजे गाँधी का ताना शाही नज़रिया पसे पुश्त काम कर रहा था। 1975 ई. में पुरे मुल्क में हंगामी हालात का एलान कर दिया गया,तमाम शहरियों के बुनियादी हुकूक़ सलब कर लिए गये, रक़िबों को क़ैदे सलासिल में जकड़ कर नज़रे ज़िन्दा कर दिया गया,"मिसा"जैसे जाबिर क़ानून का नाफ़िज़ुलअ़मल कर दिया गया। इन तमाम हालात के साथ ही दो से ज़्यादा बच्चा पैदा करने पर सख़्ती से पाबन्दी आइद कर दी गई और उन लोगों पर नस्बन्दी करना ज़रूरी क़रार दे दिया। पुलीस अ़वाम को जबरन पकड़ पकड़ कर नस्बन्दी करा रहीं थी,उसी इसना में नस्बन्दी के जवाज़ या अ़दमे जवाज़ पर शरई नुक्ता नज़र जानने और अ़मल करने के लिए दारुलइफ़्ता बरेली से अ़वाम ने रजूअ़ करना शुरु कर दिया। दूसरी तरफ़ दैबन्द के दारुलइफ़्ता बरेली से क़ारी मुहम्मद तैब मोहतमिम दारुलउलूम दैवबन्द ने नस्बन्दी के जाइज़ होने का फ़तवा दे दिया। मुल्क की हेजानी कैफ़ियत और उम्मते मुस्लिमा में इन्तिशार को देखते हुये जाबिर व ज़ालिम हुक्मराँ के ख़िलाफ़ ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रहु के हुक्म पर ताजुश्शरीआ़ ने नस्बन्दी के हराम व नाजाइज़ होने का फ़तवा सादिर

फ़रमाया। इस फ़तवा पर हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म के अलावा हज़रत मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी अब्दुर्रहीम बस्तवी, मौलाना मुफ़्ती रियाज़ अहमद सीवानी के दस्तख़त हैं।

. फ़तावा की इशाअत के बाद हुकूमत ने इस बात के लिए दबाओ डाला कि यह फ़तावा वापस ले लिया जाये मगर हज़रत ने फ़तवा से रुजूअ करने से इन्कार कर दिया और नुमाइन्दगाने हुकूमत से साफ़ साफ़ कह दिया गया कि फ़तावा कुरआन व हदीस की रौशनी में लिखा गया है। किसी भी सूरत में वापस नहीं लिया जा सकता।

हक़ गोई व बे बाकी :

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जानशीन मुफ़्ती आज़म को जिन गोनोगों सिफ़ात से मुत्तसिफ़ किया है। इन सिफ़ात में एक हक़ गोई और बेबाकी है। आप ने कभी भी सदाक़त व हक़्क़ानियत का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। चाहे कितने ही मसलिहत के तक़ाज़े क्यों न हों। चाहे कितने ही क़ैद व बन्द, मसाइब व आलाम और हाथों में हथकड़ियाँ पहनना पड़ीं, कभी किसी को ख़ुश करने के लिए उसकी मनशाह के मुताबिक़ फ़तावा नहीं तहरीर फ़रमाया जब लिखी कोई फ़ितरी तहरीर फ़रमाया तो अपने अस्लाफ़ व अपने आबा व अजदाद के क़दम तक़द्दुम हो कर तहरीर फ़रमाया। जिस तरह जद्दे अमजद इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरेलवी और मुफ़्ती आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा नूरी ने बे ख़ौफ़ व ख़तर फ़तावे तहरीर फ़रमाये। इसी तरह अपने अजदाद के नक़्शे क़दम पर चलते हुये जानशीन

मुफ़्ती आज़म नज़र आते हैं। इस हक़ गोई के शवाहिद आज आप के हज़ारों फ़तावा हैं जो मुल्क और बैरूने मुल्क में फैले हुये हैं।

सऊ़दी मुज़ालिम की कैफ़ियत जानशीन मुफ़्ती आज़म की ज़बानी

जानशीने हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म अपनी शरीक ह़यात (पीरानी अम्मा साहिबा)के साथ हज व ज़ियारत के लिए तशरीफ़ ले गये थे,अरफ़ात से वापस लौटने के बाद सऊ़दी हुकूमत ने रात के वक़्त मक्का मुअ़ज़्ज़मा में आप को क़ियाम गाह से गिरफ़्तार कर लिया,बिला वजह ग्यारह(11)दिल जेल में रख कर बग़ैर मदीना शरीफ़ की ज़ियारत कराये हिन्दुस्तान भेज दिया। मन्दर्जा ज़ैल सुतूर में हज़रत की ज़बानी पूरी रिपोर्ट पेश है :

बम्बई 13/ सितम्बर 1986 ई./1407 हिजरी में इब्राहीम मिरचन्ट रोड मीनारा मस्जिद बम्बई के क़रीब रज़ा एकडमी बम्बई के ज़ेरे एहतिमाम जानशीन मुफ़्ती आज़म के मक्का मुकर्रमा में बेजा गिरफ़्तारी पर सऊ़दी हुकूमत के खिलाफ़ एक शान्दार एहतिजाजी इजलास मुन्अ़क़िद हुआ जिस की सदारत मुहद्दिस कबीर मौलाना ज़ियाउलमुस्तफ़ा रज़वी अमजदी ने फ़रमाई, बम्बई के उ़लमा, अइम्मा मसाजिद के एलावा बाहर से आये हुये अकाबिर उ़लमा ने शिरकत फ़रमाई। मजमअ़ जो तक़रीबन पचास हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल था। जोश एहतिजाज में सऊ़दी हुकूमत के ख़िलाफ़ नअ़रे बलन्द करता रहा। अख़ीर मैं जानशीन मुफ़्ती आज़म ने सऊ़दी हुकूमत में अपनी

गिरफ़्तारी और ज़ियारत मदीना मुनव्वरा के बग़ैर वापस किए जाने से मुतअ़ल्लिक़ अपना यह मुख़्तसर सा बयान दिया जो दर्जे ज़ैल है।

31 अगस्त 1986 ई शब में तीन बचे अचानक सऊदी हुकूमत के सी आई डी और पुलिस के लोग मेरी क़ियाम गाह पर आये, और मुझे बेदार कर के पास्पोर्ट त़ल्ब किया और फिर मेरे सामान की तलाशी का मुत़ालबा किया। मेरे साथ मेरी पर्दा नशीन बीवी थीं। मैंने उन्हें बाथ रोम में भेजा। फिर सी आई डी ने बाथ रूम को बाहर से मुक़फ़ल कर दिया। और वह लोग सिपाहियों के साथ मेरे कमरे में दाख़िल हुये। मुझे रेलवालोर के नशाने पर हरकत न करने की वारनिंग दी। मेरे सामान की तलाशी ली। मेरे पास ह़ज़रत मौलाना सैयद अ़लवी मुद्दजुल्लाहु की दी हुई चन्द किताबें, और कुछ किताबें आला हज़रत की और दलाइलुलख़ैरात थी,उन तमाम किताबों को अपने क़बज़ा में लिया। मुझ से टेलिफ़ोन की डाइरी मांगी। जो मेरे पास न थी। मेरा,मेरी बीवी का और मेरे साथियों के पासपोर्ट टिकट और वह किताबें हमरा ले कर मुझे सी आई डी आफ़िस लाये। और एके बाद दीगर मेरे रफ़क़ा,महबूब और याकूब को भी उठालाये।

मुझ से रात में रस्मी गुफ़्तगु के बाद पहला सवाल यह किया कि आप ने जुमा कहाँ पढ़ा, मैंने कहा कि मै मुसाफ़िर हूँ मेरे ऊपर जुमा फ़र्ज नहीं। लिहाज़ा मैंने अपने घर में ज़ोहर पढ़ी। मुझ से पूछा कि तुम ह़र्म में नमाज़ नहीं

पढ़ते हो ? मैंने कहा मैं ह़र्म से दूर रहता हूँ,ह़र्म में त़वाफ़ के लिए जाता हूँ इसलिए में ह़र्म में नमाज़ नहीं पढ़ सकता। मुझ से कहा कि आप क्यों अपने मह़ल्ला की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते. मैंने कहा कि बहुत से लोग हैं जिन्हें मैं देखता हूँ कि वह मह़ल्ला की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते, और बहुत से लोगों के मुतअ़ल्लिक़ मुझे मह़सूस होता है कि वह सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ते तो मुझ से ही क्यों बाज़ पर्स करते हैं। मुझ से फिर भी इस़रार किया गया तो मैंने कहा कि मेरे मज़हब में और आप लोगों के मज़हब में इख़्तिलाफ़ है,आप हम्बली कहलाते हैं और मैं ह़न्फ़ी हूँ और ह़न्फ़ी मुक़तदी की रिआयत ग़ैर ह़न्फ़ी इमाम अगर न करे तो ह़न्फ़ी की नमाज़ स़ही न होगी। इस वजह से मैं नमाज़ अ़लाहि़दा पढ़ता हूँ। मुझ से ह़ज़रत अ़ल्लामा सैद अ़लवी मालकी मद्दज़ुल्लाहु की किताबों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा कि यह तुम्हें कैसे मिली? मैंने कहा कि यह किताबें मुझे उन्होंने चन्द रोज़ पहले दी हैं। जब मैं उन से मिलने गया था। मुझ से सवाल किया कि यह पहली मुलाक़ात थी। मैंने कहा हाँ, यह पहली मुलाक़ात थी। आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िल बरेलवी की चन्द किताबें देख कर जो नअत और मसाइल के मुतअ़ल्लिक़ थीं पूछा उन से तुम्हारा किया रिशता है?मैंने कहा कि वह मेरे दादा थे।

उस मुख़्तस़र सी इन्कुवारी के बाद मुझे रात गुज़र जाने के बाद फ़जिर के वक़्त जेल भेजदिया गया। दस बजे फिर सी आई डी से गुफ़्तगु हुई। उस ने मुझ से पूछा कि

हिन्दुस्तान में कितने फ़िरक़े हैं। मैंने शीआ, क़ादयानी, वग़ैरा चन्द फ़िर्क़े गिनाये और मैंने वाज़ेह किया कि इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी ने क़ादयानियों का रद किया है। और उस के रद में छः रिसाले جزاء الله عدوة قهر الديان،السوء العقاب वग़ैरा लिखे हैं। हम पर कुछ लोग यह तोहमत लगाते हैं और आप को यह बताया है कि हम और क़ादयानी एक हैं,यह ग़लत़ है और वही लोग हमें बरेलवी कहते हैं जिस से यह वहम होता है कि बरेलवी किसी नये मज़हब का नाम है। ऐसा नहीं है। बल्कि हम अहले सुन्नत व जमाअ़त हैं।

सी आई डी के पूछने पर मैंने बताया कि इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िल बरेलवी ने किसी नये मज़हब की बुनियाद नहीं डाली बल्कि उनका मजहब वही था जो सरकार मुह़म्मद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और स़ह़ाबा व ताबेईन और हर ज़माने के स़ालिह़ीन का मज़हब है, और यह कि हम अपने आप को अहले सुन्नत व जमाअ़त कहलवाना ही पसन्द करते हैं। और हमें इस मक़स़द से बरेलवी कहना कि हम किसी नये मज़हब के पैरोकार हैं हम पर बहुतान है, सी आई डी के पूछने पर मैंने वहाबी और सुन्नी का फ़र्क़ मुख़्तसिर त़ौर पर वाज़ेह किया। मैंने कहा कि वहाबी हुज़ूर अ़लैहिस्सलात वस्सलाम के इल्मे ग़ैब और उनकी शफ़ाअ़त और उन से तवस्सुल और इस्तिमदाद और उन्हें पुकारने के मुन्किर हैं। और उन उमूर को शिर्क बताते हैं। जबकि हमारा यह

अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से तवस्सुल जाइज़ है, और उन्हें पुकारना भी, और यह कि वह सुनते भी हैं और अल्लाह के बताये से ग़ैब को भी जानते हैं। और अल्लाह ने उन को शिफ़ाअत का मन्सब अता फ़रमाया,और इल्मे ग़ैब पर सी आई डी के पूछने पर आयात कुरआन से मैंने दलीलें क़ाइम की, और यह साबित किया कि नबूवत इत्तिलाअ अलगैब ही का नाम है, और नबी वही है जो अल्लाह के बताने से इल्मे ग़ैब की ख़बर दे। और यह कि नबी के वास्ते से हर मोमिन ग़ैब जानता है जैसा कि कुरआने मुक़द्दस में मन्सूस है। सी आई डी के पूछने पर मैंने बताया कि सरकारे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाद विसाल सभी ग़ैब की ख़बर है। इसलिए कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नबुव्वत बाकी है और नुबुव्वत ग़ैब जानने ही को कहते हैं। फिर यह कि आयतों में ऐसी क़ैद नहीं है जिस से यह ज़ाहिर हो कि बाद विसाल सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इल्मे ग़ैब नहीं जानते हैं। एक और नशिस्त में सी आई डी के मुतालबे पर मैंने तवस्सुल की दलील में وابتغوا اليه الوسيلة आयत पढ़ी, और यह बताया कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तवस्सुल मिन्जुमला आमाल सालेहा है, और यह कि किसी अमल का सालेह होना और वसीला होना इस शर्त पर मौकूफ़ है कि वह मक़बूल हो और सरकार रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बिला शुबह मक़बूल बारगाहे उलूहियत हैं, बल्कि सैयदुलमक़बूलीन

हैं तो उन से तवस्सुल बदर्जाए ऊला जाइज़ है, और तवस्सुल शिर्क नहीं।

सी आई डी के कहने पर मैंने मज़ीद कहा कि किसी से उस तौर मदद मांगना कि अल्लाह के सिवा उस को मुस्तक़िल और फ़ाइल समझे शिर्क है और हम इस तौर पर किसी से मदद मांगने के क़ाइल नहीं हैं। हाँ अल्लाह की मदद का वसीला जान कर किसी मक़बूल बारेगाह से मदद मांगना हर गिज़ शिर्क नहीं है। सी आई डी के एक सवाल के जवाब में कहा कि हम में और वहाबियों में यह फ़र्क़ है कि वह हमें तवस्सुल वग़ैरा उमूर की बिना पर काफ़िर व मुशरिक बताते हैं, लेकिन हम उन को महज़ इस बिना पर काफ़िर व मशरिक नहीं कहते(यानी उस के वजूहात और हैं)

दूसरे दिन मेरे उन बयानात की रोशनी में सी आई डी ने मेरे लिए एक इक़रार नामा उस ने ख़ुद लिख कर मुझे सुनाया, जो यूँ था। मैं फ़लाँ इब्ने फ़लाँ बरेलवी मज़हब का मतीअ़ हूँ मैंने एअ़तिराज़ किया कि मैं बारहा यह कह चुका हूँ कि बरेलवी कोई मज़हब नहीं है। और अगर कोई नया मज़हब बनाम बरेलवी है तो मैं उस से बरी हूँ। आगे इक़रार नामे में उसने यूँ लिखा कि मैं इमाम अहमद रज़ा का पैरवहूँ और बरेलवियों में से एक हूँ और हमारा अ़क़ीदा है कि सरकार से तवस्सुल,इस्तिग़ासा और उन को पुकारना जाइज़ है। और सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ग़ैब जानते हैं। और वहाबी उन उमूर को शिर्क बताते हैं, और यह कि मैं उन के पीछे इस वजह से नमाज़

नहीं पढ़ता हूँ कि हम सुन्नियों को मुशरिक बताते हैं। इक़रारनामे के आख़िर में मेरे मुत़ालबे पर उस ने यह इज़ाफ़ा किया कि बरेलियत कोई नया मज़हब नहीं है और हम लोग अपने आप को अहले सुन्नत व जमाअ़त कहलवाना ही पसन्द करते हैं। फिर मुख़्तलिफ़ नशिश्तों में बार बार वही सवालात दोहराये, बाद में मुझ से मेरे सफ़र लन्दन के बारे में पूछा और कहा कि किया वहाँ आप ने किसी कानफ़रन्स में शिरकत की है। मैंने जवाब दिया कि कान्फ़रन्स हुकूमत के पैमाने और सियासी सत़ह पर होती है हम लोग न सियासी हैं, न किसी हुकूमत से हमारा राबत़ा है।

सी–आई–डी के पूछने पर मैंने बताया कि लन्दन के उस इजलास में जिस में शरीक था। बनाम बरेलियत मसाइल पर मुबाहिसा न हुआ। बल्कि इत्तिहादे इस्लामी और तन्ज़ीमुल मुस्लिमीन पर तक़ारीर हुयें और उस जलसा का ख़र्च वहाँ के सुन्नी मुसलमानों ने उठाया, और उस में यह मुत़ालबा किया गया कि इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी के पैर व अहले सुन्नत व जमाअ़त को राबत़ा आ़लमे इस्लामी में नुमाइन्दगी दी जाये। ज़िस त़रह़ नदवियों वग़ैरा को राबत़ा में नुमाइन्दगी ह़ासिल है।

सी–आई–डी–के पूछने पर मैंने बताया कि यह तजवीज़ बिलइत्तिफ़ाक राये पास हो गई थी। तीसरी नशिस्त में जब दो नशिस्तों की तफ़तीश ख़त्म हो चुकी और मेरा इक़रार नामा खुद तैयार कर चुके तो मुझ से एक बड़े

सी आई डी आफ़ीसर ने कहा कि मैं आप का आप के इल्म,उम्र और शख़्सियत की वहज से एहतिराम करता हूँ और आप से मख़ासूस औक़ात में दुआओ का तालिब हूँ। गिरफ्तारी का सबब मेरे पूछने पर उसने बताया कि आप का कैस मअ्मूली है। वरना उस वक़्त जब सिपाही हथकड़ी डाल कर आप को लाया था मैं आप की हथकड़ी न खिलवाता।

मुख़्तसर यह कि मुसलसल सवालात के बावजूद मेरा जुर्म मेरे बार बार पूछने के बाद भी मुझे न बताया, बल्कि यही कहते रहे कि मेरा मुआमला अहमियत नहीं रखता लेकिन उसके बावजूद मेरी रिहाई में ताख़ीर की और बग़ैर इज़हार जुर्म मुझे मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी से मौकूफ़ रखा। और ग्यारह दिनों के बाद जब मुझे जद्दा रवाना किया गया तो मेरे हाथों में जद्दा एरपोर्ट तक हथकड़ी पहनाये रखी, और रास्ते में नमाज़ ज़ोहर के लिए मौक़ा भी न दिया गया, उस वजह से मेरी नमाज़ ज़ोहर क़ज़ा हो गई।

बैनललअक़वामी एहतिजाजी मुज़ाहिरी :

सितम्बर 1986 ई. 1407 हिजरी में दौरान हज जानशीन मुफ़्ती आज़म को हुकूमत सऊदी अर्ब ने मक्का मुकर्रमा में बिला जुर्म सिर्फ़ ग़लबा–ए–नजदियत की ख़ातिर गिरफ़्तार कर के गयारह दिन तक क़ैद व बन्द में रखा। और मज़ीद सितम यह कि उन्हें दियारे हबीबे पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हाज़िरी से भी

महरूम कर दिया। लेकिन जानशिने मुफ़्ती–ए– आज़म अपने मौकफ़ और मसलक पर क़ाइम रहे और उनके पाये सिबात में लग़ज़िश नहीं आई।

आप की गिरफ़्तारी से आलमे इस्लाम में ग़म व गुस्सा की एक लहर दोड़ गई थी। और न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि बैरूने हिन्द बेशतर इस्लामी और ग़ैर इस्लामी मुमालिक में सवाद आज़म अहले सुन्नत के एहतिजाजात का लम्बा सिलसिला शुरू हो गया था। अख़बारात व रसाइल ने भी जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म की उस बेजा रिगफ़्तारी की मज़म्मत की। वर्लड इस्लामिक मिशन बरतानिया,रज़ा एकेडमी मुम्मबई,सुन्नी जमीअतुलउलमा ,जमीआ उलमा–ए– इस्लाम पाकिस्तान और छोटी बड़ी अन्जुमनों व जमाअतों ने ज़बर दस्त एहतिजाजी मुज़ाहिरे पूरे बर्रे सग़ीर में किए। और हुकूमते सऊदी से मुआफ़ी का मुतालबा किया।

शाह फ़हद,शहज़ादा अब्दुल्लाह और तर्की इब्ने अब्दुलअज़ीज़ से मुलाक़ातः

जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आज़म की गिरफ़तारी के रद्दे अमल पर क़ाइदीने मिल्लत ने लन्दन में सऊदी हुकूमत के बादशाह शाह फ़हद,शहज़ादा अब्दुल्लाह(मौजूदा बादशाह) और तुर्की इब्ने अब्द अल अज़ीज़ वज़ीर–ए–ममलिकत से तवील मुलाकाते की,जिन में अल्लामा अरशदुलक़ादरी मौलाना अब्दुस्सत्तार ख़ाँ नियाज़ी,मौलाना शाह अहमद नूरानी,मौलाना सय्यद गोलामुस्सय्यदैन, मौलाना शाहिद रज़ा नईमी,शाह मुहम्मद जीलानी सिद्दीक़ी,मौलाना यूनुस का

शमीरी,मौलाना अ़ब्दुलवहाब सिद्दीक़ी और शाह फ़रीदुल ह़क़ और दीगर उ़लमा अहले सुन्नत ने हुक्मरान सऊदिया को पुर ज़ोर अन्दाज़ में गिरफ़्तारी पर एहतिजाज दर्ज कराया, और ह़रमैन शरीफ़ैन में हर मसलक के लोगों को अपने अक़ीदे के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ने और दीगर अरकान करने पर मुत़ालबा किया,जिस पर उनसरबराहाने ममलुकत ने फ़ौरन मन्ज़ूर कर लिया और उम्मते मुस्लिमा के लिए सऊदी हुकूमत ने एक एलानिया जारी किया कि:

''ह़रमैन शरीफ़ैन में हर मसलक व मज़ाहिब के लोग अब आज़ादाना अपने त़ौर व त़रीक़ों से एबादत करेंगे। कुन्ज़ुलईमान पर पाबन्दी मेरे हुक्म से नही लगाई गई है, मुझे इस का इल्म भी नहीं है। अब मीलाद की मुह़ाफ़िल आज़ादाना त़रीक़ा पर होंगी,किसी पर मुसल्लत नहीं किया जायेगा। सुन्नी हेजाज़ किराम के साथ कोई ज़्यादती नहीं होगी।''

रोज़ नामा अलएह़राम क़ाहिरा 12/ रबीउलअव्वल 1407 हिजरी1987 ई.रोज़नामा जंग लन्दन 3/मार्च 1987/1407 हिजरी

बालाआख़िर कुरबानी रंग लाई अहले सुन्नत के एहतिजाजात ने हुकूमत सऊदिया को यह सोचने पर मजबूर कर दिया और लन्दन में सऊदी फ़रमाँ रवा शाह फहद को यह एलान करना पड़ा कि''ह़रमैन शरीफ़ैन में हर मसलक के लोगों को उन के त़रीक़े पर एबादात करने की आज़ादी होगी''अरकान वर्ल्डइस्लामिक मिशन बर त़ानिया ने लन्दन में शाह फहद और उन के भाई तुर्की इब्ने अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ से

मुलाक़ात कर के इख़्तिलाफ़ी मसाइल पर मज़ाकिरा के सिलसिला में गुफ़्तगु की.अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी रज़वी ने सऊ़दी सफ़ीर को बज़बान अ़रबी एक एहतिजाजी मैमूरन्डम भी दिया।

21 मई 1987 ई.1407 हिजरी को सऊ़दी सफ़ारत ख़ाना देहली से जानशिने मुफ़्ती आज़म के दौलतकदा पर एक फ़ौन आया और ख़ुद सफ़ीर सऊदिया ने आप से मुआ़फी मांगते हुये यह ख़बर दी कि।

हुकूमत सऊदी अ़र्ब ने आप को ज़ियारत मदीना मुनव्वरा और उ़मरा के लिए एक माह का ख़ुसूसी वीज़ा दिया है।

जानशीन–ए–मुफ़्ती आज़म 24 मई 1987 ई. 1407 को सऊदी फलाइट से वाया जद्दा,मदीना मुनव्वरा पहुँचे। सऊ़दी सफ़ारत ख़ाना ने आप की आमद की इत्तिलाअ़ बज़रीआ़ टेलिकस जद्दा और मदीना हवाई अड्डों पर देदी थी। सऊ़दी सफ़ीर मिस्टर फवाद सादिक़ मुफ़्ती ने इस मुआ़मला में काफ़ी दिलचस्पी ली। जानशीन मुफ़्ती आज़म उ़मरा और मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो कर सऊ़दी में सौला रोज़ कियाम के बा़द वत़न वापस आये। देहली हवाई अड्डा और बरेली जंकशन पर हज़ारों मुसलमानों ने पुर जोश इस्तिक़बाल और ख़ैरमक़दम किया।

तक़्वा शिआ़री:

आज कल पिर फ़कीर और आलिमों और आ़मिलों के इर्द गिर्द औरतों का हुजूम लगा रहना आ़म सी बात है,

जहाँ देखिए मुंह खोले चलती फितरी नज़र आयेंगी। हया नाम की कोई चीज़ ही बाक़ी नहीं रह गई है, मगर जानशीने मुफ़्ती आज़म की तक़वा शिआ़री मुलाहिज़ा फ़रमायें।

1407 हिजरी की बात है कि ज़नान ख़ाने में औ़रतें ज़ियारत और बैअ़त के लिए हाज़िर हैं। जब आप ज़नान ख़ाने में तशरीफ़ ले गये तो चन्द औ़रतों के निक़ाब उलटे और मुंह खुले हुये थे। आप ने फ़ौरन अपनी आँखें बन्द कर लीं और फ़रमाया"निक़ाब डालो'निक़ाब डालो,ला हौला वला कुव्वता इल्लाहबिल्लाहिल अ़लियुलअ़ज़ीम।"

(मुफ्ती आज़म और उन के खुलफा जिल्द अव्वल स:50मअबूआ रज़ा एकेडमी 1990 ई)

सब औ़रतों ने निक़ाबें डाल ली, फिर बैअ़त फ़रमाया शरीअ़त की पास्दारी हो तो ऐसी हो।सफ़र चाहे जैसा हो,हवाई जहाज़ से हो या ट्रेन या गाड़ी से नमाज़ का वक़्त होते ही नमाज़ की अदायेगी के लिए बे चैन हो जाते हैं। अकसर राक़िमुस्सुतुर को हुक्म फ़रमाते कि मुस़ल्ला बिछा़ओ,नमाज़ पढ़ूँगा,चाहे एरपोर्ट हो या स्टेशन, नमाज़ तो क़ज़ा नहीं होती। नमाज़ पढ़ने की सभी को ताकीद फ़रमाते। हज़रत राक़िम से अकसर पूछते कि नमाज़ पढ़ी कि नहीं,अगर मालूम हो गया कि नमाज़ नहीं पढ़ी तो सख़्त नाराज़ होते। मुझे ख़ुब याद है कि 1991ई से 2006 तक तक़रीबन 15 साल तक मैं ने हज़रत के साथ पूरे मुल्क का सफ़र किया मगर नमाज़ हज़रत की कोई क़ज़ा नहीं हुई।

अल्लाहुअकबर।

ख़िलाफ़त व इजाज़त की शानदार तक़रीबः

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी की ख़िलाफ़त व इजाज़त की तक़रीब,एक हसीन और शान्दार तक़रीब थी,दारुलउ़लूम मज़हर–ए–इस्लाम बरेली के सेह रोज़ा इजलास 13/14/15/जनवरी 1962 ई/6/7/8 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1381 हिजरी की स़दारत और सरपरस्ती ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रुहु ने फ़रमाई।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रुहु ने मौलाना साजिद अ़ली ख़ाँ बरेलवी मोहतमिम दारुलउ़लूम मज़हर–इस्लाम को हुक्म दिया कि 15/जनवरी 1962 ई./8/शअ़बान1381 हिजरी को सुबह़ 7 बचे घर पर महफ़िले मीलाद शरीफ़ का इन्ऐक़ाद किया जाये। मीलाद ख़्वाँ हज़रात उ़लमा व मशाइख़ और त़लबा मदारिस व फ़ारिगुत्तहसील होने वाले त़लबा की दअ़वत शिरकत दे दी जाये। शदीद सरदी के मोसम में कई हज़ारलोगों ने मीलाद शरीफ़ में तशरीफ़ल लाये और ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी को बुलवाया,अपने क़रीब बठाया,दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ–ए–सलासुल आ़लिया क़ादरिया सहरवर्दिया,नक़्शबन्दिया चिश्तियाँ और जमीअ़ सलासुल अह़ादीस मुसलसल बिलअव्वलियत की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सर फ़राज़ फ़रमाया। तमाम औराद व वज़ाइफ़,आमाल व अशग़ाल,दलाइलुलख़ैरात,हज़बुलबह़र,तअवीज़ात वग़ैरा वग़ैरा की इजाज़त मरह़म्मत फ़रमाई।

इस मौके पर मुजाहिद मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान अब्बासी रईस आज़म उड़ीसा,बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुलहक जबल पूरी,मौलाना ख़लीलुर्रहमान मुहद्दसि अमरोहवी, अल्लामा मुश्ताक अहमद निज़ामी इलाहाबाद,मुफ़्ती नज़ीरुलअकरम नईमी मुरादाबादी मौलाना मुहम्मद हसीन संभली,मौलाना अनवार अहमद शाहजहाँपुरी,मौलाना काज़ी शमसुद्दीन जाफरी जौनपुरी,मौलाना कमाल अहमत तुलशीपुरी,मौलाना शअ़बान अ़ली हुब्बानी गोन्डवी,सूफी, अज़ीज़ अहमद बरेलवी वगैरा जैसे जय्यद उ़लमा मशाइख़ मौजूद थे। सभी हज़रात ने उठ उठ कर यके बाद दीगरे ताजुश्शरीआ को मुबारकबादियाँ दीं।(माहनामा नूरी किरन बरेली स:40,फ़रवरी1962ई / 1381हिजरी)

जानशीन मुफ़्ती आज़म को बचपन ही में हुज़ूर मुफ़्ती आज़म कु[illegible] सिर्रहु ने बैअ़त फ़रमा लिया था और बीस साल के बाद खुद ही हुज़ूर मुफ़्ती आज़म ने मीलाद शरीफ की महफिल में ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। जब हुज़ूर मुफ्ती आज़म ने 15 जनवरी 1962 हिजरी 1381 हिजरी को ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई उस वक़्त शमसुलउ़लमा मौलाना काज़ी शमसुद्दीन अहमद रज़वी जअ़फ़री अ़लैहिर्रहमा, बुरहानुलमिल्लत मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी अ़लैहिर्रहमा भी तशरीफ़ फ़रमा थे। मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी ने फ़रमाया कि हुज़ूर मुफ़्ती आज़म से मेरी गुफ़्तगु इस बारे में हुई है, कि हुज़ूर मुफ्ती आज़म ने फ़रमाया था कि जानशीन अपने वक़्त

पर वही होगा जिसे होना है। सदरूश्शरीआ मौलाना अम्जद अली रज़वी फ़ाज़िल बरेलवी से दरयाफ़त किया था कि हुज़ूर आप का जानशीन कौन होगा ? तो आला हज़रत ने हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा के मुतअल्लिक फ़रमाया बड़े मौलाना, मैंने अर्ज़ किया। उन के बाद फ़रमाया मुसतफ़ा(हुज़ूर मुफ़्ती आज़म)अर्ज़ किया उन के बाद फ़रमाया जीलानी,बशर्त इल्म व अमल की कैद,सुन्नियत आला हज़रत है। जब आला हज़रत ने नबीरा–ए–आला हज़रत मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा को मुरीद किया तो शजरा पर तहरीर फ़रमाया,"खलीफ़ा इन्शाअल्लाह बशर्त इल्म व अमल"यही रजिस्टर मुरीदीन में तहरीर फ़रमाया। हुज़ूर मुफ़्ती आज़म कुद्दिसा सिर्रहु ने अपने जानशीन के मुतअल्लिक इरशाद फ़रमाया कि इस(अल्लामा मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी) लड़के से बहुत उम्मीद है"।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दिसा सिर्रहु ने आख़री ज़माने में एक तहरीर जानशीने–मुफ़्ती–ए–आज़म को एनायत फ़रमाई और इस में अपना जानशीन और क़ाइम मक़ाम बनाया,

14/15/नवम्बर 1984 ई को मारहरा मुत्तहरा में उर्स क़ास्मी की तक़रीब में अहसनुलउलमा मौलाना मुफ़्ती सैयद हसन मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानक़ाह बरकातिया मारहरा ने जानशीन मुफ़्ती आज़म का इस्तिक़बाल "क़ाइम मक़ाम मुफ़्ती–ए– आज़म अल्लामा अज़हरी ज़िन्दा बाद" के नअरा–ए–से किया और मजमअ

कसीर में उ़लमा व मशाइख़ और फुज़ला व दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म को यह कह कर

''फ़क़ीर आस्ताना आ़लिया क़ादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से क़ाइम मक़ाम मुफ़्ती आज़म अल्लामा अखतर रजा ख़ाँ साहि़ब को सिलसिला क़ादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम खिलाफ़त व इजाज़त से माज़ून व मजाज़ करता हूँ पूरा मजमा सुन ले, तमाम बरकाती भाई सुन ली, और यह उ़लमा–ए–किराम (जो उ़र्स में मौजूद हैं)इस बात के गवाह रहें''।

बअ़दोहु अह़सनुलउ़लमा मौलाना सैयद हसन मिया बरकाती मद्दज़ुल्लाहु ने जानशीने मुफ़्ती–ए–आ़ज़म की दस्तारबन्दी की और नज़र भी पेश की।

सैयदुलउ़लमा मौलाना अश्शाह सैयद आले मुसतफ़ा बरकाती मारहरवी अ़लैहिर्रह़मा ने जुमला सलासुल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और ख़लीफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बुरहानेमिल्लत ह़ज़रत मुफ़्ती बुरहानुलह़क़ रज़वी जबलपुरी अ़लैहिर्रह़मा ने भी तमाम सिलसिलों की ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

वालिद माजिद मुफ़िस्सरे आ़ज़म हिन्द ने अपने फ़रज़न्दअरजमन्द को क़बल फ़राग़त इल्म आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा का जानशीन बनाया और एक तह़रीर भी एनायत फ़रमाई

रैह़ाने मिल्लत मौलाना मुह़म्मद रैह़ान रज़ा बरेलवी साबिक़ मोहतमिम मन्ज़र इस्लाम अपनी इरादत में शाइअ़

होने वाले "माहनामा आला हज़रत" में बउनवान "कवाइफ़ दारूलउलूम" तहरीर फ़रमाते हैं। "यह तरीर उस ज़माने की है जब मफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा बरेलवी कुद्दिसा सिर्रहु की तबीअत बहुत ज़्यादा अलील थी, और सारे लोगों को यह उम्मीद थी कि अब मौलाना इब्राहीम रज़ा जीलानी बरेलवी ज़ाहिरी दुनिया से रूख़सत हो जायेंगे,बवजहे अलालत यह तवक़्क़ो नहीं कि अब ज़्यादा ज़िन्दगी हो,बिना बरीं ज़रूरत थी कि दूसरा काइम मक़ाम हो। लिहाज़ा अख़्तर रज़ा सल्लमाहु को क़ाइम मक़ाम व जानशीने आला हज़रत बनादिया गया,जानशीन का अमामा बाँधा गया, और इबा पहनाई गई। यह दस्तार और इबा और तलबा की दस्तार व इबा अहले बनारस की तरफ़ से हुई।"

(माहनामा आला हज़रत बरेली स:32,दिसम्बर 1962ई 1382हिजरी)

तादादे मुरीदीन

फ़क़ीह–ए–इस्लाम अल्लामा मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी के मुरीदीन हिन्दुस्तान,पाकिस्तान,मदीना मुनव्वरा, मक्का मुअज़्ज़मा बंगला देश,मुरिशश सिरीलंका, यूके, हाइलैन्ड,जुनूबी अफ़रीक़ा, अमरीका जरमन, इंगलेन्ड, एराक़, ईरान,तुर्की,वग़ैरा ममालिक में लाखों की तअदाद में फ़ैले हुये हैं। मुरीदीन में बड़े बड़े उलमा, मशाइख़, सुलहा,शोअरा, मुफ़क्किरीन, क़ाइदीन, मुसन्नफ़ीन, रिसर्च इस्कालर, प्रोफिसर, डाक्टर और मुहक़्क़ीन हैं जो आप की गुलामी पर फ़ख्र करते है।

मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरेलवी कुद्दिसा सिर्रहु,ने

अपने सामने लोगों को आप के हाथ पर बैअ़त करने के लिंए हुक्म फ़रमाते,यहाँ तक ही नही। बल्कि मुफ़्ती आ़ज़म हिन्द कुद्दिसा सिर्रहु ने अपने सामने लोगों की कसीर तअ़दाद को ताजुश्शरीआ़ के हाथ पर बैअ़त करवाया,और बहुत से मक़ामात पर अपना जानशीन और क़ाइम मक़ाम बनाकर रवाना किया। मजमा के मजमा ने आप के दस्त मुबारक पर बैअ़त क़बूल की। सिलसिला क़ादरिया बरकातिया रज़विया की सब से ज्यादा इशाअ़त हुज़ूर मुफ़्ती आ़ज़म के बाद ताजुश्शरीआ़ ही कर रहे हैं। उन दो बुज़ुर्गों ने सिलसिला को वसीअ़ से वसीअ़ तर कर दिया है।

इशक़े रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम

बारगाहे इलाही से जानशीन मुफ़्ती–आ़जम को इश्क़े नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का वाफ़िर हि[illegible]ा अ़ता हुआ है, इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी ने इश्के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम में गुम हो कर "ह़दाइक़े बख़्शिश" का बेश बहा तोह़फ़ा क़ौम व मिल्लत को दिया। उन्हीं के ह़क़ीक़ी जानशीन ने इश्के रसूल से सरशार हो कर "सफ़ीना–ए–बख़्शिश" का वह तोह़फ़ा–ए–नायाब क़ौम को दिया जिसके हर शेअ़र से इशक़े रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम छलकता है, सफ़ीना–ए –बख़्शिश के अशआ़र पढ़िए और इशक़े रसूल में गुम हो जाइये। बसा औक़ात यह मुशाहिदा हुआ कि अपना कलाम जब पढ़ते हैं तो वारफ़तगी सी छा जाती है। आँखें आँसूओं में डबडबाने लगती हैं। और नअ़त शरीफ़ पढ़ते वक़्त एक

खास कैफ़ियत तारी हो जाती है।

शेअ़र व शाइरी और नमूना–ए–कलाम

जानशीने मुफ़्ती–ए–आज़म ने तीनों ज़बानों में शेअ़र व शाइरी में तबअ़ आजमाई की। उसकी यहाँ पर क़द्रे वज़ाहत की जाती है। आप को ज़माना–ए–तालिबइल्मी में ही शेअ़र व शाइरी का शग़फ़ हो गया था। मगर ज़्यादा रूजहान उसकी तरफ़ न था। इब्तिदाई में शाइरी की इस़लाह अपने असातिज़ा और वादिल माजिद से लेते रहे, ज़माना–ए–ताल्बइल्मी की नेअ़मतें,नज़्में "माहनामा आ़ला ह़ज़रत" में छपतीं रहीं। आस्ताना रज़विया पर मुन्अ़क़िद होने वाले "मुशाइरे" में भरपुर हि़स्सा लेते और आ़ला कामयाबी होती, ताजुश्शरीआ़ और आप के बरादर अक्बर की शाइरी का मवाज़ ना भी होता। सुनने वालों का कहना है कि हर दो शख़्स के कलाम में एक अ़लाह़ीदा ही चाशनी होती, आप को शेअ़रगोई का शौक ज़माना–ए–तालिब इल्मी से ही था। इन्नीस साल की उ़मर की एक नअ़त पाक के चन्द शेअ़र मुलाह़िज़ा हों।

इस तरफ़ भी एक नज़र महर दरख़्शान जमाल
हम भी रखते हैं बुहत मुद्दत से अरमान जमाल
इक इशारे से किया शक़ माहे ताबाँ आप ने
मरह़बा सद मरह़बा स़ल्ले आ़ला शाने जमाल
फ़र्श आँखों को बिछाओ रह गुज़र में आशिक़ों
हर तरफ़ देखेंगे ऐसे जलवा–ए–शान जमाल
मर के मिट्टी में मिले वह बा ख़ुदा बिलकुल ग़लत

मिस्ल साबिक़ अब भी हैं मरक़द में सुलत़ान जमाल
हासिदाने मुस्तफ़ा को दीजिए अख़तर जवाब
दर हक़ीक़त मुस्तफ़ा प्यारे हैं सुलत़ान जमाल

मार्च 1987 ई.1407 हिजरी को एक हादसा में चौट आ जाने के बाद जानशीन मुफ़्ती-ए-आज़म को कई रातें ठीक से नीन्द न आई। शब 10 मार्च 1987 ई को रात भर न सो सके, और उसी इज़्तिराब के आलम में उन्होंने मन्दर्जा नअ़त अक़दस कही।

चन्द अशआ़र दर्ज ज़ैल हैं :

तलातुम है यह कैसा आँसूओं का दीदा-ए-तर में
यह कैसी मौजें आई हैं तमन्ना के समन्दर में
तजस्सुस की करवटे क्यों ले रहा है क़ल्बे मुज़तर
मदीना सामने है बस अभी पहचान में दम भर में
न रखा मुझ को त़य्यबा की क़फ़स में इस सितम गिर ने
सितम कैसा हो बुलबुल पे यह क़ैद सितम गिर में
सितम से अपने मिट जाओगे तुम ख़ुद ऐ सितमगारो
सुन्नियों हम कह रहे हैं बे ख़तर दोते सितम गिर में
नबाते जलवा-ए-गाह नाज़ मेरे दीदा-ए-व दिल को
कभी रहते वह इस घर में कभी रहते वह उस घर में
मदीने से रहें ख़ुद दूर उस को रोकने वाले
मदीने में ख़ुद अख़्तर मदीना चशमे अख़तर में

जब जानशीने मुफ़्ती-ए-आज़म को गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत करे बग़ैर हिन्दुस्तान वापस भेजदिया गया तो हुकूमत सऊदिया के ज़ुल्म व़ बरबरियत से मुतास्सिर हो

कर यह नअ़त पाक कही, इस मौक़ा पर जब 17 फ़रवरी 1987 ई को झर या (बहार) के एक जलसा में एक शाइर ने उसी ज़मीन में एक नअ़त पढ़ी थी। आप ने बरजस्ता स्टेज पर ही सात शेअ़र कहे और बक़िया अशआ़र ट्रेन में कहे। चौदह अशआ़र में से चन्द मुलाहिज़ा हो।

दाग़े फुरक़त तैबा क़ल्ब मुफ़महल जाता
काश गुम्बद ख़ज़रा देखने को मिल जाता
मेरा दम निकल जाता उन के आस्ताने पर
उन के आस्ताने की खाक में मैं मिल जाता
मौत लेके आजाती ज़िन्दगी मदीने में
मौत से गले मिल कर ज़िन्दगी में मिल जाता
दिल पे जब किरन पड़ती उन के सब्ज़े गुम्बद की
उसकी सब्ज़े रंगत से बाग़ बनके खिल जाता
फ़ुरक़त मदीना ने वह दीए मुझे स़दमे
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता
दरपे दिल झुका होता इज़न पाके फिर बढ़ता
हर गुनाह याद आता दिल खजिल खजिल जाता
मेरे दिल में बस जाता जलवा--ए--ज़ार तैबा का
दाग़ फुरक़त तैबा फूल बन के खिल जाता
उनके दरपे अख़तर की ह़सरते हुई पूरी
साइल दर अक़दस कैसे मन्फ़ओ़ल जाता

मौलाना अ़ब्दुलह़मीद रज़वी अफ़रीक़ी हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म की नअ़ते पाक

तू शम्अ़े रिसालत है आ़लम तेरा परवाना

तू माहे नबुव्वत है ऐ जलवा–ए–जानाना

हुज़ूर मुफ़्ती आज़म की मज्लिस में पढ रहे थे, जब यह मक़तअ़ पढ़ा

आबाद उसे फ़रमा वीराँ है दिल नज्दी

जलवो तेरे बस जाये आबाद हो वीराना

तो हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म ने फ़रमाया कि बेह्म्देही तआ़ला फ़क़ीर का दिल तो रौशन है अब उसको यूँ पढो।

आबाद उसे फ़रमा वीरान है दिल नजदी जलवे तेरे बस जायें आबाद हो वीराना।

इस वक़्त जानशीने मुफ़्ती आ़जम इस मज्लिस में रौनक़ अफ़रोज़ थे,और फ़ौरन बर जस्ता हुज़ूर मुफ़्ती आ़जम के सामने अ़र्ज किया। हुज़ूर मक़तअ़ को इस त़रह़ पढ़ लिया जाये।

सरकार के जलवों से रौशन है दिल नूरी

ता हश्र रहे रौशन नूरी का यह काशाना

हुज़ूर मुफ़्ती आ़जम कुद्दिसा सिर्रुहु ने यह मक़ता बहुत पसन्द फ़रमाया और दाओं से नवाज़ा।

जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आज़म ने अ़रबी ज़बान में हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म के विसाल पर तारीख़ विसाल कही, चन्द शेअर मुलाहिज़ा हो।

ثوى المفتى العظام مخلد

بدارٍ فالكرام بها من دار

حوتٌ فى عقرها شمس الزمان

فامست من سنها مطلع الانوار

سماءِ الفضل بدر سمائنا
اياويه فينا كا سماء المدار
سماء ته غابت فاظلمت الدّجیٰ
فمن تبوقوف موفق المحتار
رحيلك شيخی ثلمة ایّ ثلمة
بذالدين جلّت عن الاطهار
سئلون اختر ارخر حلة سيدی
فقلت "عظيم الشان" ليتنا الدار

चन्द ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लामः

ताजुश्शरीआ के दस्ते मुक़द्दस पर मुशर्रफ़ बा इस्लाम होने वालों की एक इजमाली फिहरिस्त है,मगर यहाँ पर चन्द नो मुस्लिमीन का तज़करा मुनासिब मालूम होता है।

क़ौमे क़ब्ले इस्लाम ''रियावार'' नाम ''गुलाब'' बादहु,''मुस्लिम रज़वी'' यह रहने वाले जबलपुर भोटा ताल के हैं। बचपन के ज़माने में घर से निकल गये थे और साधूओं की जमाअ़त में रहते रहे जवानी का आलम उसी आ़लम में गुज़ारा, मुहम्मद मुस्लिम रज़वी के साथियों में एक साथी लड़का मुसलमान था। उसके हमराह बचपन के ज़माने में पढा करते थे, और मज़हबे इस्लाम की कुतुब तज़करा उसने किया था। साधूओं में रह कर जब सुकून नहीं पाया तो मज़हबे इस्लाम की किताबों का मुताअलअ़ करना शुरू किया।

दरयाफ़्त करने पर बताया कि मुझे उस में बहुत

सुकून मिला और मेरा दिल एक दम मुज़तरब हो गया,कि मज़हबे इस्लाम क़बूल कर लूँ, फ़ौरन बरेली शरीफ़ हाज़िर हुआ। यहाँ पर चान्द जैसे चेहरे वाले एक शख़्स को देखा। उनके बारे में मालूम किया कि यह कौन शख़्स हैं। लोगों ने बताया कि यह हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दिदसा सिर्रहु के जानशीन हैं। इस वजह से मेरा दिल और बे क़रार हुआ,मैंने अर्ज किया हुज़ूर आप के दस्त अक़दस पर इस्लाम क़बूल करना चाहता हूँ,फ़ौरन जानशीन मुफ़्ती –ए–आज़म ने कलमा तैयबा पढ़ाकर इस्लाम में दाख़िल किया, नीज़ सिलसिला क़ादरिया व रज़विया में बैअ़त भी फ़रमाया।

नो मुस्लिम जनाब मुहम्मद अहसन रज़वी(साबिक़ा) नाम मस्टर जार्ज स्टेफ़न जो मअ़ फेम्ली ईसाई से मुसलमान हुये हैं। मुहम्मद अहसन रज़वी कथोलिक चर्च नराइन गढ़ ज़िला अम्बाला (पंजाब) में एक मुबल्लिग़ स्पीकर और टीचर की हैसियत से काम करते थे। और उन्हें वहाँ काफ़ी मुराआ़त हासिल थीं,तब्लीग़ी व तहरीरी कामों के एलावा उन के ज़िम्मा बाइबिल का दर्स और कुरआन, बाइबिल का तक़ाबुली मुतालअ़ कराना, नीज़ इस्लाम मज़हब पर तन्क़ीद का काम भी सोंपा हुआ था। मुहम्मद अहसन रज़वी उर्दू ज़बान व अदब में काफ़ी दस्तर्स रखते हैं। फ़ारसी और अ़रबी से भी वाक़फ़ियत है। कुरआन मजीद बहुत अच्छी तरह से पढ़ते हैं और उन्हें कुरआन मुक़द्दस की बहुत सारी आयतें और सूरतें याद हैं। नीज़ उनकी मज़हबी मालूमात भी काफ़ी वसीअ़ हैं,और उन्हे इस बात पर फ़ख़्र है

और मुसर्रत भी,कि उन्होंने इस्लाम ग़ौर व फ़िक्र के बाद क़बूल किया है,और यह कि वह सहीह रास्ते पर आ गये हैं, और उन्होंने सच्चा मज़हब और दीने फ़ितरत क़बूल कर लिया है।

1986 ई. 1406 हिजरी में जानशीने मुफ़्ती–ए–आज़म के हाथों पर मुसलमान हुये, और उन्हीं से दाख़िल सिलसिला भी हुये,कुछ अय्याम तक जानशीन मुफ़्ती –ए–आज़म के दौलत कदा पर क़ियाम पज़ीर रहे और दीनयात रोज़ा,नमाज़,इस्लामी तौर तरीक़े सिखे, बरेली शरीफ़ का पता उन्हें फ़तावा रज़विया जिल्द ग्यारह से मालूम हुआ। बरेली आ कर उन्होंने यह भी बताया कि वह वहाबी,दैबन्दी और शीआ वग़ैरा मज़ाहिब का भी मुतालअ़ कर चुके हैं, और उन्हें बरेलवी मसलक ही सही मसलक मालूम हुआ। लिहाज़ा वह मुसलमान होने के लिए कई जगह से लौट फिर कर बरेली आये।

मुहम्मद अहसन रज़वी ने अपने मुसलमान होने के बारे में बताया कि तक़रीबन छः माह से बड़े ज़हनी करब में मुब्तला था और अक्सर सोचा करते थे कि जिस बाइबिल की वह तअलीम देते हैं यह असल इन्जील नहीं है, और इस बाइबिल में बावजूद तहरीफ़ व तरमीम के मुसलमानों के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आमद का तज़करा है उनके आख़री नबी और उनके रहमतुल्लिलआलमीन होने का ज़िक्र है, और ख़ुद हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम उन के बारे में फ़रमाते हैं कि मेरे बाद

वह आयेगा जो कमफूर टर (रह़मतुललिलअ़लमीन)होगा जिस का नाम आस्मानों में "अह़्मद" और ज़मीन में "मुह़म्मद" है, और वही निजात दा हिन्दा है, तो फिर ईसाई ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को क्यों नहीं मानते और उन पर ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को क्यों फौक़ियत देते हैं। और जब यह मकफूटर हैं यही रसूल अ़रबी आख़री नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हैं और ख़ुद ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम कुरब क़ियामत ज़मीन पर उतर कर उन्हें के दीन की पैरवी करेंगे, तो फिर दीन तो उन्हें मुह़म्मद अ़रबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का आख़री दीन और सच्चा दीन है। एलावा उसके यह इस बात पर भी ग़ोर व फ़िक्र किया करते थे कि अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदावन्द कुद्दूस के बेटे हैं तो फिर उनका बाप जो तमाम जहानों का मालिक है। इतना बे बस हो गया कि उसने अपने बेटे को मग़लूब करा दिया,और फिर अगर वह ख़ुदाबाप है तो वह वह़दहु ला शरीक कैसे है,और अब अपने बजाये ख़ुदा या अल्लाह के (मआ़जल्लाह)वह तो ख़ुद इन्सान हो गया,और यह नामुम्किन है लिहाज़ा ह़ज़रत मसीअ़ ख़ुदा के फ़रज़न्द नहीं,वह ख़ुदा के बन्दे और नबी व रसूल हैं।

मुह़म्मद अह़सन रज़वी दुनिया के तमाम मुमालिक के सियासी,समाजी निजाम पर भी ग़ौर करते थे कि क़ानून और हर उसूल लोगों ने ही वज़अ़ कर रखे हैं, लोग जो मुसलमानों के कुरआन और ह़दीस के उसूल हैं। फ़र्क़ यह

है कि उसे सही मअनों में इस्लामी तरीके से बरतते नहीं, और उस पर किसी ने कमयूनज़म की छाप लगा रखी है, किसी ने सोशलज़म की और किसी ने अपनी नज़रयाती थीयूरी का लेबील लगा रखा है। गोया नज़री तक़ाज़ों को जो मज़हब या जो उसूल पूरा करता है वह इस्लाम ही है, यह बात और है कि इस ज़माना के मुसलमान ख़ुद अपने उसूल से हट गये हैं। लेकिन उसके बा वजूद आज भी दीगरर क़ौमों के मुक़ाबिला में मुसलमानों में 25 फ़ीसद बुराई कम है।

मुहम्मद अहसन रज़वी ने यह भी बताया कि दुनिया के दीगर मज़ाहिब बुराई से बचने को ज़रूर मनअ करते हैं। लेकिन बुराई से बचाने का उनके यहाँ कोई नुस्ख़ा या एलाज नहीं है और अगर यह एलाज कहीं है तो सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम में,इन्हीं तमाम बातों को सोंच कर क़ुरआने मुक़द्दस के मुतालअ ने जो हर कौम और हर फ़र्द के लिए हिदायत है इसलिए यह मुसलमान हो गये, मुहम्मद अहसन रज़वी ख़ुदा का शुक्र अदा करते हैं कि बग़ैर किसी लालच या दुनियावी फ़ायदे के यह मुसलमान हुये हैं। और इस आलम में जबकि चर्च के बैंक में उनका बीस हज़ार रूपया जमा है,जिसे अब चर्च के ज़िम्मा दारान मुहम्मद अहसन रज़वी को देने से गुरेज़ कर रहे हैं और उन्हें तरह तरह के लालच दे रहे हैं। लेकिन उनके पाये सिबात में लग़ज़िश नहीं आ रही है।

जनाब मुहम्मद अहसन रज़वी की अहलिया और दो

लड़के एक लड़की भी 1986 ई.को मुसलमान हुई। अहलिया का साबिक़ा नाम "सरीन्दार मसीह' था। अब नाम मरयम ख़ातून है। लड़कों के साबिक़ा नाम पैटर उ़मर 9 साल, और मूसिस उ़मर 4 1/2 साल, दोनों बच्चों का इस्लामी नाम महमूद हसन रज़वी,मुहम्मद हसन रज़वी और बच्ची का साबिक़ा नाम रोज़ीना उ़मर 6 साल,इस्लामी नाम "कनीज़ फ़ातमा" है। उनकी ख़ुश नसीबी है कि जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म के हाथ पर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुये और दाख़िल सिलसिला भी फ़रमाया।

एक लड़की जो अहल हनूद से तअ़ल्लुक़ रखती थी जिसकी उ़मर तक़रीबन बीस या बाईस साल की थी। उस ने अज़ ख़ुद बरेली शरीफ़ आ कर 27 सफ़रुलमुज़फ़्फ़र बरोज़ जुमा 29 सितम्बर 1410 हिजरी 1989 ई को जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म के दस्त हक़ परस्त पर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुई। और जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने उसे दाख़िल सिलसिला भी फ़रमाया। मालूम करने पर उसने बताया कि मैं ख़ुद बख़ुद इस्लाम के पाकीज़ा मज़हब होने की वजह से इस्लाम लाई हूँ,किसी ने मुझे बहकाया नहीं है। क़ब्ल इस्लाम उसका नाम "अ़स्ते"था,जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने उसका नाम कनीज़ फ़ातमा रखा।

राये बरेली का रहने वाला शादी शुदा गवाला उसने जमादुलअव्वल 1409 हिजरी 1989 ई. को जानशीन मुफ़्ती–ए– आ़ज़म के हाथ पर शर्फ़ इस्लाम से मुशर्रफ़ हुआ। उसने इस्लाम लाने का सबब यह बताया कि उसके

बाप का इन्तिक़ाल हो गया था। और उसके धरम में यह है कि जो सब से छोटा बेटा होगा या सब से बड़ा बेटा होगा वह अपने बाप की लअ़श को जलायेगा, और यह भी है कि अपने बाप की लॅअश पर बांस से मारेगा। उस लड़के ने एक बांस सर पर मारा और ख़्याल किया कि यह मेरा मज़हब ग़लत है, और मुसलमानों का मज़हब सही है और उसने रात को ख़्वाब में देखा कि हम एक बड़ी मस्जिद में बेठै हैं और उस मस्जिद में एक ज़ईफ़ हसीन ख़ुबसूरत चेहरे वाले तशरीफ़ फ़रमा हैं,और वह यह कह रहे हैं कि बेटा कलमा पढ़, मैंने कलमा पढ़ लिया। वह जब बरेली आया तो उस ने जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म को देखा, फ़ौरन चीख़ पड़ा कि अपने मालिक की क़स्म फ़लाँ मस्जिद में मैं ख़्वाब में उन्हें बुज़ुर्ग को देखा था, और उन्होंने ही मुझे कलमा पढ़ाया था। वह लड़का फ़ौरन जानशीन मुफ़्ती –ए–आज़म के दस्त पाक पर कलमा शरीफ़ पढ़ लेता है और दाख़िले सिलसिला हो जाता है। उसका नाम जानशीने मुफ़्ती–ए–आज़म ने "अ़ब्दुल्लाह" रखा।

एक सिख फ़रीदपुर ज़िला बरेली शरीफ़ का रहने वाला था। उसने जुलाई 1989 ई./1410 हिजरी जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म के हाथ पर शर्फ़ इस्लाम क़बूल किया। उसने अपने इस्लाम क़बूल करने की वजह बताई कि दीने इस्लाम एक पाकीज़ा दीन है, जिस में मसावात व उख़वत का दर्स दिया जाता है। जब मैंने अपने धर्म और मज़हब इस्लाम का तक़ाबुली जाइज़ा लिया तो मुझे मज़हब इस्लाम

नफ़ीस और पसन्दीदा लगा और मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गया। जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने दाख़िल सिलसिला फ़रमा कर उसका नाम "मुहम्मद मुस्लिम" रखा।

इन मज़कूरा लोगों के अलावा सैकड़ों ग़ैर मुस्लिमों ने हज़रत के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। रज़ा एकेडमी मुम्बई के ज़ेरे एहतिमाम सद साला जशन हुज़ूर मुफ़्त आज़म में आप मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ थे,तीन ग़ैर मुस्लिम रास्ता से निकलते हुये जा रहे थे,जब उनकी नज़र आप के चेहरा–ए– अनवर पर पड़ी,वह लोग इतना मुतास्सिर हुये कि मिम्बर पर आकर इस्लाम कबूल किया। हज़ारों के मजमअ ने उन नोनहालाने इस्लाम का पर तपाकइस्तिक़बाल किया। बिल्कुल ऐसा ही वाक़िआ अजमीर शरीफ़ में 1999ई को हुआ। जिस का राक़िम ऐनी शाहिद है। राक़िमुस्सुतूर हज़रत के हमराह आस्ताना–ए–ख़्वाजा पर हाज़री की शरफ़ियाबी के बाद रेलवे जंकशन बज़रीआ आटो पहुँचे,आटो रिक्शा से उतरते ही एक शख़्स हज़रत के क़दमों में गिरपड़ा, मैं वक़्ती तौर पर ज़रा धबराया कि आख़िर यह कौन शख़्स है। मगर बाद में पूछने पर कहने लगा कि मैं अपनी आँखों से देवता को देख रहा हूँ। (मआज़ल्लाह) मैंने इस को मना किया। कुछ देर तक टकटकी बांधे देखता रहा फिर बोला कि मुझे मुसलमान कर लिजीए। हज़रत ने वहीं क़रीब ही स्टेशन पर दाख़िल इस्लाम कराया। सुबह़नल्लाह

तब्लीग़ी व तअ़लीमी इदारों की सर परस्ती

हिन्दुस्तान से बाहर बहुत से ममालिक में दरजनों तब्लीग़ी और तअ़लीमी इदारे जानशीन मुफ़्ती–ए–आ़ज़म की सर परस्ती में रात व दिन मसरूफ़ अ़मल हैं। हिन्दुस्तान में जिन इदारों की सर परस्ती जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म करते हैं उसकी एक तवील फिहरिस्त है। जिस में से चन्द मन्दरजा ज़ैल हैं :

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर कसगिरान सौदागिरान

1– मरकज़ी दारूलइफ़ता सौदागिरान बरेली शरीफ़

2– जामिआ़तुर रज़ा मथुरापुर बरेली शरीफ

3– अख़तर रज़ा लाइबरीरी सद्र बाज़ार छाऊनी लाहूर (पाकिस्तान)

4– मरकज़ी दारूल इफ़्ता डैनहाग हालैन्ड,

5– जामिआ मदीनतुलइस्लाम डैनहाग हालैन्ड

6– अलजामिअ़तुलइस्लामिया गंजक़दीम, रामपुर

7– अलजामिअतुलनूरिया ऐनी कैसर गंज ज़िला बहराइज

8– अलजामिअतुर्रज़विया व माहनामा नूर मुस्तफ़ा मुग़लपुरा पटना (बिहार)

मदरसा अ़रबिया ग़ौसिया ह़बीबया पुर, एम–पी–

मदरसा अहले सुन्नत गुलशन रज़ा बकारोस्टील धनबाद, बिहार

11– मदरसा ग़ौसिया जशने रज़ा पैटलाद गुजरात

12– दारूलउ़लूम क़ुरैशा रज़विया आसाम

13– मदरसा रज़ाउलउ़लूम घोगारी मह़ल्ला बम्बई

14– मदरसा तन्ज़ीमुलमुस्लिमीन बाइसी पुरनिया, बिहार

15– माहनामा सुन्नी दुनिया व मकतबा सुन्नी दुनिया बरेली शरीफ़

16–अलइंडिया जमाअ़ते रज़ा–ए–मुस्तफ़ा बरेलीशरीफ़

17–अलअन्सार ट्रेस्ट,मिल्की पुर बनारस

18–अलजामिआतुलइस्लामिया,गंजे क़दीम रामपुर

19--मदरसा फ़ज़ रज़ा कोलमबो,स्रीलंका

20–सुन्नी रज़वी जामेअ़ मस्जिद,नियू जरसी,अमरीका

21–इस्लामि रिसर्च सेन्टर,कसगिरान बरेली शरीफ़

22–जामिआ अम्जदिया,नागपुर

23–दारुलउ़लूम हन्फ़िया ज़ियाउलकुरआन लखनऊ

नीज़ आल इन्डिया सुन्नी जमीअ़तुलउ़लमा बम्बई का सदर 1970 ई. में बनाया गया,और इब्तिदा से ता दम तह़रीर मशहूर व मअ़रूफ़ इशाअती इदारा रज़ा एकडमी बम्बई की सर परस्ती भी कर रहे हैं।

हज़रत अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी की तह़रीक पर 22/जुलाई 1985 ई. 1405 हिजरी को अशरफ़िया मिस्बाहुउलउ़लूम मुबारकपुर ज़िला आज़म गढ़ में अकाबिरे अहलेसुन्नत का दीनी व इ़ल्मी इज्तिमा हुआ। इफ़्तिताई तक़रीर अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी की हुई काफ़ी देत तक बह़स व तमह़ीद के बाद जानशीने मुफ़्ती–ए– आ़ज़म की क़ियादत में सारे मुल्क से फ़िक़ही मसाइल और उ़लूम शरीआ़ में रसूख़ रखने वाले मुफ़्तियाने किराम पर मुश्तमिल''शरई बोर्ड की तशकील अ़मल में लाई गई,और जानशीन मुफ़्ति–ए–आ़ज़म को उसका सदर

मुन्तख़ब किया गया।

दिस्मबर 1986 ई/1406 हिजरी को मुस्लिम परसनल्ला ला कोन्सल की इदारा–ए–शरीआ उत्तप्रेदेश राये बरेली में तशकील हुई। आप को बहसियत सद्र मुफ़्ती पेश किया गया। मरकजुद्दुरासातुलइस्लामिया जामेअ़तुर्ज़ा बरेली के ज़ेरे एहतिमाम चलने वाली शरई कोनसल आफ़ इंडिया,और इमाम अह़मद रज़ा ट्रेस्ट के आप सद्रर नशीन हैं।

हिजाज़ कान्फ़रन्स लन्दन

वर्लड इस्लामिल मिशन लन्दन के ज़ेरे एहतिमाम होने वाली हिजाज़ कान्फ़रन्स में जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म और अ़ल्लमा अरशदुलक़ादरी शिरकत के लिए 21 अप्रील 1985 ई. 1405 हिजरी को बज़रीआ त़य्यरा लन्दन तशरीफ़ ले गये। 5 मई को कान्फ़रन्स का इन्अ़ेकाद हुआ,और उसमें जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने ख़िताब भी फरमाया तक़रीर बी बी सी लन्दन से नशर हुई। हिजाज़ कान्फ़रन्स में शिरकत के बाद उ़मरा के लिए हरमैन शरीफ़ैन तशरीफ़ ले गये, और वापसी एकुम जून 1985 ई. 140ई हिजरी को बरेली शरीफ़ हुई। याद रहे कि हिजाज़ कान्फ़रन्स की सदारत आप ही ने फ़रमाई थी।इस कांफ्रेस की अहमियत इस लिए है कि यह बैनल अक़वामी कांफ्रेस थी जिस में पुरी दुनिया के काइदीन ने शिरकत की और दर पेश मसाइल पर खुल कर बह़स हुई और ह़ल के लिए लाइह़ा अमल तैयार किया गया।

हमदर्द सुन्नियत,नाशिर मसलक आला ह़ज़रत,आली

मरतबत मौलाना मुहम्मद सईद नूरी सिक्रेट्री रज़ा एकडमी बम्बई की तहरीक पर 25 सफ़रूलमुज़फ़्फ़र 1410 हिजरी 1989 ई. को रज़ा एकडमी के ज़ेरे एहतिमाम रैहाने मिल्लत मौलाना रैहान रज़ा क़ादरी बरेलवी के दौलत कदा पर हिन्दुस्तान के माया नाज़ उलमा व मशाइख़ और सहाफ़ियों की मौजूदगी में इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी कुद्दिसा सिर्रूहु की क़ाइम करदा जमाअत रज़ा–ए–मुस्तफ़ा की तशकील नो हुई। उसके सदर के तौरपर हज़रत मौलाना तौसीफ़ रज़ा बरेलवी का नाम पेश हुआ और सरपरस्ती ताजुश्शरीआ के सुपुर्द की गई। उसमें तजावीज़ भी पास की गई और एक तजवीज़ यह थी कि तमाम हम मसलक इशाअती तब्लीग़ी इदारों का बाहम राबता और वह सारे रवाबित जमाअत रज़ा–ए–मुस्तफ़ा के तहत हों।

रज़ा एकडमी ने उस काम में एक अहम रोल अदा किया है, और रवाबित के सिलसिला में कोशाँ है। रबीउलअव्वल 1410 हिजरी में एक तहरीक चलाई कि मुन्तशिर जमाअतें एक सु हो कर काम करें ताकि इज्तिमाइयत और बढ़ती जाये। उसमें भी कामयाबी हासिल हुई।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दिसा सिर्रूहु की सरपरस्ती में "रज़वी दारूलउलूम मज़हरे इस्लाम" के नाम से मस्जिद स्टेशन बरेली में एक मदरसा क़ाइम किया गया। जिसकी एक मज्लिस आमिला तशकील दी गई और साथ ही साथ एक तवील इत्तिहादी मुआहिदा भी तै हुआ। यह बात याद रहे कि उससे कब्ल मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दिसा सिर्रूहु ने तहरीरी सूरत में ताजुश्शरीआ को "मज़हरे इस्लाम" का सदर बना चुके थे। उस में 8, मुआहिदे हैं और पांचवी मुआहिदे में

मुफ़्ती आज़म कुद्दिसा सिर्रूहु की तहरीर की तौसीक़ की गई है, मन व अ़न मुलाहिज़ा हो।

"रज़वी दारूलउ़लूम मज़हरइस्लाम सिटी बरेली शरीफ़ का दस्तूर व निज़ाम ह़ज़रत मुफ़्ती–ए–आज़म की तह़रीरात व ख़्वाहिशात के मुताबिक़ होगा। और ख़ान्दानी दस्तूरी कमेटी वह होगी जो मुआहिदे के साथ मुन्सलिक है। क्योंकि ह़ज़रत (मुफ़्ती– ए–आज़म) की तह़रीर के मुताबिक़ मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ साह़िब दारूलउ़लूम हज़ा के स़दर हैं।"

रज़वी दारूलउ़लूम मज़हरे इस्लाम बरेली के सरपरस्त मौलाना रैहान रज़ा रह़मानी बरेलवी मुन्तख़ब हुये और स़दर व मुतवल्ली ताजुश्शरीआ़ को बनाया गया,नाइब स़दर अमीन शरीअ़त मौलाना सिब्तैन रजा, मौलाना ख़ालिद अ़ली ख़ाँ, नाज़िम आ़ला मौलाना मन्नान रज़ा,नाइब नाज़िम जनाब अन्जुम रजा,मुहासिब स़दरूल उ़लमा अ़ल्लमा तह़सीन रज़ा,खाज़िन अ़ब्दुलह़बीब उ़र्फ़ अन्नू भाई,निगराँ मौलाना क़मर रज़ा ख़ाँ और मज्लिसे आ़मिला के मिम्बरान में ख़ास़ तौर से मौलाना मुह़म्मद तौसीफ़ रज़ा क़ादरी क़ाबिले ज़िक्र हैं।

तस़ानीफ़ व तराजुम

फ़क़ीहे इस्लाम मुफ़्ती मुह़म्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी बरेलवी ने अपनी दीगर मसरूफ़ियात के बावजूद तस्नीफ़ व तालीफ़ का सिलसिला जारी रखा। कसीर तअ़दाद में प्रोग्रिरामों और तब्लीगी असफ़ार की वजह से यह काम कम हो पाता है। मगर ह़ज़रत की आ़दते मुबारका है कि सफ़र व हज़र में मज़ामीन,फ़तावा,तस्नीफ़,व तालीफ़ की मसरूफ़ियात में इन्हेमाक में कमी नहीं आने दी है। ह़ज़रत

का मामूल है कि रोज़ाना सुबह व शाम अ़रबी इबारात का तर्जमा उर्दू ज़बान में और उर्दू ज़बान का तर्जमा अ़रबी में मरकज़ीदारु लइफ़ता के मुफ़्तियाने किराम या जामिअ़ातुर्रज़ा के आसातिज़ा को इमला करा देते हैं।

फ़तावा जो दरूलइफ़्ता में मुफ़्तियाने किराम ह़ल नहीं कर पाते हैं, उनको जमा कर दिया जाता है और जब बाहर तब्लीग़ी दौरे पर तशरीफ़ ले जाते, तो वह मसाइल साथ होते.ट्रेन वग़ैरा में सवालात के जवाबात क़लम बन्द करते। आज ताजुश्शरीअ़ा दुनिया-ए-इस्लाम के लिए मरजा -ए-उलमा व फ़ुक़हा बने हुये हैं। आप की मन्दर्जा ज़ैल तसानीफ़ व तराजुम क़ाबिले ज़िक्र हैं।

मत़बूआ़त

1- अलह़क़्कुल मुबीन (अ़रबी)

2- दफ़ाअ कन्ज़ुल ईमान (ह़िस्सा अव्वल)

3- टी-वी-और वीडलो का आप्रेशन

4- मिरातुन्नजदिया बजवाबुलबरेलविया, जिल्द अव्वल (अ़रबी)

5- तस्वीरों का शरई हुक्म

6- शरह़ ह़दीस नियत

7- शरह़ ह़दीसुलअख़लास़

8-ह़ज़रत इब्राहीम के वालिद तारिख़ या अज़्र (अ़रीब व उर्दू)

9- दिफ़ाअ़ कन्ज़ुलईमान (किताबचा उर्दू)

10- एक अहम फ़तवा(उर्दू)

11-तक़दीमःतजाल्लयुस्सलम मुसन्निफ़ा इमाम

अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी)

12–तीन त़लाक़ों का शरई हुक्म (उर्दू)

13–आसार–ए–क़ियामत (उर्दू)

14–हिजरते रसूल

15–अलक़ौलुलफ़ाइक़ लिहुक्मिलइक़तिदाइलफ़ासिक़

16–बरकातुलइमदाद(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी)

17–ह़ाशियातुलबुख़ारी(अ़रबी बुख़ारी शरीफ़ पर ह़ाशिया)

18–तयस्सिरुलमाऊन(मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अ़रबी)

19–शमुलुलइस्लाम (मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अ़रबी)

20–अलअ़ताउलक़दीर(मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अ़रबी)

21–क़सीदातान राइअ़तान(मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी तर्जमा अ़रबी उर्दू से)

22–अलमोअ़तक़दुल मुस्तनद (मुसन्निफ़ा अ़ल्लामा फ़ज़ले रसूल बदायूनी अ़रबी से उर्दू)

23–फ़क़िहे शहिन्शा(मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी, तर्जमा उर्दू से अ़रबी)

24–अहलाक़ुलवहाबीन(मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अ़रबी)

25–अलहादीयुलकाफ़(मुसन्निफ़ा इमाम अह़मद रज़ा बरे़लवी, तर्जमा उर्दू से अ़रबी)

26–नमूज़ज ह़ाशियतुलअज़हरी (अ़रबी)

ग़ैर मतबूआत

27– मरातुन्नजदिया बेजवाबिलबरेलविया(जिल्द दौम)अ़रबी

28– हाशिया अ़सीदतुलश्शोहदा शरहुलक़सीदातुलबुरदा (अ़रबी)

29– अलहक़्क़ुलमुबीन (उर्दू)

30– दिफ़ाअ़ कन्ज़ुलईमान (हिस्सा दौम)

31– किया दीन की मुहिम पूरी हो चुकी(अहद जामिया अज़हर का मक़ाला)

32– तर्जमा अज़्ज़ुललुलअन्क़ा मिम बहरे सबक़ातिल अतक़ा (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी, अ़रबी)

33– अस्मा–ए–सूराए फ़ातिहा की वजह तस्मिया

34– जशने ईदमीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम (अहदे तालिबइल्मी मन्ज़र–ए–इस्लाम का मक़ाला)

35–मस्टर आरिफ़ संभली ने अक़ाइदे वहाबिया की ताईद में एक तफ़सीली गुमराह कुन मज़मून अख़बारात में शाइअ़ कराया,ताजुश्शरीआ़ ने इस मज़मून का मस्कत जवाब दिया और रद्दे बलीग़ फ़रमाया,हज़रत के इस मक़ाला को माहनामा आ़ला हज़रत बरेली ने दो क़िस्तों में शाइअ़ किया था।

36– आप ने दरमियान दर्स व तदरीस क़ुरआन शरीफ़ की तफ़सीर लिखने का आग़ाज़ किया, हर माह जिन आयात की तफ़सीर तहरीर करते उस को माहनामा आ़ला हज़रत बरेली में शाइअ़ करा देते। तफ़सीर के लब व लहजे सलासत व रवानी और इफ़ादियत व अहमियत को देखते हुये जनाब उमीद रज़वी बरेलवी एडीटर माहनामा आ़ला

हज़रत बरेली ने" ज़ियाउलकुरआन"के उनवान से एक कालम मख़्सूस कर दिया था, आप की लिखी हुई तफ़सीर मज़कूरा उनवान से मुसलसल क़िस्त वार शाई हुई। आप ने जब माहनामा सुन्नी दुनिया बरेली के निकालने की इजाज़त हुकूमत हिन्द से तलब की तो इब्तिदाई दौर में आप ने"तफ़सीर सूराए फ़ातिहा"के उनवान से पाँच क़िस्तों में सूरए फातिहा की शानदार तफ़सीर तहरीर फ़रमाई, जो माहनाम सुन्नी दुनिया बरेली में शई हुई। मज़कूरा इल्मी ज़ख़ाइर को तलाश व जिस्तजू के बाद जमा कर के मनज़र–ए–आम पर लाना बहुत मुफ़ीद होगा।

तक़ारीज़ व तास्सुरात :

1– दुआइया कलमात बरसामाने बख़्शिश,अज़ हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म मौलाना अश्शाह मुस्तफा रज़ा नूरी बरेलवी कुद्दिसा सिर्रुहु

2– दुआइया कलमात बर जमाल–ए–मुस्तफा हमारा मेगज़ीन,मिनजानिब तलबा मज्लिस रज़ा अलजामियातुल इस्लामिया गंज क़दीर रामपुर

3– तक़रीज़ बर मुजद्दिदे इस्लाम बरेलवीःअज़ मौलाना साबिरुलक़ादरी नसीम बस्तवी

4– तक़रीज़ बर शरह मस्नवी रद्दे इम्सालियाःअज़ क़ारी गुलाम मुहीयुद्दीन ख़तीब हलदवानी रहमतुल्लाहि अलैहि

5–तक़रीज़ बर मुरशिद बर हक़ अज़ हाफ़िज़ इफ़्तिख़ार वली ख़ाँ रज़वी पीलीभीत

6– तक़रीज़–ए–बर तजल्लियात इमाम अहमद रज़ा :

कारी अलहाज मुहम्मद अमानत रसूल नूरी पीली भीती।

7– तक़रीज़ बर तज़करा मशाइख़ क़ादरिया रज़विया : अज़ मौलाना अ़ब्दुल मुज्तबा रज़वी सुनदरपूरी मरहूम,मुदर्रिस मदर्रसा मजीदिया बनारस

8– तक़रीज़ बर आला हज़रत की बारगाह में अन्सारियों का मक़ाम अज़ क़ारी मुहम्मद अमानत रसूल पीलीभीत

9– तक़रीज़ बर पन्द्रवी सदी हिजरी के मुजद्दिद अज़ कारी अमानत रसूल नूरी

10– तक़रीज़ बर मकाशिफ़तुत्तजवीद अज़ क़ारी अबूलहम्माद हामिद अ़ली रज़वी शाहपूरी शैखुत्तजवीद वल क़रअत मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली

11– तक़रीज़ बर मुफ्ती–ए–आज़म और उन के ख़लफ़ा : अज़ मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी बहराईची सुम्मा् बरेलवी (राकिमुस्सुतूर)

12– तक़रीज़ बर मौलाना रज़ा अ़ली ख़ाँ बरेलवी और जंगे आजादी अज़ मुहम्मद शहाबुददीन रज़वी बहराईची, सुम्मा् बरेलवी

मशाहीर तलामिज़ा :

जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आज़म की तदरीसी ज़िन्दगी में बे शुमार तलबा ने इक्तिसाब फ़ैज किया, तलामिज़ा की तादाद दारूलउ़लूम मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली के रजिस्टर तलबा से हासिल की जा सकती है। ता हम चन्द तलामिज़ा यह हैं।

1– हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अ़ली रज़वी, मुहद्दिस अलजामिअ़तुल इस्लामिया रामपुर

2– अ़ल्लामा मौलाना अनवर अ़ली रज़वी बहराईची, शैख़ुलअदब दारूलउ़लूम मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली

3– मुफ़्ती नाज़िम अ़ली रज़वी बाराबंकी,मरकज़ी दारुलइफ़ता बरेली शरीफ़

4– मौलाना कमाल अह़मद रज़वी नानपारा,ज़िला बहराईज

5– मौलाना जमील अह़मद खाँ नूरी बस्तवी उस्ताज़, मुस्लिम यूनीवरसिटी अ़ली गढ़

6– मौलाना मजफ़्फ़र हुसैन रज़वी कटीहारी साबिक़ मुदर्रिस जामिआ नूरिया रज़विया बरेली

7– मौलाना साह़बज़ादा अ़स्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी इब्न ताजुश्शरीआ मद्दज़ुल्लाहू

8– मुफ़्ती उबैदुर्रह़मान रज़वी,मुदर्रिस व मुफ़्ती दारुलउ़लूम मज़हर–ए–इस्लाम बरेली

9– मौलाना वसी अह़मद रज़वी,ख़ती़ब बर मंगघम

10– मौलाना सलीमुद्दीन रज़वी,समनपुर(बिहार)

11– मौलाना शब्बिरुद्दीन रज़वी,मदर्रिस मदर्रसा मह़मदिया संगराकछ मग़रिबी दीनाजपुर,बंगाल

12– मौलाना मुजीबुर्रह़मान रज़वी,मदर्रसा बाहारे इस्लाम बज्जो कटीहार (बिहार)

13– मौलाना सज्जाद आ़लम रज़वी,समनपुरी,(बिहार)

14– मौलाना शर्फ़ आलम रज़वी सीतामढ़ी,बिहार

15-- मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान रज़वी,ललवारा ज़िला रामपुर

16– मौलाना शैख़ शाह अलह़मीदुलबाक़वी,मुबल्लिग़ मरकजुस्सक़ाफ़तुस्सुिन्निया काली कट(केरेला)

17– मौलाना मुहम्मद कौसर अ़ली रज़वी इब्न मुह़म्मद नूरुलहुदा, मरकज़ी दारुलइफ़्ता बरेली

18– मुफ़्ती मुशर्रफ़ हुसैन बदाँयूनी उस्ताज़ दारुलउ़लूम मज़्हर–ए–इस्लाम बरेली

19– मुह़म्मद शहाबुद्दीन रज़वी बहराईची सुम्मा बरेलवी (राक़िमुस्सुतूर)

हिन्दुस्तान के ख़ुलफ़ा

ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ के ख़ुलफ़ा की तादाद बहुत तवील है ता हम जिन ह़ज़रात का नाम रजिस्टर में इन्दराज है उन के असमा ज़ैल में दर्ज किए जा रहे हैं। अगर किसी का नाम ज़ाब्त तहरीर से रह गया हो तो वह राक़िमुस्सुतूर को मुत्तलअ़ कर सकते हैं।

मुह़क़्क़िक़ अ़स्र ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद शाहिद अ़ली रज़वी, नाज़िम आला व शैख़ुल ह़दीस अलजामिअ़तुल इस्लामिया रामपुर(क़ाज़ी शरह़ व मुफ़्ती (ज़िला रामपुर)

फ़ज़ीलतुश्शैख़ ह़जरत अ़ल्लामा शैख़ अबूबक्र अह़मद मुस्लियार,सिक्रेट्री मरकज़ुस्सक़ाफ़हुस्सुन्निया,काली कट (कीराला)

मुफ़्ती अनवर अ़ली रज़वी,सद्र आलकरनाटक उ़लमा बोर्ड,बेंगलौर(कर्नाटक)

मौलाना असग़र अ़ली रज़वी,इमाम व ख़तीब जामेअ़ मस्जिद रामनगरम,(करनाटक)

मुनाज़िर–ए–अहले सुन्नत मौलाना सग़ीर अह़मद जौखनपुरी मोहतमिम अलजामिअतुल क़ादरिया रिछा ज़िला बरेली

मौलाना मुह़म्मद हुसैन सिद्दीक़ी अबुलहक़्क़ानी,

शैख़ुलहदीस दारुलउ़लूम फ़ैज़ुलगुर्रबाआरा(आरा)

क़ारी अबुमुह़ामिद ह़ामिद अ़ली शाहपूरी, शैख़ुत्तजवीद दारुलउ़लूम मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली

ह़ज़रत हाफ़िज़ शाह लईक़ अह़मद ख़ाँ जमाली, सज्जादा नशीन आस्ताना–ए–जमालिया नक़्शबन्दिया मुजद्दिदिया रामपुर

मुफ़्ती उ़ज़ैर अह़सन रज़वी,शैख़ुलहदीस दारुलउ़लूम ग़ौसे आज़म पुरबन्दर,(गुजरात)

मौलाना अ़ली अह़मद सीवानी,ह़सन पुरा ज़िला सीवान (बिहार)

साह़ाबज़ादा मौलाना मुह़म्मद अ़स्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी स़द्र आल इन्डिया जमाअ़त–ए–रज़ा–ए–मुस्तफ़ा,सिक्रेट्री इमाम अह़मद रज़ा ट्रेस्ट,बरेली

मौलाना सूफ़ी मज़हर ह़सन क़ादरी बरकाती,मह़ल्ला नागिरान बदाँयू शरीफ़

मौलाना अ़ब्दुलमुस़्तफ़ा रौनक़,इमाम व ख़तीब जामेअ़ मस्जिद अम्बर नाथ(महाराश्टर)

मौलाना तत़्हीर अह़मद रज़वी,उस्ताज़ ज़ामिआ नूरिया रज़विया बाक़रगंज बरेली

क़ारी अ़लाउद्दीन अजमली,नाज़िम आ़ला मदर्सा खलीलुलउ़लूम संभल ज़िला मुरादाबद

मौलाना डाक्टर अ़ब्दुलजब्बार रज़वी,पलामो,बिहार

मौलाना मुह़म्मद अह़मद इब्न मुह़म्मद शफ़ीअ़, मोहतमिम दारुलउ़लूम रज़ा–ए–मुस्तफ़ा दमोह,एम–पी

मौलाना मुफ़्ती वली मुहम्मद रज़वी,इमाम व ख़तीब जामेअ़ मस्जिद व अमीर–ए–सुन्नी तब्लीग़ी जमाअ़त बा सुन्नी ज़िला नागोर,राजिस्थान

मौलाना मुहम्मद हनीफ़ रज़वी,शीरानीबाद ज़िला नागोर (राजिस्थान)

मौलाना हाजी अ़ली मुहम्मद खतरी,बानी दारुलउ़लूम ग़ौसे आज़म मैमुनवाड़ापुर, बन्दर,(गुजरात)

अदीब शहीर जनाब ज़ियाजालवी एडीटर माहनामा पास्बान इलाहाबाद

मौलाना मसरूर रह़मान रज़वी,पलखीरा ज़िला सीता मढ़ी

मौलाना सूफ़ी मुहम्मद उ़मरबानी,बिहारपुरा,धोराजी, गुजरात

हमदर्द क़ौमे मिल्लत मौलाना अहह़ाज मुहम्मद सईद नूरी,चैयरमैन रज़ा एकडमी मुम्मबई

मौलाना सूफ़ी लअल मुहम्मद सज्जादा नशीन,ख़ान्क़ाहे क़ादरिया,चमन शाह कथोरी,ज़िला बाराबंकी

मौलाना क़ारी दिलशाद अह़मद रज़वी,नाज़िम आ़ला मदरसा मदीनतुलउ़लूम,बनारस

डाक्टर हाफ़िज़ शफ़ीक़ अजमल इब्न अहह़ाज अ़ब्दुर्रब रज़वी,रेवड़ी तालाब,बनारस

मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा हबीबी,मदनपुरा बनारस

अलह़ाज हाफ़िज़ मुहम्मद शौएब रज़वी,काशाना–ए–नूरी सदानन्द बाज़ार,बनारस

मौलाना सय्यद अफ़रोज़ अहमद नूरी,निहाँ

बाग़,अह्मद नगर ज़िला गौरखपुर

अल्लामा मौलाना मुजीब अ़ली रज़वी,इमाम व ख़तीब मक्का मस्जिद ह़बीब नगर,हैदरबाद

आ़ल्लामा ग़ोलाम हुसैन,इमाम व ख़तबी जामेअ़ मस्जिद बकारो इस्टेल सिटी

मौलाना मुख़्तार अह़मद क़ादरी,नाज़िमे आ़ला बह़रुलउ़लूम,इस्लाम नगर बहेड़ी ज़िला बरेली

क़ारी हाफ़िज़ सय्यद ग़ोलाम सुब्ह़ानी इब्न अ़ल्लामा सय्यद ग़ुलाम जीलानी मेरेठी,संभल

मौलाना मुह़म्मद रज़ा क़ादरी,स़द्र मुदर्रिस ह़ामिदिया रह़मानिया पोखरिया ज़िला सीतामढ़ी

मौलाना जहानगीर ख़ाँ रज़वी,मोहतमिम मदरसा गुलशन रज़ा,बकारो ज़िला धंबाद

मौलाना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुलकादीर रज़वी,मोहतमिम दारुल उ़लूम ह़न्फ़िया रज़विया,कुलाबा बाजार मुम्मबई

मौलाना अ़ब्दुस्सतार रज़वी,इमाम व ख़तीब मस्जिद मौमनान तकिया आदम शाह जैपुर (राजिस्थान)

मौलाना ह़ाफ़िज़ तजम्मुल हुसैन,इमाम व ख़त़ीब सुन्नी जामेमस्जिद भसावल,(महाराश्टर)

मुफ़्ती ज़ुबैर आ़लम रज़वी,मौज़ा लिल्या पोस्ट करोबार ज़िला कटीहार

ह़ज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद ह़बीबी सज्जादा नशीन आस्ताना–ए–क़ादरिया ह़बीबिया,धाम नगर शरीफ़, उड़ीसा

मौलाना एह़तिराम अ़ली रज़वी,जैपुर,(राजिस्थान)

हज़रत मौलाना ज़हीर रज़ा मौज़ा तरसापटी,शाही ज़िला बरेली(शहादत3/अगस्त2007 ई.)

मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा बरकाती,सिलगिराम पुरा सूरत (गुजरात)

आली जनाब मौलवी साबिर रज़ा क़ादरी,छाऊनी कानपुर

मौलाना सय्यद रिज़वानुलहुदा,सज्जादा नशीन खानक़ाहे मुन्इमिया पन्ड शरीफ़ ज़िला मुंगीर,(बिहार)

मौलाना मुफ़्ती बशीरुलक़ादरी,मोहतमिल मदरसा आलिया क़ादरिया शमशीरनगर ज़िला धंबाद

मौलाना क़ादिर वली क़ादरी कारवान पैट ज़िला करनोल,(आंधपरदेश)

मौलाना ज़हूरुलइस्लाम,राज बस्ती,गुंजरिया बाज़ार ज़िला उत्तर दीनाजपुर,(बंगाल)

मौलाना मुहम्मद शाहजहाँ,कमालपुर,खटीया ज़िला बीरभूम,(बंगाल)

मौलाना चिराग़ अली,पैटर ज़िला बलरामपुर

मौलाना मुहम्मद गुलाम अनवर,रफ़ी गंज ज़िला औरंगबाद

मौलाना मुहम्मद ऐहतिशामुद्दीन,हुसैन चक ज़िला नवादा

मौलाना मुख़्तार अहमद,नारायनपुर,अनल झाड़ी, ज़िला उत्तरदीनाजपुर,(बंगाल)

मौलाना गुलाम मुहम्मद रज़वी,ताबरबाला पटन ज़िला बारा मौला,(कशमीर)

मौलाना मुहम्मद ख़ातिम रजा,मौज़ा मन्डा,दोधारी, ज़िला बांका

मौलाना मुहम्मद शाह ज़मा,मौज़ा बताम,दौला ज़िला किशनगंज

मौलाना मुनीर अहमद क़ादरी,हबेली,(कर्नाटक)

मौलाना रफ़ीक़ अहमद रजवी,हबली (कर्नाटक)

मौलाना मुजाहिदुलइस्लाम रज़वी,हबली कर्नाटक

मौलाना मुफ़्ती यूनुस रज़ा उयेसी,वाइसपरन्सिपल जामिअतुर्रज़ा मथरापुरा बरेली

मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी शहीद आलम रज़वी,दारुल इफ़्ता जामिआ नुरिया,बरेली

मौलाना सय्यद मसऊद अलीनूरी,रामनगर ज़िला नैनीताल,(उतराखन्ड)

अल्लामा मौलाना मुहम्मद अशरफ़ क़ादरी,ठाकुरदोवारा,ज़िला मुरादाबाद

मौलाना मुफ़्ती मुजफ्फ़र हुसैन रज़वी,सदर मुफ़्ती मरकज़ी दारुलइफ़्ता बरेली

मौलाना अहमद हुसैन रज़वी,वानगाँव,गोहरा ज़िला उत्तरदीनाजपुर,(बंगाल)

मौलाना मुहामिद रज़ा इब्न मुफ़्ती महबूब रज़ा,पोखरिया ज़िला सीतामढ़ी

मौलाना मुफ़्ती मेराजुलक़ादरी,उस्ताज़ अलजामिअतुल अशरफ़िया,मुबारकपुर,ज़िला आज़म गढ़

मौलाना मुबारक हुसैन मिस्बाही,एडीटर माहनामा अशरफ़िया,मुबारकपुर ज़िला आज़म गढ़

मौलाना मुहम्मद जमाल अनवर,मौज़ा कलपर ज़िला

जहानबाद (बिहार)

हाफ़िज़ सय्यद ज़ाहिद अ़ली हाशमी,मौज़ा बंकागाँव ज़िला लखीमपुर खीरी

मौलाना मुहम्मद शाहिद रज़ा,मौज़ा मालीनी,कन्नौर ज़िला दरभंगा

मौलाना मुहम्मद जमील अख़तर मौज़ा उखली, भालोबाद ज़िला उत्तरदीनाजपुर,(बंगाल)

मौलाना शकील अहमद इब्न रशीदुद्दीन,कटीहार, बिहार

मौलाना मुहम्मद शमशाद आलम इब्न मुहम्मद तैमूर हुसैन,पुरनिया (बिहार)

मौलाना इरफ़ानुलहक़ इब्न मुहम्मद ज़िल्लुर्रहमान कम नौल ज़िला मधूबनी

मौलाना कलीमुद्दीन नूरी इब्न इब्राहीम खसलोडिया, ज़िला गिरेडिया,झाड़खन्ड

मौलाना मिन्हाजुद्दीन इब्न मुहम्मद फ़रीद आ़लम, मौज़ा फिरदोस बाग़ ज़िला बांका(बिहार)

मौलाना नसीरुद्दीन इब्न मुहम्मद सिद्दीक़ मौज़ा फ़तह ज़िला गरेडिया,झाड़खन्ड

मौलाना नूर आ़लम ख़ाँ मौज़ा पटनियाँ ज़िला दरभंगा,बिहार

हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अनवर अ़ली रज़वी,शैख़ुलअदब मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली

मौलाना हाफ़िज़ जाहिद रज़ा,शाहबाज़पुर,गजरोला ज़िला जैपीनगर (यूपी)

मौलाना क़ारी रईस अहमद ख़ाँ,मोहतमिम दारुलउ़लूम नूरुलहक़ चिर्रा मुहम्मदपुर,ज़िला फ़ैज़ाबाद

मौलाना कमाल अख़्तर,मदर्रिस दारुलउ़लूम नूरुलहक़ चिर्रापुर,ज़िला फ़ैज़ाबाद

मौलाना गुलाम हुसैन,दारुलउ़लूम नूरुलहक़ चिर्रा मुहम्मदपुर,ज़िला फ़ैज़ाबाद

मौलाना अब्दुलकुद्दूस,दारुलउ़लूम नूरुलहक़ चिर्रा मुहम्मदपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद

अलहाज सय्यद आ़बिद हुसैन इब्न सय्यद अ़ब्दुलुल्लाह क़ादरी,विकरोली,टाईगरनगर,मुम्बई

मौलवी मुहम्मद अ़ब्दुलवकील रज़वी,नाइब इमाम जामे मस्जिद मीरटा सिटी(राजिस्थान)

मौलाना क़ाज़ी मुहम्मद इकरम उस्मानी इब्न क़ाज़ी मुहम्मद क़ासिम उस्मानी,क़ाज़ी शहर मीरटास्टी,

हाफ़िज़ मुहम्मद अबूबक्र मुहम्मद हुसैन,बा सुन्नी ज़िला नागपुर,राजिस्थान

क़ारी फ़हीम अहमद ख़ाँ इब्न उ़ज़ैर यार ख़ाँ,वनेखन्ड लखनऊ

मौलाना अनीस आ़लम सीवानी,जामिअ़तुलकरा खदरा लखनऊ

मौलाना क़ाज़ी ख़तीब आ़लम इब्न क़ाज़ी अ़ब्दुस्सुबहान,मौज़ा पिन्डहाल ज़िला कटीहार (बिहार)

मौलाना नूरुलइस्लाम इब्न नसीरुद्दीन,मौज़ा सहजाना ज़िला कटीहार

मौलाना मुहम्मद आज़म अ़ली इब्न मुहम्मद रफ़ीक़,सिधारत नगर ज़िला कटीहार (बिहार)

मौलाना ग़ोलाम स़ादिक़ ख़ाँ ह़बीबी इब्न मुह़म्मद हाशिम,सिरावाँ ज़िला इलाहाबाद

मौलाना नाहीद रज़ा मुदर्रिस बरकातुलइस्लाम ताज गंज,आगरा

मौलाना अज़ीज़ुर्रह़मान रज़वी,इमाम व ख़तीब जामेअ मस्जिद,बरेली शरीफ

मौलाना मुईनुलह़क रज़वी ज़िला दरंग(आसाम)

मौलाना मुह़ीयुद्दीन अह़मद,ज़िला दरंग(आसाम)

मौलाना निज़ामुद्दीन नूरी,इमाम व ख़तीब ह़बीबिया मस्जिद सैलानी,बरेली

मौलाना क़ारी मुह़म्मद अफ़रोज़ुलक़ादरी,जामेआ क़ादरिया,चिरया कोर्ट,ज़िला मऊ

मौलाना अफ़ज़ाल रज़ा नूरी,मौज़ा गवाल ज़िला पुर्निया

मौलाना अलह़ाज मह़सिन मक्की,इब्न ह़ाजी वली अह़मद, सीगोड़ा,ज़िला भड़ोच,(गुजरात)

मौलाना मुह़म्मद रफीक़ रज़ा क़ादरी, मह़बूब नगर(आंधरा प्रदेश)

मौलाना ज़ुबैर आलम इब्न क़ाज़ी हसीन,मौज़ा बरआना गंज,ज़िला पुर्निया

मौलाना मुह़म्मद जमाल अनवर रज़वी इब्न मुह़म्मद शैरअली ख़ाँ,मौज़ा कलयर ज़िला जहानाबाद

मुफ़्ती अ़ब्दुलक़दीर क़ादरी,इमाम व ख़तीब जामे मस्जिद,वजैवाड़ा (आंधराप्रदेश)

मुफ़्ती मुमताज़ अह़मद नईमी,दारुलइफ़्ता जामिआ

नईमिया,मुरादाब

मुफ़्ती अख़तर हुसैन,मदर्रिस दारुलउ़लूम अ़लीमिया, जमदाशाही ज़िला बस्ती

आली जनाब मुहम्मद अफ़रोज़ रज़ा इब्न जनाब अ़ब्दुल ह़सीब मरहूम,बरेली

आ़ली जनाब सिराज रज़ा खाँ इब्न मौलाना इदरीस रज़ा ख़ाँ,बरेली

अ़ली जनाब रिज़वान रज़ा ख़ाँ इब्न ह़ज़रत अ़ल्लामा तह़सीन रज़ा ख़ाँ मुह़द्दिस बरेली

मौलाना अ़लाउद्दीन नूरी इब्न मुहम्मद सिद्दीक़ जमिलिया बाज़ार,ज़िला मधूबनी

मौलाना अस्लमुलक़ादरी इब्न मुह़म्मद यूसुफ़,मरग़िया चक,ज़िला सीतामढ़ी

मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शऐब रज़ा क़ादरी नईमी, सद्रइस्लामी,मरकज़ देहली

मौलाना मुफ्ती अशफ़ाक हुसैन क़ादरी सदर तन्ज़ीम उ़लमा –ए–इस्लाम, इमाम व ख़तीब क़ादरी मस्जिद शास्त्रीपार्क देहली

मुह़म्मद शहादबुद्दीन रज़वी (राक़िमुस्सुतूर)

ह़ज़रत ताजुश्शरीआ ने मौलाना मतीउ़र्रह़मान मुज़फ़्फ़र पूरी और मौलाना रफ़ीक़ अहमद मुहीश पुरी की सन्द इजाज़त व ख़िलाफ़त मन्सूख़ कर दी है। (मन्कूल अज़ रजिस्ट्रड)

पाकिस्तान के खुलफ़ा :

मुसन्निफ़ कुतुब कसीरा ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़कीम अख़तर शाहजहानपुरी,बानी मर्कज़ी मज्लिस इमामे आज़म लाहोर,

अलह़ाज मुह़म्मद ह़नीफ़ तय्यब रज़वी,साबिक़ मर्कज़ी वज़ीर तामीरात व मुशीर स़द्र पाकिस्ता

मौलाना अलह़ाज सय्यद शाहिद अ़ली नूरानी,इदारा मुआ़रिफ़ रज़ा अकरम रोड,लाहोर

जनाब अलह़ाज अ़ब्दुलह़मीद मक्की रज़वी,कराची

जनाब अलह़ाज जुबैर मक्की क़ादरी रज़वी,कराची

जनाब अलह़ाज ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद असलम रज़वी,कराची

मौलाना सय्यद मुह़म्मद कलीम रज़ा क़ादरी, नाज़िमाबाद कराची

मौलाना पीर सय्यद ज़ियाउलह़क़ जीलानी,अमरीकन कुवाटर,हैदराबाद,सिंध

डाक्टर इक़बाल अह़मद अख़तरुलक़ादरी,इदारा तह़क़ीक़ात इमाम अह़मद रज़ा कराची

मौलाना मुह़म्मद अस्लम रज़ा अ़तारी,ख़ैरआबाद गुलशने मुस्तफ़ा कराची

मौलाना मुह़म्मद ज़ाकिर हुसैन सिद्दीक़ी,मोहतमिम दारुलउ़लूम मुस्तफ़ा जामे मस्जिद,लतीफ़आबाद, हैदराबाद

मौलाना अ़ताउलमुस्तफ़ा इब्न अ़ल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा क़ादरी,मदर्रिस जामेआ अम्जदिया कराची

मौलाना अलहाज यूनुस खतरी,पी आई बी कालौनी,कचारी

जनाब अलहाज गुलाम उवैस कर्नी,सद्र इदारा मुआरिफ़े नोमानिया,लाहूर

मौलाना मुहम्मद फ़ैसल कादरी नक्शबन्दी,जमशीर रोड कराची

मौलाना मुहम्मद साकिब अखतर कादरी इब्न अशफ़ाक अहमद,नार्थ कराची

बंगलादेश के खुलफ़ा :

मौलाना डाक्टर सय्यद इरशाद बुख़ारी,डाइरेक्टर जामिआ इस्लामिया दीनाजपुर बंगलादेश

मौलाना सूफ़ी मुहम्मद अब्दुलस्लाम रज़वी,चमपक नगर पोस्ट हलीम नगर ज़िला कोमल्ला

मौलाना सय्यद मुहम्मद इब्राहीम कासिमुलकादरी, कनजनपुरदरबार शरीफ़ ज़िला सीतामढ़ी गोरगंज

मौलाना हाफ़िज़ शाह आलम नईमी इब्न सुलतान अहमद,चाटगाम

मौलाना सूफ़ी नज़ीर अहमद रज़वी कुमिल्लाह (बंगलादेश)

नेपाल के खुलफ़ा :

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद जैश बरकाती,शैखुलहदीस दारुलउलूम हन्फ़िया,जिंकपुरधाम

मौलाना मुहम्मद नजमुद्दीन कादरी इब्न मौलाना मुहम्मद हनीफ़ कादरी,बेदरेकड्डारा पोस्ट जलीशौर ज़िला मोहवत्तरी

अरब ममालिक के खुलफ़ा :

फ़ज़ीलतुश्शैख़ ह़ज़रत अ़ल्लाम मुह़म्मद उमर सलीमुलह़न्फ़ी मेहन्दी,इमाम,जामेअ़ मस्जिद इमामे आज़म, अलअज़मिया,बग़दाद शरीफ़,(एराक़)

अलह़ाज शैख़ मुह़म्मद यूसुफ़ अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ सुन्नी बोहरा,दबई (मुत्तहिदा अरब इमारात)

फ़ज़ीलतुश्शैख़ अ़ल्लामा कमाल यूसुफ़ुलह़ौत,डाइरेक्टर मख़तूतात इलतरासुलइस्लामी,लिबनान

मौलाना अलह़ाज मुह़म्मद आ़क़िब फ़रीद,अबूज़हबी,(मुत्तह़िदा अ़रब इमारात)

मौलाना शैख़ हस्सामुद्दीन,कराक़ीरा,लबनान

मौलाना शैख़ नबीलुश्शरीफ़,लबनान

मौलाना शैख़ क़ारी अलीमुद्दीन,लबनान

मौलाना शैख़ जमाल सफ़ीर,लबनान

फ़ज़ीलतुश्शैख़ अ़ल्लामा अ़ब्दुलक़ादिर फ़ाकहानी, सिक्रेट्री अलजमिअ़तुलमुशारेअतुलख़ैरिया लबनान

अश्शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान अ़म्माश,लबनान

अश्शैख़ ग़ानम हुलूल,लबनान

अश्शैख़ उसामहुसय्यद, लबनान

अश्शैख़ जमील ह़लीम लबनान

अश्शैख़ ख़ालिद ह़नीना,लबनान

अश्शैख़ अह़मद अलजलबी लबनान

अश्शैख़ बिलाल ह़लाक़ लबनान

अश्शैख़ यूसुफ़ दाऊद लबनान

अश्शैख़ यूसुफ़ अलमला लबनान

अश्शैख़ हस्साम रहबी,लबनान

अलउस्ताज़ अश्शैख़ मुहम्मद अलसर खुस,लबनान

अश्शैख़ सय्यद अत्तबता,लबनान

अश्शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ शरीफ़ लबनान

अलउस्ताज़ अश्शैख़ सलाह सईद लबनान

अश्शैखुलबराहीमुश्शार,लबनान

अश्शैख़ मुहम्मद शाफ़ेई,लबनान

अश्शैख़ रोवेद अ़म्माश,लबनान

अश्शैख़ सलीम उ़लवान लबनान

अश्शैख़ वलीद यूनुस,लबनान

अश्शैख़ मुहम्मद अयूबी,अददोरोमाद,लबनान

अश्शैख़ अद्दुकतूर अहमद तमीम,

अलउस्ताज़ अश्शैख मुहम्मद सईद अलहाज अ़ली,लबनान

अलउस्ताज़ शैख ज़हीर फीयूमी,लबनान

अलउस्ताज़ शैख़ अहमद महमूद लबनान

अश्शैख़ तारिक़ निजाम, लबनान

अलउस्ताज़ शैख़ तारिक़ गन्नाम लबनान

अश्शैख़ वलीद अलहंबली लबनान

अल्लामा अश्शैल मुहम्मद दाइल हंबली,शैखुलजामिया अलफ़त्हुलइस्लामी जामिआ बेलाल दमशक,(शाम)

फ़ज़ीलतुश्शैख़ मुहम्मद ईसा मानेअ़उहमीरी, वज़ीरुलऔक़ाफ़ हुकूमत मुत्तहिदा अ़रब इमारात

अलहाज जावेद ख़ालिद अलहिन्दी,जद्दा,(सऊदी अरब)

अलहाज मुहम्मद अशरफ़ औजी क़ादरी रज़वी,दुबई

(मुत्तहिदा अरब अमारात)

श्रीलंका के खुलफ़ा :

मौलाना क़ारी नूरुलहसन,नाज़िम आला मदर्रसा फ़ैज़ाने रज़ा,कौलमबो

जनाब अलहाज मुहम्मद इदरीस पटैल रज़वी,कौलमबो

जनाब अलहाज अ़ब्दुलगफ़्फ़ार हाजी बाबू रज़वी कोलमबू

अलहाज हाफ़िज़ मुहम्मद अहसान पटैल रज़वी कोलमबू

साऊथ अफरिका के खुलफ़ा :

मौलाना मुहम्मद शमीम अशरफ़ क़ादरी,इमाम,व ख़तीब लेडीज़ असमथ,(साऊथ अफरीक़ा)

जनाब अलहाज सय्यद इब्राहीम क़ादरी,डरबन,साऊथ अफरीक़ा

अमरिका के खुलफ़ा :

मौलाना मुफ़्ती कमरुलहसन क़ादरी ,सद्र नार्थ अमरीका हलाल कमेटी,अन्नूर मस्जिद,होस्टन

अलहाज डाक्टर मुहम्मद ख़ालिद रज़वी,शका गो

मौलाना सय्यद औलाद रसूल कुद्सी इब्न मुफ़्ती अ़ब्दुलकुद्दूस, केलोफोरनिया

मौलाना डाक्टर ग़ुलाम ज़रक़ानी इब्न अल्लामा अरशदुलक़ादरी,इमाम,ख़तीब मक्का मस्जिद,डीलीकस

मौलाना मुहम्मद उस्मान क़ादरी (साबिक़ मिम्बर पारलेमेन्ट पाकिस्तान) वरजीनिया

दीगर ममालिक के खुलफ़ा :

अलहाज आसिफ़ मुहम्मद पटैल रज़वी,लैलानंग वे, मलावी

मौलाना मुहम्मद आरिफ़ बरकाती,इमाम व ख़तीब जामेअ़ मस्जिद,लैलांग वे

मौलाना अलहाज क़ारी अहमद रज़ा क़ादरी,हरारे,ज़मबाबवे

अलहाज हाजी लियाक़त दिल मुहम्मद रज़वी डैनहीग हायलैन्ड

मुफ़्ती अ़ब्दुलमजीद क़ादरी,इमाम मस्जिद मारीशश

मौलाना वसी अहमद रज़वी,इमाम व ख़तीब मस्जिद बरमंधम

इमामत व ख़िताबत :

हज़रत ताजुश्शरीआ ज़माना ताल्ब इल्मी से ही इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देने लगे थे,वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा खाँ जीलानी बरेलवी ने बा ज़ाब्ता तौर पर रज़ा मस्जिद की इमामत व ख़िताबत का मन्सब जलीला के लिए तहरीरी वसीयत नामा जारी किया था। हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रहु का मामूल था कि जब ताजुश्शरीआ हमारह होते तो आप को ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाते। एक अर्सा दराज़ से नमाज़ ईदैन बरेली की ईदगाह में इमामत के फ़राइज़ अन्जाम दे रहे हैं। मन्सब फ़र्ज शनासी और परोकार तरीक़े से मुतअल्लिक़ा फ़राइज अन्जाम देते हैं। जब अप कुरआन शरीफ़ की तिलावत करते हैं,या ख़ुत्बा पढ़ते हैं तो लेहनें दाऊदी की याद कानों में बाज़गश्त करने लगती हैं। आप की क़िरअत में अरबी मिस्री लब व लहजा पाया जाता है।

उलूम व फुनून में महारत :

ताजुश्शरीआ उ़लूम मअ़कूलात व मन्कूलात में एकसाँ महारत रखते हैं। दीन क़य्यिम की तजदीद, सुन्नत की तरवीज, और बिदआ़त व मुन्किरात के इस्तिह़साल में जिस क़द्र सई आप ने फ़रमाई वह आप ही का ह़िस्सा है। ह़ज़रत ने जिस मौज़ू या किसी मसअला पर क़लम उठाया उस पर बे तकल्लुफ़ लिखते चले गये। जिस मसअला की तह़क़ीक़ फ़रमाई दलाइल के अंबार लगा दिए। मुह़द्दिस कबीर अ़ल्लामा ज़ियाउलमुस्तफ़ा क़ादरी अमजदी ने इमाम अह़मद रज़ा कांफ्रेस में कहा कि :

अ़ल्लामा अज़हरी के क़लम से निकले हुये फ़तावा के मुत़ाला से ऐसा लगता है कि हम आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तह़रीर पढ़ रहे हैं, आप की तह़रीर में दलाइल और ह़वाला जात की भर मार से यही ज़ाहिर होता है।(तक़रीर इमाम अह़मद रज़ा कांफ्रेस बरेली–24 सफ़रुलमुज़्ज़फ़र–1425 हिजरी)

ताजुश्शरीआ़ मन्दर्जा ज़ैल उ़लूम व फुनून में कामिल महारत रखते हैं। तफ़सीर, उ़लूम–ए–कुरआन, ह़दीस, उसूले ह़दीस फ़िक्ह, मुआ़नी व बयान, जबर व मुक़ाबिला, मुनाज़िरा व मराया, हयाते जदीदा मुरब्बआ़त, इल्मुलजफ़र, अ़क़ाइद व कलाम, मन्तिक़, फ़लसफ़ा, सर्फ़, नोह तजवीद व करअत, तसव्वुफ़ तारीख़, अदब, नअ़त, उ़रुज़ व क़वाफ़ी, तौक़ियत, हिसाब हयअत हिन्दसा, रियाज़ी, फ़न्ने किताबत वग़ैरा वग़ैरा क़ाबिल जिक्र हैं।

बे मिसाल हुसने ख़त् :

हज़रत ताजुश्शरीआ फ़न्ने ख़िताती में महारत रखते हैं। इसलिए आप के मकातीब,मज़ामीन व मक़ालात और फ़तावा हुस्न तहरीर के लिहाज़ से बे मिसाल हैं। उन तहरीरात को देखते ही दिल बाग़ बाग़ हो जाता है,इल्म व फ़ज्ल के साथ साथ यह ख़ूबी बहुत कम उलमा व मुफ्तियाने एज़ाम में पाई जाती है। हज़रत का तर्ज़ ख़िताती अहद व ज़मान के ऐतिबार से बदलता रहा है मगर हर ज़माना की तहरीरें अपने आप में आला नमूना और बे मिसाल ख़िताती का आइना दार हैं। ऐसा मालूम होता है कि मौतियों की लड़ियाँ बिखरी हुई हैं। दर हक़ीक़त हुस्न तहरीर से ख़ुद शख़्सियत का वह जमाले मख़्फ़ी बे हिजाब हो जाता है जिस तक रिसाई बहुत मुश्किल है। हज़रत के मकातिब के हुस्न ज़ाहिरी से हुस्न मअनवी आशकार होता है। राक़िमुस्सुतूर के पास हज़रत की तहरीरात अहद ब अहद मौजूद हैं। ज़माना-ए ताल्ब इल्मी,बादे फ़राग़त,अहद दर्स व तदरीस,अहदे दारुलइफ़्ता,अहदे जानशीनी, ज़माना -ए-शबाब और मौजूदा वक़्त की तहरीरात महफ़ूज़ हैं। इस से हुस्न तहरीर और फ़न्ने ख़त्ताती का बख़ूबी अन्दाज़ा होता है। और हज़रत की एक ख़ुसूसियत है कि फुलस्केप के कागज़ पर बग़ैर नीचे कुछ रखे लिखते जाते हैं और मजाल है कि कोई लाइन ज़रा सी भी टेढ़ी हो जाये।

अमर्बिल मुआरिफ़ व नही अनिलमुन्किर :

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म अल्लामा

मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी बरेलवी ने अपनी पूरी ज़िन्दगी अमर्बिल मारूफ़ और नही अनिलमुन्कर का मुक़द्दस फ़रीज़ा इन्तिहाई ख़ुलूस़ व लिल्लाहियत के साथ अदा किया और कर रहे हैं। अल्लाह तआला का हुक्म है कि उम्मते मुहम्मदिया(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)तमाम दूसरी उम्मतों से इसलिए मुमताज़ है कि वह भलाई का हुक्म देती है और बुराई से रोकती है। इसलिए"उम्मते मुहम्मदिया" की यह ख़ुसूसियत है कि अमर्बिलमारूफ़ में सारी उम्मतों पर फ़ौक़ियत रखती है,और आप अपने तमाम मुआसिर उलमा व मशाइख़ में फ़ौक़ियत रखते हैं। यह फौक़ियत उस वक़्त और बढ जाती है जब मुम्मबई में सुन्नी,शीआ,बोहरा,खौजा, ग़ैर मुक़ल्लिद,नदवी,दैबन्दी और जमाअ़ते इस्लामी वग़ैरा बातिल फ़िरक़ों से इत्तिहाद किया गया। आप ने उसकी शिद्दत से मुख़ालिफ़त की। उत्तर प्रेदेश में एक सियासी तौर पर मुश्रिकीन से इत्तिहाद व मोहब्बत की फ़ज़ा हमवार की जा रही थी। और उस रविश को ऐने इस्लाम बताया जा रहा था। आप ने सख़्त मुख़ालिफ़त कर के इस इत्तिहाद के शीराज़े को मुन्तशिर कर दिया। कराची और लंदन में भी वहाबी,सुन्नी को सियासी और बैनलअक़वामी मसाइल के नाम पर एक पलैट फ़ार्म पर लाने की बात हो रही थी तो आप ने इस इत्तिहादे उम्मत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि "हक़ और बातिल का इत्तिहाद सुबह़ क़ियामत तक नहीं हो सकता"।

मुझे ख़ूब याद है कि आज़ाद इन्टर कालेज बरेली में

आलइन्डिया जमाअ़त रज़ा–ए–मुस्तफ़ा ने अ़ज़मते मुस्तफ़ा कांफ्रेस(2002 ई.)का इन्ऐक़ाद किया था,ह़ज़रत ने हज़ारों के मजमअ़ से ख़िताब फ़रमाते हुये कहा किः

आप लोगों को नसीहत करता हूँ और वसीयत करता हूँ कि आ़ला हज़रत कुद्दुस सिर्रहु के मसलक पर क़ाइम रहना,वहाबियों और दूसरे फ़िरक़ों से मेल जूल,खाना पीना या किसी भी त़रह का इत्तिह़ाद जाइज़ नहीं हैं। इन फ़िर्काहाये बात़िला से ता क़ियामत इत्तिहाद नहीं हो सकता। मेरे ख़ान्दान के लोग हो या मेरा बेटा ही क्यों न हो,अगर आप देखें कि मसलके आ़ला ह़ज़रत से हट गया है तो दूध से मक्खी की त़रह़ निकाल कर बाहर करदें। छोड़दें"।

ह़ज़रत ने"लफ़्ज़े कमली"और "तस्वीर"कशी और टी वी रेडियो और टाई पर फ़ाज़िलाना मक़ाला और फ़तावा लिख कर आलम–ए–इस्लाम को ह़क़ व स़दाक़त का दर्स दिया। मुम्बई में एक फ़ितना–ए–अ़ज़ीम का सिदबाब करते हुये मुल्ला बुरहानुद्दीन को तौबा करने पर मजबूर होना पड़ा,गुजरात में क़ौमी एकता सम्मीलन में शिरकत करने वालों की गिरफ़त फ़रमाई तो उन लोगों ने बरआत का इज़हार किया। ह़ज़रत ने मसाइल फ़िक्ह के इज़हार और मसलक अहले सुन्नत व जमाअ़त ख़िताबत की तर्जुमानी और ह़िफ़ाज़त व सियानत में मफ़ाहिमत कभी न की। आप की ज़ात गिरामी अमर्बिलमारूफ़ व नही अ़निलमुन्कर की ज़िन्दगी की आइनादार है।

उम्मते मुस्लिमा की फ़िक्र मन्दी :

ज़ानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म जहाँ उम्मते मुस्लिमा की मज़हबी रहनुमाई फ़रमा रहे हैं, वहीं क़ौमी व मिल्ली मसाइल में भी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे रहे हैं। आलमे इस्लाम को दर पेश मसाइल के हल और उलमा–ए–अहले सुन्नत के इन्दिया के इज़हार और बैनलअक़वामी ताक़तों पर दबाओ बनाने के लिए आप ने उर्स रज़वी के हसीन मौक़ा पर 22/जूलाई 1995 ई. में मर्कज़ी दारुलइफ़्ता सौदागिरान में काइदीने मिल्लत,उलमा, मशाइख़ की मौजूदगी में पेचीदा मसाइल पर बहस व मुबाहिसा के बाद क़रार दाद पास की गई। इन क़रारदादों में यकसा सीवील कोड के निफ़ाज़ की मुख़ालिफ़त,तन्ज़ीम अइम्मा मसाजिद के ज़रीआ औक़ाफ़ पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा,उलूम दीनी और दुनियावी की तरफ़ मुसलमानों की ख़ुसूसी तवज्जह मरकूज़

करने,आपसी इन्तिशार व इख़्तिलाफ़ को मैदाने जंग व जदाल के बजाये अपने काइदीन की बारगाह में तवज्जो तलबी,चीचिनया और फ़िलिस्तीनी मुसलमानों की हिमायत, टाडा के तिहत गिरफ़्तार मुसलमानों की आज़ादी वग़ैरा वग़ैरा उमूर पर हुकूमत हिन्द से मुतालबात किए गये।

इस मुश्तरका अख़बारी एलानिया पर हज़रत के एलावा अल्लामा ज़ियाउलमुस्तफ़ा क़ादरी,मौलाना अब्दुलमुबीन नोअमानी,मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा रदोलवी, अलहाज मौलाना मुहम्मद सईद नूरी,मौलाना रियाज़ हैदर

हन्फ़ी, मौलाना अनवार अहमद क़ादरी,मौलाना आरज़ू अशरफ़ी,अल्लामा मुहम्मद हसीनी अशरफ़ी,मौलाना मुहम्मद हुसैन अबूलहक़्क़ानी,मुफ़्ती मुहम्मद मतीउ़र्रहमान मुज़तर रज़वी,मौलाना बशीरुलक़ादरी वग़ैरा के दस्तख़त हैं।

मज़ारात पर औ़रतों की हाज़री :

चन्द बही ख़्वाहान मसलक अहले सुनन्त व जमाअ़त ने उर्से रज़वी में औ़रतों की आमद पर जानशीन–ए– हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म की तवज्जोह मब्ज़ूल कराई,हज़रत ने फ़ौरन26 जूलाई 1995 ई को एक अपनी तरफ़ से मज़मून शाइअ़ कराया कि मजारात पर औ़रतें न आयें,और यही आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी का फ़रमान है। हज़रत ने तमाम मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिए हिदायत नामा जारी किया कि"अपने साथ ख़्वातीन को मज़ार शरीफ़ पर न लायें।"

तहफ़्फ़ुज़े मुस्लिम परसनल ला की तहरीक :

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आजम अ़ल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी उम्मत मुस्लिमा की रहनुमाई और कियादत में हमेशा पेश पेश रहे। एक ज़माना वह था जब शाह बानू मसअला को ले कर पूरे मुल्क में मुस्लिम परसनल ला पर हम्ले किए जा रहे थे सुप्रिम कोर्ट ने शरीअ़त इस्लामिया के मन्शा व मबदा के ख़िलाफ़ फ़ैसला सादिर कर दिया था। सुप्रिम कोर्ट के फ़ैसला के ख़िलाफ़ उलमा अहले सुन्नत ने चेलेंज किया और पुरे मुल्क में एहतिजाजी मज़ाहिरा व इजलास के

ज़रीआ अपने जज़बात व एहसासात को हुकूमत हिन्द तक पहुँचाया। अ़वामी सत़ह़ पर दबाओ इस क़द्र बढ़ गया था कि हुकूमत हिन्द को मजबूरन पारलेमैन्ट के ज़रीआ क़ानून बन कर सुप्रिम कोर्ट के फ़ैसला को कलअ़दम क़रार देना पड़ा(तहफ़्फ़ुज़े मुस्लिम परसनल ला अज़ मौलाना यासीन अख़तर मिस्बाही मत़बूआ दारुलक़लम देहली)

हुकूमती ओ़हदा से इस्तिग़ना :

उत्तरप्रदेश के साबिक़ वजीर आ़ला नारायन दत तैवारी (गवर्नर आंधरा प्रदेश) खान्दान आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी से गहरा तअ़ल्लुक़ रखते हैं। उन्होंने ने अपने अ़हद में ह़ज़रत के बरादरे अकबर मौलाना रैह़ान रजा ख़ाँ रह़मानी मियाँ को एम–एल–सी–नामज़द किया था। उनकी मुक़र्ररा मीआ़द ख़त्म हो जाने के बाद जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आ़जम के लिए कोशा रहे मगर ह़जरत ने मना फ़रमा दिया। 1989 ई में जनाब उस्मान आ़रिफ़ नकशबनदी (गवर्नर उत्तर प्रदेश) आप के दरे दौलत पर हाज़िर हुये और एम–एल–सी–नामज़द करने की हुकूमत उत्तप्रदेश की मनशा जाहिर की मगर ह़ज़रत ने ओ़ह़दा क़बूल करने से मना फ़रमा दिया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर उस्मान आ़रिफ़ ने आप से बहुत मिन्नत व समाजत की मगर आप राज़ी न हुये। उस्मान आ़रिफ़ साह़ब आप से क़ल्बी लगाओ और अ़क़ीदत रखते थे। औलिया–ए–किराम के आस्तानों पर हाज़री देना और मशाइख़ से दुआयें लेना उन का मामूल था। ह़ज़रत की बे पनाह इ़ज़्ज़त और अदब

व एहतिराम करते थे। मगर कुरबान जाइये उस अल्लाह के वली पर कि दुनिया को ग़ालिब होने न दिया और हुकूमती ओहदा से हमेशा दूर रहे। किया आज के तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में ऐसा मुम्किन है?

मुरादाबाद के मुक़द्दमा में शान्दार कामयाबी :

अल्लाह तआला जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ्ती–ए–आज़म अल्लामा अख़्तर रज़ा अज़हरी मद्दजुल्लाहु को वह मक़बूलियत अता फ़रमाई है कि जिस एलाके में पहुँच जायें वह एलाक़ा का ऐलाक़ा आप का गरवीदा हो जाता है। मुफ़्ती सय्यद शाहिद अ़ली रज़वी रामपुरी के बकौल :

जहा दूसरे पीराने एज़ाम सालिहासाल लोगों को दाख़िले सिलसिला करने के लिए महनत करते हैं,तरग़ीब दिलाते हैं,मगर हज़रत सिर्फ़ इस जगह एक घन्टा के लिए तशरीफ़ ले जाये तो वह लोग आप के नूरारी जलवा ज़ेबा को देखते ही मुरीद होने के लिए बिला तरग़ीब बे ताबाना बेक़रार हो जाते हैं। यह खुदादाद मकबूलियत आप को ही मयस्सर है।

इसी मक़बूलियत व शोहरत को देखते हुये हासिदीन से न रहा गया,इन से कुछ न बन पड़ा तो हज़रत के ख़िलाफ़ एक मुक़द्दमा दाइर कर दिया। पहले थाना नाग फ़नी मुरादाबाद में एफ़–आई–अर–दर्ज कराने के लिए इंस्पेक्टर से रजूअ़ किया। जब उस ने इस फ़र्ज़ी रिपोर्ट पर मुक़द्दमा क़ाइम करने से मना कर दिया तो इस हासिद ने 20 / नोमब्र 1996 ई. को मुरादाबाद कोर्ट में इस्तिग़ासा

दाइर किया। जिस की बुनियाद पर थाना में एफ–आई–आर–दर्ज हो गई। जब बरेली इत्तिलाअ़ पहुँची तो साहबज़ादा गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी,मुफ्ती अ़ब्दुलमन्नान कलीमी मुरादाबादी,राक़िमुस्सुतूर और बरादरम मुजीब रज़ा ख़ाँ मरहूम इब्ने हज़रत मौलाना हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी आली जनाब अफ़रोज़ मियाँ मुरादाबाद पहुँचे। कोर्ट में जानकारी हासिल की,बादोहु अपना जवाब दाख़िल किया गया। हमारे वकील के जवाबात सुन कर फ़ाज़िल जज हैरान रह गया। जज ने 22/फ़रवरी1999ई को हज़रत के हक़ में 8/ सफ़हात पर मुश्तमिल शान्दार फ़ैसला सादिर किया। यह बात याद रहे कि बावजूद मुख़ालिफ़ की हज़ार कोशिशों के हज़रत कभी भी कोर्ट तशरीफ़ नहीं ले गये। मुक़द्दमा की पेरव कारी राक़िमुस्सुतूर ने की,हर तारीख़ पर बरेली से मुरादाबाद जाता था अलहम्दुल लिल्लाह हक़ की फ़त्ह व नुसरत हुई और बातिल शिकस्त व रीख़त हुआ।

आलइन्डिया सुन्नी जमईअ़तुलउ़लमा :

वहाबी तन्ज़ीम जमिअ़तुल उ़लमा के बढ़ते हुये असरात को ज़ाइल करने और उ़लमा अहले सुन्नत को मरबूत व मज़बूत करने की ग़र्ज़ से 1970 ई. में सय्यदुलउ़लमा हज़रत मौलाना सय्यद आले मुस्तफ़ा मारहरवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि(सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह बरकातिया) की सदारत में"आल इन्डिया सुन्नी जमई अतुलउ़लमा की फ़आल क़ियादत की वजह से पूरे मुल्क में आनन फ़ानन बिरांचो क़ाइम हो गईं और पूरी बाडी तश्कील

दे दी गई। हज़रत सय्यदुल उलमा के इन्तिकाल हो जाने के बाद जनवरी 1980ई को बड़ी मस्जिद मदनपुरा मुम्बई में आल इन्डिया सुन्नी जमईअतुल उलमा की मज्लिस आमिला व मज्लिस आमा की मीटिंग हुई जिस में नये सद्र के इन्तिख़्वाब के लिए राये शुमार हुई। सब ने जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आज़म अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी के नाम की तजवीज़ पेश की। हज़रत ताजुश्शरीआ को 1980 ई में मुत्तफ़िका तौर पर सुन्नी जमईअतुलउलमा को सद्र मुन्तख़ब कर दिया गया। ता हुनूज़ आप की सदारत में यह तन्जीम काम कर रही है। मौलाना मन्सूर अली ख़ाँ इस के जनरल सिक्रेट्री हैं और आलइन्डिया जमाअत रज़ा–ए–मुस्तफ़ा के आप सर परस्त आला भी हैं।

बाबरी मस्जिद का क़ब्ज़ा :

चार सौ साला तारीख़ी बाबरी मस्जिद(अजूधिया ज़िला फैज़ाबाद) का मसअला इस्लामियान हिन्द के लिए बहुत अहमियत रखता है। फ़िर्क़ा परस्तों ने बा जोर ताक़त 6/दिसम्बर 1992 ई को शहीद कर दिया। बाबरी मस्जिद की शहादत से क़ब्ल और बाद में बाज़याबी की तहरीक में ताजुश्शरीआ जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आज़म ने बड़ा अहम किरदार किया। हुकूमत हिन्द से कांफ्रसों और मैमुरन्डम के ज़रीआ मुतालबात की तहरीक को बाआवाज़ बलन्द पेश करते रहे। हाफ़िज़ लईक़ अहमद ख़ाँ जमाली सज्जादा नशीन आस्ताना जमालिया रामपुर और मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी की क़ियादत में चल रही "जेल भरी तहरीक" की

मार्च 1986 ई. में ह़ज़रत ने हमालियत का ऐलान फ़रमाया ह़ज़रत के एलान के बाद तह़रीक में जान आई। राक़िम भी एक दिन जेल में रहा।

उत्तरप्रदेश के साबिक़ वजीर आला नाराइन दत तैवारी(अब अंधेराप्रदेश के गवर्नर हैं) और वज़ीर आज़म राजयूगांधी के सियासी सलाह़ कार मिस्टर एम–एल–भुतेदार ने 17/नोम्बर 1989 ई में बाबरी मस्जिद के क़ज़िया पर आप से मफ़ाहिमत की कोशिश की जिस में वह ना काम रहे। दरीं इस्ना दूसरे क़ाइदीन ने अपने को मुस्लिम रहनुमा पेश कर के कुछ मफ़ाद ह़ासिल करने की कोशिश की जिस पर आप ने सख़्त नाराज़गी का इज़हार किया और ऐसे रहनुमाओ के बाइकाट की अ़वाम से अपील की।(रोज़ नामा अमर उजाला आगरा 10 नोम्बर 1989 ई)

जनवरी 1995 ई दो पहर दो बजे की बात है कि वज़ीर आज़म पी वी नरसिमहा राऊ के ख़ुसूसी सिक्रेट्री जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म की ख़िदमत में वज़ीर आज़म का पैग़ाम ले कर हाज़िर हुये। वह राक़िमुस्सुतूर से वाक़फ़ियत रखते थे,मैंने उनकी ह़ज़रत से मुलाक़ात कराई,उन्होंनों वज़ीर आज़म का तह़रीक कर्दा ख़त़ ज़बानी त़ौर पर बताया कि वज़ीर–ए–आज़म हिन्द आप की शख़्सियत से बहुत मुतास्सिर हैं और मुलाक़ात कर के दुआयें लेना चाहते हैं। आप दौलत कदा पर आने की इजाज़त एनायत फ़रमा दें। ह़ज़रत ने फ़माया कि मैं मज़हबी आदमी हूँ, मुझे मेरे बुज़ुर्गों ने जिन उमूर की ज़िम्मादारी दी है उसी को अन्जाम देने में

मस़रूफ़ हूँ ,मैं सियासी नहीं हूँ, और उसके एलावा वज़ीर–ए–आज़म के हाथ बाबरी मस्जिद की शहादत में मुलव्विस हैं। पूरी उम्मत मुस्लिमा नाराज़ है। किसी भी सूरत में मुलाक़ात करना पसन्द नहीं है। अगर वह एक अक़ीदत मन्द की त़रह़ बग़ैर किसी सियासी प्रोग्राम के आस्ताना शरीफ़ आना चाहते हैं तो आयें और ह़ाज़री दे कर चले जायें।

मैं ऐनी शाहिद हूँ कि बावजूद हज़ार कोशिश के ह़ज़रत ने मुलाक़ात नहीं फ़रमाई जब कि वज़ीर आज़म हिन्द 7/ घन्टा बरेली के सरकट हाऊस में आप का इन्तिज़ार करते रहे।

ह़ालते ह़ाज़िरा के शरई तक़ाज़ेः

एक मुफ़्ती के लिए ज़रूरी है कि ज़माना के ह़ालात और कवाइफ़ पर नज़र रखते हुये शरई और आईली क़ानूनी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे। 1995 ई में हुकूमते हिन्द के शोअ़बा"एलेकशन कमीशन"ने तमाम बाशिन्दगाने मुल्क के लिए"शनाख़्ती कार्ड"का रखना और इस्तेमाल करना ज़रूरी क़रार दे दिया था। इस "शनाख़्ती कार्ड"में नाम वलदियत और पूरा पता व उ़मर दर्ज होती है। साथ ही फ़ोटो चिस्पाकर होता है। फ़ोटो ह़राम होने की वजह से आस्ताना आ़लिया रज़विया के मरकज़ी दारुलइफ़्ता में"शनाख़्ती कार्ड"बनवाने या न बनवाने के लिए सवालात का अंबार लग गया। दूसरी त़रफ़ एलेकशन कमीशन ने भी सख़्ती करना शुरू कर दी कि हर काम में मसलन बैंक

इकाउन्ट,ख़रीद व फ़रोख़्त को लाज़मी क़रार दिया गया है। उसी दौरान अलजामिअतुलअशरफ़िया मुबारक पुर में"मज्लिसे शरई" की मीटिंग का एहतिमाम हुआ। हज़रत जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने मज्लिस शरई की सदारत फ़रमाई। रईसुत्तहरीर अल्लामा अरशदुलक़ादरी की तजवीज़ पर आप ने"शनाख़्ती कार्ड"बनवाने की इन अल्फ़ाज़ के साथ इजाज़त दी कि"इस सूरत में तलब के वक़्त ज़रूरते मलजिया या हाजत शदीदा मुतहक्क़ होगी। लिहाज़ा ख़ास शनाख़्ती कार्ड के लिए तस्वीर खिचवाने की इजाज़त होगी"(फ़रवरी 1995 ई मज्लिस शरई मुबारकपुर)

अवाम की शदीद तरीन ज़रूरत के तेहत हज़रत ने मशरूत इजाज़त अता फ़रमाई, तो एक तब्क़ा में नुक्ता चीनी शुरू हुई, जब इस की ख़बर हज़रत को हुई तो आप ने एक वज़ाहती बयान जारी फ़रमाकर बहस को बन्द कर दिया। लिखते हैं :

ऐसे नये मसाइल जो फ़िलवाक़े फ़रइया हों, और उन इस मुतअ़ल्लिक़ कोई सरीह जुज़इया न मिल सके तो हर आलम नहीं बल्कि माहिर व तजर्बा कार मुफ़्ती की तरफ़ रजूअ़ करना चाहिए। और इस मुफ़्ती पर लाज़िम है कि उसूले शरई के पेश नज़र इस का हुक्म सादिर फ़रमाये। उसूले शरअ़ से हट कर फ़तावा देना हर गिज़ जाइज नहीं। अगर उस ने जिसे दलील क़रार दिया और फिर वाज़ेह हुआ कि यह दलील,दलील शरई नहीं तो फ़ौरन इस पर रजूअ़ लाज़िम है और हक़ का ऐलान करना

चाहिए। किसी ह़राम शय के मुबाह़ होने का फ़तवा उस वक़्त दिया जायेगा जबकि वहाँ यह ज़ाब्ता़ सा़दिक़ आये। "अज़्ज़रूरात तन्बीहुलमहज़ूरात"और मुफ़्ती को तयक़्क़ुन हो जाये कि इस ज़रूरत शरइया के मुआरिज़ कोई दूसरा क़ाइदा शरइया नहीं है। (क़ल्मी फ़तावा)

अरब दुनिया में मसलके आ़ला ह़ज़रत की इशाअ़तः

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म ने हिन्द पाक के एलावा दरजनों अ़रब ममालिक का तब्लीग़ी सफ़र फ़रमाया,और अब भी यह सिलसिला जारी है,आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी के मसलक की तरवीज व इशाअ़त के लिए आप अंथक जिद व जिहद फ़रमा रहे हैं। उस की एक अ़ज़ीम मिसाल यह है कि रमज़ानुलमुबारक 1404 हिजरी"रोज़नामा अलहुदा अबूज़हबी" ने ख़ुस़ूसी नम्बर शाइ किया। जिस में यह लिखा कि"बरेलियत एक नया फ़ितना है,नया मज़हब है" ताजुश्शरीअ़ को यह पढ़ कर शदीद बे चैनी हुई कि अ़रब की दुनिया में आ़ला ह़ज़रत क़ुद्दुस सिर्रहु को बदनाम किया जा रहा है। आप ने"मुत्तह़िदा अ़रब इमारात" से शाइ होने वाले(11)ग्यारह मुल्की अख़्बारात से रजूअ़ किया और "रोज़नामा अलहुदा"का जवाब अ़रबी में तरतीब दे कर शाई कराया। और बाज़ाब्ता़ तौ़र पर बर्रे स़ग़ीर में एक मुहिम चलाई ताकि उन अख़बारात पर दबाओ बने और आ़ला ह़ज़रत क़ुद्दुस सिर्रहु के मसलक को बदनाम करने वालों की साज़िश नाकाम हो जाये। ह़ज़रत ने हिन्दुस्तान,

पाकिस्ता और बंगला देश में दस्तख़ाती महम की अपील भी जारी की।

ग़ैर मुक़ल्लिद के फ़ितना-ए-अज़ीम का सदबाद

ग़ैर मुकल्लिद ने 1993 ई. में अपने एअ़तिक़ाद म मसलक की तशहीर के लिए एक नया फ़ारमोला ईजाद किया कि हर इसलिए निज़ाई को मिडिया में पेश किया जाये जिस से उम्मत मुस्लिमा में इन्तिशार फ़ैले और वह अहनाफ़ के ख़िलाफ़ हो। उसी इन्दिया के पेशे नज़र 30/मई 1993 ई. को एक मज्लिस में तीन तलाक़ का मसअला मिडिया में उछाल दिया गया कि :

अब कोई शौहर अगर तीन बार तलाक़ कहे तो शरीअ़त के मुताबिक़ तलाक़ नहीं मानी जायेगी,और उस से मर्द व बीवी उस के हुक्म और ज़िम्मा दारी पर कोई असर नहीं पढ़ेगा। अगर कोई शौहर हर एक साथ तीन बार तलाक़ दे तो उसे क़ानून एक ही तलाक़ कहा जायेगा और शरीअ़त के मुताबिक उसे बदला भी जा सकता है।" (रोज़नामा अमरउजाला बरेली 30 मई 1913 ई.)

जब जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म को ग़ैर मुक़ल्लिद के गुमराह कुन बयान की इत्तिलाअ़ हुई तो आप ने एक प्रेस कांफ्रेस बुलाकर फ़तावा जारी फ़रमाया,जिस में वाज़ेह तौर पर लिखा कि:

तीन तलाक़ नाम व निहाद व जमिअ़त अहले हदीस का एक बयान अख़बार में मुलाहिज़ा हुआ जो न सिर्फ़ हन्फ़ी बल्कि शाफ़ेई,मालिकी और हंबली सभी आइम्मा

मज़ाहिब के नज़दीक सरीह़ ख़िलाफ़ और नाक़ाबिले अ़मल, मरदूद व बातिल है,और मुसलमानों में फूट डालने की नापाक कोशिश नीज़ सियासी चाल है। मज्सिल वाहिदा में दी गई तीन तलाक़ तीन ही मानी जायेगी। उस पर सभी आइम्मा का इत्तिफ़ाक़ है।

(रोज़नामा दैनिक जागरन बरेली 31 / मई 1993ई.)

बरेली में मदारिस का क़ियाम :

बाज़ नागुफ़ता ब हालात की वजह से जानशीन हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म और आप के बरादर असग़र मौलाना मन्ना रज़ा ख़ाँ मन्नानी बरेलवी ने 1982 ई.में''जामिआ़ नूरिया''रज़विया के क़ियाम का फ़ैसला किया,कोई मअ़कूल जगह न होने की वजह से जामिआ़ नूरिया को पुराना शहर की तारीख़ी मस्जिद बमअ़रूफ़ "मिरज़ाई मस्जिद" मह़ल्ला घेरज़ाफ़र ख़ाँ में सरे दस्त शुरू कर दिया। स़दरुलउ़लमा मौलाना मुफ़्ती तह़सीन रज़ा ख़ाँ बरेलवी उसके शैख़ुल ह़दीस मुकरर हुये। 1984 ई.में ज़मीन ह़ासिल हो जाने के बाद जामिआ़ नूरिया को मह़ल्ला बाक़रगंज बरेली में मुन्तकि़ल कर दिया गया।

बरेली सवादे आज़म अहले सुन्नत का मर्कज़ी शहर है,मगर यहाँ पर कोई ऐसा वसीअ़ और जामिआ़ इदारा न होने की वजह से तिशनिगाने उ़लूम को मायूस होती थी। 1998ई.के आवाख़िर में राक़िमुस्सुतूर के इस़रार पर''मर्कज़ुदरासातिलइस्लामिया जामिआ़तुर्रज़ा''के क़ियाम के लिए मन्सूबा बन्दी और अ़मली जामा पहनाने की कोशिशे

तेज़ हो गई। अव्वलन हज़रत राज़ी नहीं थे,मगर राक़िमुस्सुतूर ने हालात और ज़रूरत का एहसास दिलाया तो तक़रीबन दो साल बाद मन्ज़ूरी एनायत फ़रमा दी। 1999ई. में बेरूने शहर मुख़्तलिफ़ जगहों को देखा गया। बालाआख़िर मथरापुर(बरेली)में जगह पसन्द कर ली गई। 1999ई.के वस्त में सब से पहले 24/ बीधा आराज़ी की ख़रीदारी हुई,बादोहु साल भी में मुख़्तलिफ़ औक़ात में 80 विधा आराज़ी ख़रीदारी गई। राक़िमुस्सुतूर की जिद व जहद से"इमाम अहमद रज़ा ट्रस्ट" भी वजूद में आया।"

अलहम्दु लिल्लाहि इमाम अहमद रज़ा ट्रस्ट के ज़ेरे एहतिमाम"जामिअतुर्रज़ा"हुसन व ख़ूबी के साथ तअलीमी और तअमीरी मराहिल तै कर रहा है। हज़रत के साहबज़ादा गिरामी क़द्र मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी जामिआ के नाज़िम आला हैं,उन्हें की निगरानी और देख रेख में जामिआतुर्रज़ा का निज़ाम चल रहा है। चालीस हज़ार इस्कुयाइर फ़िट पर दो माला अज़ीमुश्शान ख़ुबसूरत बिल्डिंग में दर्स निज़ामी की तअलीम हो रही है। एक हज़ार तलबा की रिहाइश को मद्दे नज़र रखते हुये दारूलइक़ामा की तअ़मीर मुकम्मल हो चुकी है। अब एक पब्लिक स्कूल और मस्जिद का तअमीरी मनसूबा पेशे नज़र है। यह सारा काम हज़रत की सर परस्ती में अन्जाम पज़ीर हो रहा है।

कई ज़बानो पर महारत :

ताजुश्शरीआ को अल्लाह तआला ने कई ज़बानों पर मुकम्मल दस्तरस अ़ता फ़रमाई है,अ़रबी,फ़ारसी और उर्दू में

जहाँ बहेतरीन अदीब नज़र आते हैं तो वही दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी ज़बान पर भी आप को मुकम्मल उ़बूर हासिल है। आप ने इस्लामिया इन्टरकालेज बरेली में मामूली हिन्दी और अंग्रेज़ी पढ़ी थी मगर खुदादाद ज़िहानत व फ़तानत की वजह से आप ने अंग्रेज़ी में भी कमाल हासिल किया। साऊथ अफ़रीक़ा, मलावी, ज़म्बावे, हरारे, मोरिशश, जरमन, फ्रांस, हालैन्ड,इंगलैन्ड,अमरीका,कनाडा वग़ैरा वग़ैरा ममालिक की बैनलअक़वामी कांफ्रेस में अंग्रेज़ी ही में ख़िताब करते हैं। अंग्रेज़ी में आप ने सैंकड़ों फ़तावा तहरीर फ़रमाये,ह़ज़रत ने अंग्रेज़ी में सब से पहला फ़तवा 7/मुहर्रमुलहराम 1412हिजरी/20/जूलाई 1991ई में अलहाज हारून तार रज़वी(लीड स्मथ साऊथ अफरीका)के इस्तिफता के जवाब में तहरीर फ़रमाया,जो दारुस्सलाम और दारुहर्ब में मुस्लिम व ज़िम्मी काफ़िर से मुतअ़ल्लिक़ है।

अंग्रेज़ी फ़तावा के दो मजमूअ़े डरबिन(साऊथ अफ़रीका)से शाइअ़ हो चुके हैं।

नाइब इन्कम टेक्स कमिशनर जनाब ज़ोहूर अफ़सर ख़ान रज़वी बरेलवी (हाल मुक़ीम अजमीर शरीफ) से इब्तिदाअन मशवरा फ़रमाते थे। मगर मौसूफ़ का यह तास्सुर था कि : ह़ज़रत जिन अंग्रेज़ी अलफ़ाज़ और जुमलों का इस्तेमाल करते।

हैं वह लोग़ात के एतिबार से बिल्कुल दुरुस्त होते हैं। इस तरह की सलासत व रवानी भरी तहरीरें मुझे बहुत कम देखने को मिलें।

अंग्रेज़ी के एलावा आप को मैंमुनी,गुजराती,मराठी, पंजाबी,बंगाली और भोजपुरी वग़ैरा ज़बानों में भी स़लाह़ियत ह़ासिल है। आप बखुबी इन एलाक़ाई ज़बानों को समझते और ह़स्बे ज़रूरत इस्तेमाल करते हैं। इन ज़बानों को सिखने के लिए कभी भी आप ने किसी उस्ताद के सामने ज़ानवे अदब यह नहीं किया,यह ख़ुदादाद स़लाह़ियतों अल्लाह तआला ने आप को वरसा में अ़ता फ़रमाई हैं।

औलाद अमजाद :

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म अल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी से छ औलादें हैं, जिन में एक स़ाह़बज़ादे गिरामी ह़ज़रत मौलाना अ़स्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी और पांच स़ाह़बज़ादिया(1)मोह़तर्मा आसिया बैगम (ज़ौजा आ़ली जनाब अलह़ाज बुरहान अ़ली रज़वी देहली) (2)मोह़तर्मा कुदसिया बैगम(ज़ौजा मौलाना मुफ़्ती शुऐ़ब रज़ा क़ादरी देहली)(4)मोह़तर्मा अ़तया बैगम(ज़ौजा ह़ज़रत मौलाना सलमान रज़ा ख़ाँ बरेलवी)(5)मोह़तर्मा सारिया बैगम(ज़ौजा) जनाब मुह़म्मद फरह़ान रज़ा) हैं।

मौलाना अ़स्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी :

मौलाना अ़स्जद रज़ा ख़ाँ बरेलवी की पैदाइश 14 शअ़बानुलमुअ़ज़म 1390 हिजरी को ख़्वाजा क़ुतब बरेली में हुई.। हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रहु ने आप के मुंह में लुआ़बे दहन डाल कर दाख़िले सिलसिला आ़लिया क़ादिरया बरकातिया रज़विया फ़रमाया। आप का पैदाइशी नाम''मुह़म्मद मुनव्वर रज़ा मुह़ामिद'' है, और उ़र्फ़ी

नाम''अस्जद रज़ा''

जामिआ नूरिया रज़विया बरेली में तअ्लीम हासिल की,आप के साथ राकिमुस्सुतूर को भी दर्स व रिफ़ाक़त का शर्फ़ हासिल रहा। हम दोनों जामिआ नूरिया रज़विया के एलावा सदरुलउलमा हज़रत मौलाना मुफ़्ती तहसीन रज़ा ख़ाँ मुहद्दिस बरेलवी के दौलत कदा पर शरह जामी और जलालैन शरीफ़ैन पढ़ने जाते थे। आप ने इब्तिदाई कुतुब घर पर मुफ़्ती मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी और मुफ़्ती नाज़िम अली क़ादरी से पढ़ें। दर्स निज़ामिया की मुतदाविल कुतुब बुख़ारी शरीफ़,मिशकात शरीफ़,तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरा वालिद माजिद ताजुश्शरीआ से पढ़ी।

अमीन शरीअत हज़रत अल्लामा सिबतैन रज़ा ख़ा बरेलवी की साहबज़ादी मोहतर्मा राशिदा नूरी साहिबा से 2/शअ़बनुल मुअ़ज़्ज़म 1411 हिजरी/17 फ़रवरी 1991 ई बरोज़ इतवार को अ़क्दे मसनून हुंआ। आप से चार लड़कियाँ और दो लड़के पैदा हुये। (1) अरीज फ़ातमा (2)अमरा फ़ातमा (3) मज़ीना फ़ातमा (4) बुशरा फ़ातमा (5) हुसाम अहमद रज़ा (6) हुमाम अहमद रज़ा पैदा हुये। अमीने मिल्लत हज़रत मौलाना सय्यद शाह अमीन मियाँ सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाह बरकातिया मारहरा शरीफ़ ने उर्स क़ास्मी बरकाती के मजमअ़ अकतूबर 2001 ई में इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ा। वालिद माजिद ने सन्द फ़राग़त के साथ ही साथ 2002 ई में तमाम सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त और औराद वज़ाइफ़ आमाल व अश्सग़ाल में

मजाज व माज़ून फ़रमाया। आप बड़ी स़लाहियतों के मालिक हैं,कम्पियूटर वग़ैरा जैसे अस़्री उ़लूम व फुनून में बग़ैर किसी उस्ताद के महारत हासिल की,और जदीद से जदीद तर की फहम व फरासत में लगे रहते हैं। अल्लाह तआ़ला मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ क़ादरी को अपने इस्लाफ़ का स़ही जानशीन बनाये। अमीन सुम्मा अमीन।

नोट : मज़ीद तफ़स़ीली ह़ालात ज़िन्दगी के लिए मुत़ाला करें''ताजुश्शरीआ़ ह़यात और ख़िदमात''जो तक़रीबन पाँच सो सफ़ह़ात पर मुश्तमिल होगी। अ़न्क़रीब मन्ज़रे आ़म पर आने वाली है।

सेह लिसानी अदब पर उ़बूर-ए-कामिल

अज़:मुहद्दिदसे कबीर हजरत अ़ल्लामा मुफ़्ती ज़ियाउल मुस्तफ़ अम्जदी

ताजुश्शरीआ ह़जरत अ़ल्लामा अज़हरी,साह़िब यगाना रोज़गार मुहक़्क़िक़ और साह़िब बसीरत आलिम फ़क़ीह हैं। इल्म व फ़ज़ल और जुहद व तक़वा में आप अपने जद्दे अमजद अहले सुन्नत सय्यदी आ़ला ह़ज़रत के वारिस मुन्फ़रिद हैं। अह़क़ाक़ ह़क व इबताले बात़िल का तह़क़ीक़ी अन्दाज़ आप को वरासत में मिला है,आप ख़ुदादाद वजाहत से मुत्तसिफ़ हैं। इसी लिए अ़रब व अ़जम के अ़वाम व ख़्वास आप से हुसूले फ़ैज़ के मुश्ताक़ रहते हैं और आप की ज़ियारत को ताज़गी ईमान का ज़रीआ़ मानते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने आप को कई ज़बानों पर मलका ख़ास अ़ता फ़रमाया है। ज़बान उर्दू तो आप की घरेलू ज़बान है और अ़रबी आप की मज़हबी ज़बान है। इन दोनों ज़बानों में आप को ख़ुसूसी मलका ह़ासिल है जिस पर आप की उदू और अ़बरी नअ़तिया शाइरी शाहिद अ़दल हैं। आप के बर जस्ता और फ़िलबदीहा नअ़तिया अशआ़र फ़साह़त व बलाग़त हुस्न तरतीब और नअ़त तख़ैयुल में किसी कुहना मशक़ उस्ताद के अशआ़र से कम दरर्जा नहीं होते। अ़रबी ज़बान के कदीम व जदीद उस्लूब पर आप को मलकाए रासिख़ ह़ासिल है। आप की ख़िताबत व शाइरी और तर्जमा निगारी किसी पुख़्ता कार अ़रबी अदीब के अदबी कारनामों पर भारी नज़र आती है। जामिआ अज़हर के दौरे तह़सील

में जब आप का अरबी कलाम अज़हर के शुयूख़ सुनते तो कलाम की सलासत व नज़ाकत और हुस्न तरतीब पर झूम उठते और कहते थे कि यह कलाम किसी ग़ैर अ़रबी का महसूस नहीं होता।

यह वाकिआ मेरे सामने ही का है कि ज़म्बा बोवे में एक मिस्री शैख ने आप के ह़म्द यह अशआर सुने तो बहुत महज़ूज़ हुये और उस की नक़ल की फ़रमाइश भी कर डाली ह़ज़रत अ़ल्लामा अज़हरी.को मैंने इंगलैंड.अमरीका. साऊथअफरीका.ज़म्बाबोवे वग़ैरा में बर जस्ता अंग्रेज़ी ज़बान में तक़रीर व वअ़ज़ करते देखा है और वहाँ के तालीम याफ़ता लोगों से आप की तअ़रीफें भी सुनीं और यह भी उन से सुना कि ह़ज़रत को अंग्रेजी ज़बान के क्साकी उस्लूब पर उ़बूर हासि़ल है।

हासि़ल कलाम यह है कि आप जो कुछ लिखते बोलते हैं उस में तकल्लुफ़ात का दख़ल नहीं होता बल्कि आप के मज़ामीन या तर्जमा निगारी उमूमन बज़रीआ़ इमला ही ज़बत क़लम किए जाते हैं। इसलिए आप के इल्मी कारनामे बरजस्तगी ही से मुत्तसि़फ़ होते हैं फिर हर बात दलाइल से मुबर्रहन दिक़्क़त मुआ़नी पर मुश्तमिल जामिइयत से लबरेज़ होती है आप आला ह़जरत कुद्दुस सिर्रहुलअ़ज़ीज़ के कई नादिर रोज़गार इल्मी मुबाहि़स व तह़क़ीक़ात पर मुश्तमि रिसालों की तक़रीब व ह़ाशिया निगारी इमला करा चुके हैं मशाइख़ अ़रब ने उन्हें पसन्द फ़रमाया और अपनी तक़रीज़ात भी सुबुत फ़रमायें। रब्बे क़दीर ह़ज़रत ताजुश्शरीआ

अ़ल्लामा अज़हरी मद्दज़ुल्लाहिल आ़ली की उ़मर व सिह़त में बरकत दे। आमीन बेहु़रमते सय्यदिल अम्बिया वल मुरसलीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम, व आलाहि व सह़बेही अजमईन, हस्बोनल्लाहु व नेअ़मल वकील।

मसलके आला हज़रत के सच्चे दाई व तर्जुमान

मौलाना अलहाज मुहम्मद सईद नूरी,चियरमैन रज़ा एकेडमी मुम्बई

जानशीन हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द,ताजुश्शरीआ क़ाज़ीयुलक़ज़्ज़ात हज़रत अल्लामा मुफ़्ती,अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी दामज़िल्लाहु अलैना मेरे हज़रत,हुज़ूर मुफ़्ती आज़म की यादगार हैं। आप हुज़ूर आला हज़रत और हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के इल्मी व अमली वरासत के चच्चे और हक़ीक़ी अमीन हैं। अल्लाह तबारुक व ताआला ने आप के ज़रीआ सय्यदिना सरकारे आला हज़रत व हुज़ुर मुफ़्ती–ए–आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के सिलसिले की बड़ी ज़बरदस्त इशाअत की है ज़माना–ए–हाल और माज़ी क़रीब जिस की मिसाल पेश करने से क़ाज़िर है।

मैंने कई मर्तबा हज़रत की रिफ़ाक़त का शर्फ़ हासिल किया है और ख़िदमत के भी कई मवाक़ेअ मयस्सर आये हैं। सरकारे मदीना में हाज़िरी और अम्रे की सआदतों से में कई मर्तबा हज़रत की मईत में बहरा अन्दोज़ हुआ। मक्का मुअज़्ज़मा,मदीना मुनव्वरा और पाकिस्ता वग़ैरा में हज़रत ताजुश्शरीआ की ख़िदमत का ज़र्रीन मौक़ा मिला। मैंने इन मक़ामात पर भी हज़रत के इर्द गिर्द अवाम व ख़्वास का वही हुजूम देखा है जो हिन्दुस्तान में देखने को मिलता है। इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आप मुल्क व बैरूने मुल्क उलमा व अवाम के दरमियान एकसाँ तौर पर मक़बूल हैं।

शहरे मुम्बई में महर्रमुलहराम,रबीउ़लअव्वल शरीफ़ और रबीउ़लआख़िर के दस,ग्यारह और बारह रोज़ प्रोग्राम एक ही स्टेज पर हुआ करते थे। इस जलसों में हुज़ूर मुफ़्ती आज़म के विसाल के बाद हुज़ूर ताजुश्शरीआ़,शिरकत फ़रमाते, इन में हज़रत का वह इल्मी बयान होता था कि उ़लमा व ख़्वास़ अश अश कर उठते थे,अफ़सोस इस की रीकरडिंग मौजूद नहीं है वरना यक़ीनन यह बहुत बड़ा इल्मी सरमाया होता।

1987 ई में जब हुज़ूर जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म हज व ज़ियारत के लिए तशरीफ़ ले गये इस सफ़र में अम्मी जान(अहलिया मोहतर्मा)भी आप के साथ थीं। हज़रत को मक्का मुकर्रमा में गिरफ़्तार कर लिया गया और ग्यारह रोज़ तक क़ैद व बन्द में रखा गया। इस वक़्त रज़ा एकेडमी मुम्बई ने हजरत की रिहाई के लिए मुल्कगीर तहरीक चलाई थी और ज़बर दस्त एहतिजाजी सिलसिला शुरू किया था। इस वक्त की फ़ाइल को शायद दीमक ने खा लिया है वरना इस तहरीक की पूरी तफ़स़ील पेश की जाती। इस वक्त तक़रीबन तमाम अख़बारात में हज़रत की गिरफ़्तारी के ख़िलाफ़ बयानात दिए जा रहे थे। इस मौक़ा पर रज़ा एकेडमी मुम्बई के दौर रुक्नी वफ़द ने इस वक़्त के सऊदी कोनसिल से मुलाक़ात कर के हज़रत की रिहाई का मुत़ालबा किया था। इस वफ़द ने कोनसिल से कहा था कि आख़िराइन का जुर्म किया है? इन को गिरफ़्तार क्यों किया गया है ? सऊदिया गवर्रन्मट ने उन्हें शायद इसलिए

गिरफ़तार किया है कि वह इमाम अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा बरेलवी कुद्दुस सिर्रुहु के पर पोते हैं और हिन्दुस्तान के एक ज़बरदस्त अ़ालिमे दीन और अहले सुन्नन व जमाअ़त के क़ाइद व रहबर हैं। इस वक़्त सऊ़दिया हुकूमत के अहल कारों को "फीक्स" के ज़रीअे एह़तिजाजी मुरासलात जारी किए जा रहे थे। बर्रे सग़ीर के सुन्नियों में एक अ़जीब सी बे चैनी पाई जा रही थी। इस ज़माने में ह़ज कमेटी ऑफइन्डिया के चेयरमैन अमीन खन्डवानी स़ाह़िब थे। मैंने उन से भी मुलाक़ात की और उनसे भी यहीं कहा कि वह अपने त़ौर पर ह़ज़रत की रिहाई की कोशिश करें। उन्होंने यक़ीन दिलाया। वहाँ पर एक मौलवी स़ाह़िब से मुलाक़ात हुई बोले के मैं अ़ल्लामा अख़रत रज़ा ख़ाँ की रिहाई का मुत़ालबा इसलिए करूँगा कि वह एक सुन्नी आमिल हैं। मैंने कहा कि वह सिर्फ़ सुन्नी आ़मिल ही नहीं बल्कि मुकतदा–ए–अहले सुन्नत है और हमारे पीर ज़ादा हैं, इसलिए हमारी कोशिश और ज़्यादा होनी चाहिए।

रज़ाएकेडमी ने सिर्फ़ उसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि मुख़्तलिफ़ तन्जिमों को साथ लेकर इब्राहीम रह़मतुल्लाहि रोडमीराना मस्जिद के पास एह़तिजाजी जलसे का ऐलान भी किया। यहाँ एहतिजाज की तैयारियाँ शुरू हो गयीं कि मक्का मकर्रमा से फ़ौन पर इत्तिलाअ़ मौसूल हुई कि ह़ज़रत को हुकूमते सऊदिया ने रिहा कर के मक्का मुकर्रमा से जद्दा रवाना कर दिया है और वह कल जद्दा से मुम्बई पहुँच जायेंगे।

हज़रत के इस्तिक़बाल के लिए कई गाड़ियाँ और बसें जिस में दारुलउ़लूम ह़न्फ़िया रज़विया क़लाबा मुम्बई,के त़लबा और असातिज़ा थे और भी दीगर ह़ज़रात थे,बस और गाड़ियों के साथ एयरपोर्ट पहुँचगये। उन के एलावा दीगर पीर भाई और अह़बाब अहले सुन्नत भी कसीर तअ़दाद में पहुँच चुके थे। ह़ज़रत मौसूफ़ सुबह़ की फलाइट से मुम्बई पहुँचे थे। चुंकि अख़्बारात वग़ैरा के ज़रीअ़े यह ख़बर आ़म हो चुकी थी कि हुकूमत सऊ़दिया ने ह़ज़रत को रिहा कर दिया है और ह़ज़रत फ़लाँ वक़्त पर मुम्बई पहुँच रहे हैं इसलिए अ़वाम में से भी कसीर तअ़दाद में लोग पहुँच गये थे।

ह़ज़रत जब मुम्बई पहुँचे तो उनका एक शान्दार इस्तिकबाल किया गया। मेरे लिए यह बाइस फ़ख्र है कि ह़जरत मेरे ग़रीब ख़ाना पर तशरीफ़ लाये। ह़ज़रत बहुत थके हुये थे और सऊदी गवर्नमेन्ट ने ह़ज़रत के हाथों में हथकड़ी भी डाल दी थी। इसलिए उन को आराम की सख़्त ज़रूरत थी। ह़जरत से मुलाक़ात के लिए सब से पहले ह़ज़रत मौलाना सय्यद ह़ामिद अशरफ़ स़ाह़िब क़िब्ला अ़लैहिर्रह़मा वर्रिज़वान और ह़ज़रत मौलाना ज़हीरुद्दीन ख़ाँ ख़त़ीब व इमाम इस्माईल ह़बीब मस्जिद फुलों का हार लेकर तशरीफ़ लाये मगर चुंकि ह़ज़रत आराम फ़रमा रहे थे इसलिए उन के आराम में ख़लल अन्दाज़ी मुनासिब न समझी गई। मैंने उन ह़ज़रात से कहा कि ह़ज़रत को बेदार न किया जाये। इसलिए यह ह़ज़रात हार मेरे ह़वाले कर के

वापस हुये।

मुम्बई 13/सितम्बर 1986 ई/1407 हिजरी को इब्राहीम रह़मतुल्लाहि रोड मुम्बई 3 पर मीनारा मस्जिद के पास रज़ा एकेडमी के ज़ेरे एहतिमाम एक एहतिजाजी जलसा मुन्अक़िद किया गया बल्कि यूँ कह लिजिए कि एक जशन का इन्अ़ेक़ाद हुआ जो ह़ज़रत की रिहाई की खुशी में मुन्अक़िद हुआ। जिस में मुह़द्दिसे कबीर ह़ज़रत अ़ल्लामा ज़ियाउलमुस्तफ़ा साहिब क़िब्ला मुद्दजुल्लाहुलआ़ली और खतीबुलहिन्द,ह़ज़रत मौलाना उ़बैदुल्लाह ख़ाँ आ़जमी और दीगर उलमा–ए–किराम शरीक थे। ह़ज़रत ने इस जलसे में खुसूसी ख़िताब फ़रमाया। जब ह़ज़रत ने ख़िताब शुरू किया तो मजमा में बिल्कुल सुकूत तारी था।

ह़ज़रत ने अपने इस ख़िताब में अपनी गिरफ़तारी की रूदाद बयान फ़रमाई थी और अपना एक शैर भी पढ़ा था।

अ़र्ज़ तय्बा है किस क़दर दिल रुबा

मुझ से पहले मेरा दिल हाज़िर हुआ

नोट : ह़ज़रत के इस ख़िताब को किताबचे की शक्ल में रज़ा एकेडमी मुम्बई ने शाई किया था, ज़ेरे नज़र किताब में शामिल इशाअ़त है। (रज़वी गुफिरा लहु)

इल्मी मकाम और मर्तबा

अ़ल्लामा अ़ब्दुलमुबीन नोअ़मानी अलमजमुउ़लइस्लामी मुबारकपुर आज़म गढ़

ताजुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी क़ादरी,बरेलवी दामत बरकातुहुमुल आ़लिया जानिशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द व सद्र मर्कज़ी दारुलइफ़ता बरेली शरीफ़ की ज़ात गिरामी मोह़ताजे तआ़रुफ़ नहीं, आप आ़ला ह़ज़रत अहले सुन्नत अ़लैहिर्रह़मा के परपोते,ह़ज़रत अ़ल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ाँ इब्ने हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ाँ के स़ाहिबज़ादे हैं इल्म व फ़ज़ल में अपने जद्दे अम्जद और सरकार आ़ला ह़ज़रत के जानशीन हैं साथ ही हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द अ़लैहिर्रह़मा वर्रिज़वान के क़ाइम मक़ाम हैं।

इस्तिह्ज़ारे इल्मी और तफ़क्कुहः

आप की ज़ात पूरी जमाअ़त अहले सुन्नत के लिए मरजअ़ की हैसियत रखती है तफ़क्कुह फ़िद्दीन में जो वरासत आप को ह़ासिल है यकता–ए–ज़माना हैं फ़िक़्ही जुज़ियात नोक ज़बान पर रहते हैं। एक बार जब कि आप जमशेदपुर में तशरीफ़ ले गये थे,जनाब अलीमुद्दीन स़ाह़िब आसवी के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ थे कि एक इस्तिफ़ता आया,आप ने फ़ौरन इस का जवाब अरक़ाम फ़रमाया और मुतअ़द्दिद फ़िक़्ही एबारात से भी मुज़य्यन फ़रमाया,और दस्तख़त कर के हवाले कर दिया जब कि कोई किताब सामने न थी।

एक अज़ीम ख़िदमत :

अपने औक़ात के तहफ़्फ़ुज़ पर हद दर्जा एहतिमाम फ़रमाते हैं ग़ैर ज़रूरी बातों से परहेज़ और मुतालअ़ कुतुब, समाअ़त कुतुब,और दर्स हदीस व फ़िक्ह नीज़ फ़तावा नवैसी आप का महबूब मशग़ला है। साथ ही तस्नीफ़ व तालीफ़ में भी अच्छा ख़ासा वक़्त सिर्फ़ फ़रमाते हैं हत्ता कि सफ़र में भी तस्नीफ़ व तर्जुमा का काम जारी रखते हैं सफ़र में बिलउमुम वक़्त कम मिलता है मिलने जुलने वालों की भीड़ से बच निक्लना आसान काम नहीं, लेकिन हज़रत अज़हरी साहब किब्ला अ़कीदत मन्दों की भीड़ से भी निकल कर इल्मी मशागील अपनाते हैं चन्द साल पेशतर की बात है उर्स सदरुश्शरीआ़ अ़लैहिर्रहमा में आप घोसी तशरीफ़ लाये हुये थे और कादरी मन्ज़िल में क़ियाम किया था। मैं मिलने के लिए गया तो देखा कि कुछ इमला करा रहे हैं मसरूफ़ियत देख कर वापस आ गया बाद में मालूम हुआ कि हज़रत अलमोअ़तक़दुलमुन्तक़िद मुसन्नफ़ा अ़ल्लामा फ़ज़ले रसूल बदाँयूनी अलैहिर्रहमा का तर्जुमा कर रहे थे। मैं ने हज़रत पर इल्मी मशग़ले में ख़लल डालना पसन्द न किया जब कि ऐसे मौक़े पर अकसर लोग अ़क़ीदत मन्दी का सुबूत देते हुये दूर से सलाम और दस्त बूसी व क़दम बुसी में लग कर अपने मख़दुमों को इल्मी ख़िदमत से दूर कर देने में अपनी सआदत और अ़क्लमन्दी तसव्वुर करते हैं। अलहम्दु लिल्लाह अलमोअ़तक़दुलमुन्तक़द का यह तर्जुमा मुकम्मल हुआ और छप भी गया। यह हज़रत क़िब्ला

की एक बड़ी इल्मी व दीनी ख़िदमत है क्योंकि यह वह किताब है जिस पर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुद्दिसा सिर्रुहु ने हाशिया तहरीर फ़रमाया है जिस का तारीख़ी नाम है अलमुस्तनदुलमोअतक़द बिना नुजातुलअबद 1320हिजरी यह किताब अक़ाइद व कलाम के अहम मुबाहिस पर मुश्तमिल है। इस पर आला हज़रत कुददुस सिर्रुहु के हवाशी ने गोया सोने पर सुहागा का काम किया। बाज़ अदक़ और अहम एबारतों की तशरीह के साथ आला हज़रत ने कुछ जदीद फ़िरक़ों का भी रद तहरीर कर दिया है। जो हज़रत मौलाना फ़ज़ले रसूल उस्मानी बदायूँनी अलैहिर्रहमा के वक़्त में न थे या उन के हुक्म का सिर्फ़ आग़ाज़ हुआ था। इसलिए ज़रूरत थी कि इस किताब को आम किया जाता और उर्दूदाँ तबक़े को भी इस से इस्तिफ़ादे का मौक़ा मिलता मज़ीद बरआँ यह किताब चुंकि बाज़ मदारिस अहले सुन्नत के निसाब तालीम में भी शामिल है तो इस से दर्स व तदरीस में आसानी भी पैदा करना मक़सद था। जिस के पेशे नज़र मौलाना मुफ़्ती शोऐब रज़ा साहब की फ़रमाइश पर हज़रत ताजुश्शरीआ अज़हरी साहब क़िब्ला ने उसके तर्जुमे का आग़ाज़ कर दिया और सिर्फ़ आग़ाज़ नहीं तमाम मसरूफ़ियात के साथ छः माह की क़लील मुद्दत में उसका तर्जमा मुकम्मल कर दिया बाज़ किताबों का तर्जमा आसान होता है। उसे हर अरबी दाँ बा आसानी कर भी सकता है,लेकिन बाज़ किताबें

ऐसी फ़न्नी और मुश्किल होती हैं जिनका तर्जमा सब के

बस की बात नहीं होती। अलमोअतक़दुलमुन्तक़द भी कुछ ऐसी ही किताब है जिस के तर्जुमे का काम ख़ासा मुश्किल था लेकिन हुज़ूर अज़हरी मियाँ ने क़लील वक़्त में बा आसानी एक उमदा तर्जुमा कर के उम्मत ख़ुसूसन अहले इल्म पर एहसान फ़रमाया। यह किताब दो साल क़ब्ल छुप कर मन्ज़र–ए–आम पर भी आचुकी है। फ़रमाया तर्जुमा किन हालात में हुआ और कैसे हुआ इस की कुछ तफ़सील किताब के मुक़द्दमा निगार मुफ़्ती क़ाज़ी शहीद आलम साहिब क़िब्ला उस्ताज़ जामिआ नुरिया रज़विया बरेली शरीफ़ की ज़बान मुलाहिज़ा करें।

चुंकि हज़रत को इत्मीनान व सुकून से बरेली की सर ज़मीन पर रहने का मौक़ा बहुत कम ही मयस्सर आता है लिहाज़ा जब तब्लीग़ व इरशाद के दोरे श्रीलंका रवाना हुये तो हुसने इत्तिफ़ाक़ कि हज़रत मौलाना शोऐब रज़ा साहिब और ताजुश्शरीआ के ख़ल्फ़ुर्रशीद हज़रत मौलाना मुहम्मद अस्जद रज़ा साहिब हमारा सफ़र हुये किताब अलमोअतक़दुल मुन्तक़िद साथ रख ली गई। बिल आख़िर 27/जमादिलआख़िर 1424 हिजरी मुताबिक़ 123 आगस्त 2003 बरोज़ हफ़ता बाद नमाज़े मग़्रिब अलहाज अब्दुस्सत्तार रज़वी कोलमबो श्रीलंका के मकान पर इस अज़ीम काम का आग़ाज़ किया गया।

जिस तरह यह किताब अपने मौज़ू में मुन्फ़रिद व ला सानी है इसी तरह तर्जमा का अन्दाज़ भी आम तराजिम से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ और मुन्फ़रिद है एक तो हज़रत की

निगाह कमज़ोर,दूसरी बात यह है कि किताब का ख़त निहायत बारीक हज़रत के लिए एबारत देख कर तर्जमा करना मुश्किल अम्र था,मौलाना शोऐब रज़ा साहब एबारत पढ़ते जाते और ताजुश्शरीआ फ़िलबदिया तर्जमा बोलते जाते और खुद मौलाना शोऐब साहिब सफ़हा क़िरतास पर तहरीर करते जाते। जहाँ जब मौक़ा मयस्सर होता तर्जमा का अमल जारी व सारी रहता, हत्ता कि ट्रेन और पलीन पर भी यह मुबारक काम न रुका, इस तरह इस तर्जमे का बाज़ हिस्सा श्रीलंका में लिखा गया और बाज़ हिस्सा मिलावी में और बाज़ हिस्सा ट्रेन व पलीन पर और कुछ हिस्सा बरेली शरीफ़ में क़ियाम के दौरान लिखा गया।

(मुक़द्दमा अलमोअ़तक़दुलमुन्तक़िद मुतर्जिम स.9–10 अलमतबुआ अलमजमा अर्रज़वी बरेली)

ज़िम्नन यह भी अर्ज़ करता चलूकि अलमोअ़तकदुल मुन्तक़द का अरबी ऐडीशन निहायत उमदा नई कमपोज़िंग के साथ रज़ा एकेडमी मुम्बई से शाइ हो चुका है उसके बाद उसका दूसरा ऐडीशन हुदूसुलफ़तन व झाद ऐयानुस्सुनन ''(अ़रबी)अज़ अल्लामा मुहम्मद अहमद रज़वी सदरुल मुदर्रिसीन अलजामिआतुलअशरफ़िया मुबारक पुर के इज़ाफ़े के साथ अलमजउलइस्लामी मुबारकपुर से भीशाइअ़ हो गया है। किताब के कुल सफ़हात 270 हैं और हुदूसलफ़तन के 1193 ऐलावा फहारिस,साइज़26×20=8मुताबिक़ बहारे शरीअ़त क़दीम,हुसूसुफ़ितन का तर्जमा भी शाइअ़ हो गया है। मतर्जिम हैं मौलाना अब्दुलग़फ़्फ़ार आज़मी मिस्बाही और

तर्जमे का नाम फ़ितनों का ज़हूर और अहले हक़ का जिहाद,हुदूसुलफ़ितन के तर्जमे का भी प्रोग्राम था कि उस दौरान यह ख़बर फ़रहत असर मूसिल हुई कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ दामत बरकातुहुमल कुदसिया इस को उर्दू में मुन्तक़िल फ़रमारहे हैं। फिर जल्दी ही वह तर्जमा शाइअ़ हो कर मनज़र आ़म पर भी आ गया जो इस वक़्त नज़र नवाज़ है। तर्जमा किया है गोया मुस्तक़िल तस्नीफ़ है,कि पढ़ने वाले को शुबह ही नहीं होता कि यह किस किताब का तर्जमा है और यह तर्जमे की बहुत बड़ी ख़ुबी है जो आ़म मुतर्जिम को हासिल नहीं होती। शुरू किताब में फ़ाज़िल गिरामी मौलाना क़ाज़ी शहीद आ़लम रज़वी के क़लम से 19 सफ़हात का मुक़द्मा है जो अ़र्ज़ अहवाल के साथ मुसन्निफ़ मुहश्शी और मतुर्जिम के हालात पर मुश्तमिल और बड़ा मालूमात अफ़ज़ा है,गिरया मुक़द्दमा न होता तो वाक़ेई एक बड़ी कमी महसूस की जाती,मुक़द्दमा के साथ पूरी किताब 351 सफ़हात पर ख़ात्म होती है। मतन के साथ आ़ला हज़रत क़ुद्दुस सिर्रुहु के हवाशी का तर्जमा भी बशकल हाशिया है।

तब्लीग़ी और तदरीसी मशग़लाः

हज़रत ताजुश्शरीआ दामत बरकातुहुम ने शुरू दौर में तदरीस का मशग़ला इख़्तियार किया जो हुज़ूर मुफ़्ती आज़म कुद्दुस सिर्रुहु के आख़िरी दौर तक चलता रहा फिर जब सरकार मुफ़्ती-ए-आज़म विसाल से क़ब्ल साहिब फ़राश रहने लगे और इस्तिग़राक़ी कैफ़ियत तारी हो गई तो

आप के तब्लीग़ी दौरों का सिलसिला बन्द हो गया। उस के बाद ही से ख़लक़े ख़ुदा का हुजूम हज़रत ताजुश्शरीआ की तरफ़ मुतवज्जोह हुआ तो आप को तदरीसी ख़िदमात छोड़ कर तब्लीग़ी दौरों में वक़्त देना पड़ा जो आप की मजबूरी थी,क्योंकि मुल्क व बैरुने ममालिक ऐशाक़ मुफ़्ती–ए–आज़म और वाबस्तगान सिलसिला क़ादरिया बरकातिया रज़विया की प्यास बुझाना उनकी रुहानी तरतीब का फ़रीज़ा अन्जाम देना भी ज़रूरी था। इसलिए हज़रत ताजुश्शरीआ की हयात का ज़्यादा वक़्त तो तब्लीग़ी दौरों ही की नज़र हो कर रह गया जिस की वजह से हज़रत तस्नीफ़ व तालीफ़ और फ़तवा नवैसी का ज़्यादा अन्जाम न दे सके फिर भी इतनी मसरुफ़ियात के साथ जब आप की तसानीफ़ व तराजिम की फ़िहरिस्त पर नज़र डाली जाती है तो हैरत होती है कि तक़रीबन बीस किताबें आप की नोक क़ल्म से निक्ल कर मन्ज़र–ए–आम पर आ चुकी हैं सिर्फ़ फ़तावे का काम बाक़ी वह भी तक़रीबन पाँच जिलदों पर मुश्तमिल है और हुनूज़ इस का सिलसिला जारी है,काश बाज़ अहले अक़ीदत ग़ैर ज़रूरी हुसूल के लिए हज़रत को यहाँ वहाँ न ले जाते और इल्मी कामों के लिए फुर्सत बहम पहुँचाते बल्कि इन अहम कामों में हज़रत की मदद करते तो तस्नीफ़ व तालीफ़ और फ़तावे का काम आगे पढ़ता,लेकिन आदमी ग़र्ज़ का बन्दा होता है अपना मक़सद हासिल हो बाक़ी किसी क़ीमती शख़्शियत के ज़र्री औक़ात ज़ाइअ़ हो जाये उसे उस की फ़िक्र नहीं होती, में इस सिलसिले में ग़लू अक़ीदत के

शिकार अहबाब से गुज़ारिश करूँगा कि इल्मी और दीनी ज़रूरियात को अपनी ज़ाती ग़र्ज़ और ख़्वाहिश पर तरजीह दी और हुज़ूर ताजुश्शरीआ के नुक़सानात को मज़ीद ज़ाइ होने से बचायें,मेरा यह मक़सद हर गिज़ नहीं कि हज़रत जहाँ भी जाते हैं कोई फ़ायदा नहीं होता लेकिन अलअहम फलअहम के फ़ारमुले पर अमल करना ही दानिशमन्दी है जहाँ तक दुआओं का तअल्लुक़ है घर पर जा कर ही दुआ करना तो ज़रूरी नहीं, हज़रत जहाँ से भी दुआ करेंगे अल्लाह कबूल करेगा और आप का मकसद हासिल हो जायेगा।

वक़्त के बहुत से उलझे हुये मसाइल हैं जिन पर लिखना है वहुत से अहम मौज़ूआत हैं जिन पर तस्नीफ़ात की जरूरत है,अगर हजरत ने अब से उन पर तवज्जोह दी और कौम ने भी फुरसत दी तो इन्शाअल्लाह फ़ैज़ान आला हज़रत व मुफ़्ती आज़म के ऐसे दरिया बहेंगे कि लोग देखते रहेंगे। यह हकीक़त है कि जो जाता है अपनी जगह ख़ाली छोड़ जाता है,और अपने उ़लूम फ़ुनून की बसात लपैट कर चला जाता है, हमारी गिनती शख़सियतें हम से रुख़सत हो गयें लेकिन उन के शायान शान हमारे पास इल्मी आसार मौजूद नहीं जिन से हम उनका वाक़ेई तआरुफ़ करा सकें,हुज़ूर ताजुश्शरीआ इस वक़्त जमाअत अहले सुन्नत के वह कीमती सरमाया हैं जिन की मिसाल ढूंडने से मिलना मुशकिल है। जो मरजईयत व मरकज़ियत आप को हासिल है वह किसी दूसरे को हर गिज़ नहीं। पीरों में आप इस

वक़्त सब से बड़े पीर हैं, मुफ़्तियों के भी इमाम नीज़ क़ाज़ीयुलकुज़्ज़ात और उलमा–ए–किराम के बिला शुबह मलजा व मावा हैं फ़िक़्ह में आप का मक़ाम बुलन्द तो आप के फ़तावा से ज़ाहिर है और हदीस दानी में कमाल व देखना हो तो आप की तअलीक़ात बुख़ारी को मुलाहिज़ा किया जाये,जो हवाशी इमाम अहमद रज़ा के साथ मज्लिस बरकात जामिआ अशरफ़िया मुबारकपुर से शाइअ हो चुकी हैं।

और फ़न्ने तफ़सीर में आप को जो दर्क हासिल है उसके लिए दिफ़ाअ कन्ज़ुलईमान,नामी किताब मुंह बोलती तस्वीर की हैसियत रखती है यह किताब मुतवस्सित साइज़ के 119 सफ़हात पर मुशतमिल है लेकिन अफ़सोस कि उसकी किताबत व इशाअत की ज़िम्मेदारी ग़ैर आलिमों और ग़ैर अरबी दाँ के हाथ पड़ने के सबब निहायत बे वक़अत अन्दाज़ से शाइअ हुई है जगह जगह से असल एबारात को जो कुतुब तफ़ासीर से अख़ज़ की गई थीं। हज़फ़ कर दिया गया है और मज़ीद मज़ामीन जो हज़रत ने उसके बाद अख़लाक़ क़ास्मी दैवबन्दी के रद में लिखे थे वह भी शामिल न किए गये। दूसरे हिस्से के नाम पर उसे टाल दिया गया,मेरी हज़रत किब्ला की ख़िदमत बाबरकत में इस्तिफ़ादा करने वाले अहले इल्म हज़रात से गुज़ारिश है कि दोनों हिस्सों को अज़ सरेनू एडट कर के असल अरबी एबारात के साथ और हवालों की मुकम्मल तख़रीज के बाद जिल्द मन्ज़र आम पर लायें वरना कही मुसव्वदे के गायब होने का शिकवा करना पड़ा।

मेरी शहज़ादा हुज़ूर ताजुश्शरीआ मौलाना अख़्तर रज़ा साहब से और हज़रत के गिर्द इल्मी मशग़ूलियात से वाबस्ता हज़रात से गुज़ारिश है कि कन्ज़ूलईमान और

तफ़सीरी मवाद से मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रत की तह़रीरों यकजा और मुरत्तब करें ह़ज़रत को सुनायें और बाक़ाइदा अन्दाज़ में उन्हें मन्ज़रे आ़म पर लायें इसी त़रह़ ह़ज़रत के लिखे हुये फ़तावा यकजा किए जायें उन्हें मुरत्तब कर के ह़ज़रत को दोबारा सुनाया जाये फिर उन्हें मन्ज़रे आ़म पर लाया जाये चुंकि यह तमाम अन्जाम देना बहुत ज़रूरी है।

ह़ज़रत ताजुश्शरीअ़ा के इल्मी मक़ाम व मरतबे को उजागर करने के लिए ज़रूरी है कि ह़ज़रत के आसार–ए–इल्मिया को महफ़ुज़ किया जाये और उन्हें ढंग से शाइअ़ किया जायें,बिलखुसूस ह़ज़रत की अ़रबी तसानीफ़ मसलन अलहक़्कुलमुबीन और मिरातुन्नजिदया वग़ैराहा को आ़लम अ़रब में फैलाया जाये ताकि आ़ला ह़ज़रत कुद्दुस सिर्रुहू के तअ़ल्लुक़ से जो ग़लत़ फ़हमियाँ फैलाई जा चुकी हैं। उन का ज़्यादा से ज़्यादा तदारुक किया जाये बल्कि मेरी एक राय यह भी है कि मसलके अह्ले सुन्नत व जमाअ़त यानी मसलके आ़ला ह़ज़रत जो तर्जुमान है और बरेली के तअ़ल्लक़ु से जो ग़लत़ प्रोपगन्डे आ़लमी पैमाने पर हो रहे हैं इस सब का यकजा जवाब ह़ज़रत के इरशादात पर मब्नी उर्दू, अंग्रेज़ी,और अ़रबी में शाइ किया जाये ख़ानवादा के बाहर के अफ़राद जो जवाबात दे रहे हैं उस के मुक़ाबिले में ह़ज़रत ताजुश्शरीअ़ा की तह़रीरें ज़्यादा मुवस्सिर साबित होंगी और मुख़ालफ़ीन का झूट अच्छी त़रह़ तशत अज बाम होगा।

तर्जमा निगारी का जाइज़ा

मौलाना नफ़ीस अहमद रज़वी,उस्ताज़ जामिआ अशरफ़िया,मुबारकपुर, आज़म गढ़

ख़ानवादा–ए–रज़विया मरकज़े अहले सुन्नत बरेली शरीफ़ के चशम व चिराग़ ताजुश्शरीआ हज़रत अ़ल्लामा, मुफ़्ती,मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी मद्दजुल्लाहुलआ़ली की ज़ात उ़लमा–ए–किराम और मशाइख़े तरीक़त के दरमियान ऐसे ही मुम्ताज़ और नुमाया है जैसे चौदहवी का चान्द सितारों की अन्जुमन में मुमताज़ और नुमाया होता है। अल्लाह तआ़ला ने आप को हुस्ने ज़ाहिर और जमाल बातिन दोनों दौलतों से नवाज़ा है। आप इल्मे शरीअ़त व तरीक़त के जामेअ़ और मजमअ़ बहरैन हैं,इस पर मुस्तज़ादिया है कि अल्लाह तआ़ला ने आप की मोहब्बत व अ़क़ीदत अपने बन्दों के दिलों में इस तरह डाल दी है कि आप जहाँ भी तशरीफ़ ले जाते हैं अ़वाम व ख़्वास सभी आप की ज़ियारत के मुश्ताक़ और आप से मुसाफ़ा और दस्त बोसी के लिए बे ताब नज़र आते हैं। मज्लिस उ़लमा–ए–में आप तशरीफ़ रखते हैं तो बिला इख़्तिलाफ़ आप ही''मीरे मज्लिस''होत हैं। आप जहाँ क़दीम उ़लूम व फ़ुनून से आरास्ता हैं वही जदीद अ़रबी और अंग्रेज़ी ज़बान व अबद पर ऐसी कामिल दस्तर्स रखते हैं कि बिला तकल्लुफ़ दोनों ज़बानों में अहले ज़बान की तरह लिखते और बोलते हैं।

आप मुफ़स्सिरे आज़म अ़ल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ाँ बरेलवी के फ़रज़न्दे अरजमन्द,हुज्जतुल इस्लाम अ़ल्लामा

मुहम्मद हामिद रज़ा अलैहिर्रहमा के पोत,मुफ़्ती आज़म हिन्द अल्लामा मुहम्मद मुस्तफा रज़ा नूरी,बरेलवी के नवासे और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के इल्मी वारिस और जानशीन हैं।

इंसान समाज में तीन तरह के अफ़राद पाये जाते हैं 1.एक तो वह जो अपने अन्दरूनी ख़ुबियाँ और कमालात रखते हैं और अपनी शख़्सी और ज़ाती ख़ुबियों की बुनियाद पर अपनी शोहरत व मक़बूलियत की फ़लक बोस एमारत क़ाइम करते हैं और अवाम व ख़्वास सब के दिलों में महबूबियत का मक़ाम बनाते हैं 2.दूसरे लोग जो सिर्फ़ अपने आबा व अजदाद की मक़बूलियत के बल बोते पर अपनी शोहरत व मक़बूलियत का सिक्का जमाने की कोशिश करते हैं,जब कि ख़ुद उन की ज़ात इल्मी व रूहानी कमालात से आरी होती है। 3.तीसरे वह अफ़राद जो ज़ाती और इज़ाफ़ी दोनों ख़ुबियों के मालिक होते हैं कि एक तरफ़ जहाँ ख़ुद उनकी शख़्सियत इल्म व फ़ज़्ल से आरास्ता होती है वहीं दूसरी जानिब उनके आबा व अजदाद की शोहरत व मक़बूलियत भी उनकी पुश्त पना ही करती है। मेरे ममदूह मौसूफ़ हज़रत ताजुश्शरीआ दाम ज़िल्लाहुलआली की शख़्सियत आख़री क़िस्म से तअल्लुक़ रखती है,जहाँ आप के रौशन ख़ान्दानी पसे मन्ज़र ने आप को बाम उरूज तक पहुँचाया है वही इस से कही ज़्यादा आप के इल्मी व रूहानी कमालात और दीनी व इल्मी ख़िदमात ने आप की शख़्सियत को रौशन और तांबनाक बनाया है।

तर्जुमा के मैदान में :

तर्जुमा निगारी के मैदान में भी हज़रत ताजुश्शरीआ की गिराँ क़द्र ख़िदमत हैं। दर हक़ीक़त तर्जुमा निगारी एक फ़न है,एक आर्ट है। उसको एक आम और आसान काम समझ लेना अक़्ल मन्दी नहीं। महज़ दो जबानें जानता तर्जमा निगारी के लिए काफी नहीं,हमारे मुलक में तक़रीबन हर पढ़ा लिखा शख़्स कम से कम दो तीन ज़बानें जातना है। लेकिन उन में से हर शख़्स एक ज़बान की तहरीर को दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करने की सलाहियत नहीं रखता। तर्जमा निगारी एक फ़न है और कोई भी फ़न बा आसानी नहीं आता,उसके लिए मशक और रियाज़त की ज़रूरत होती है।

तर्जमा का मत़लब किसी भी ज़बान के मज़मून को इस अन्दाज़ से दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करना कि क़ारी को यह एहसान तक न हो कि एबारत बे तरतीब है। या एबारत में पैवन्द कारी की गई है। कमा हक़्क़ाहु तर्जमा करना बहुत मुश्किल काम है। यह नगीना जड़ ने का फ़न है। तर्जमा में एक ज़बान के मुआनी और मत़ालिब को दूसरी ज़बान में इस त़रह मुन्तक़िल किया जाता है कि असल एबारत की ख़ोबी और मत़लब जू का तू बाक़ी रहे। दूसरे लफ़ज़ों में यूँ कह लीजिए कि तर्जमा महज़ एक बे रूह निक़ाली का नाम नहीं हैं बल्कि इस में असल का पूरा ख़्याल और मफ़हूम। उसी लोच और नरमी या उसी दुरिश्ती

और सख़्ती,इसी जाज़बियत और दिल कशी या उसी बे कैफ़ी और बे रंगी के साथ,उसी एहतियात के साथ आये और, ज़बान व बयान का भी वैसा ही मीआर हो।

सही मअनों में और कमा हक़्क़ोहु तर्जमा निगारी के लिए कम अज़ कम तीन शरतें हैं जो दर्ज ज़ैल हैं।

(1) जिस ज़बान से तर्जमा किया जा रहा है उस ज़बान की लोग़त से,इस्तिलाहात और मुहारों से,किसी क़द्र अदबियात से और थोड़ी बहुत तारीख़ से वाक़्फ़ियत और निखरा हुआ ज़ौक़ जरूरी है। यह ज़रूरी नहीं कि जिस ज़बान की तस्नीफ़ का तर्जमा करना है इस ज़बान पर भी तर्जमा करने वाले को माहिराना उ़बूर हासिल हो। या वह अस़ल एबारत या अस़ल तस्नीफ़ वाली ज़बान में खुद भी उसी त़रह़ बे तकल्लुफ़ और बे तकान लिख सकता या बोल सकता हो,बल्कि इस ज़बान का सिर्फ़ किताबी इल्म काफ़ी है। अस़ल एबारत या अस़ल तस्नीफ़ की ज़बान का इल्म सिर्फ़ किताबी नहीं बल्कि इस से कुछ ज़्यादा हो तो और अच्छा है। जितना ज़्यादा हुआ इतना ही अच्छा है। और अगर किताबी इल्म भी न हो तो ज़बान की बारिकियाँ और अस़ल क़लम कार के ख़ियाल की निज़ाकतें हाथ से निकल जायेंगी,अस़ल एबारत की नौक पलक पर तर्जमा करने वाले का ध्यान नहीं जायेगा।

(2)दूसरी शर्त यह है कि जिस ज़बान में तर्जमा करना है उस पर माहिराना उ़बूर हासिल हो,अस़ल तस्नीफ़ ज़बान से कहीं ज़्यादा कुदरत इस ज़बान में होनी चाहिए

जिस में तर्जमा करना मक़सूद है। यहाँ तक कि उस ज़बान में ख़ुद लिख लेने की अच्छी ख़ासी मश्क और उस ज़बान का पहलू दार इल्म होना चाहिए। पहलूदार इल्म से मुराद यह है कि उसके माख़ज़ का,जहाँ जहाँ से वह सैराब हुई है उन सर चशमों का,उस के नशीब व फ़राज़ का इल्म हो,अल्फ़ाज़ कहाँ से आये,किस तरह आये,उन के लग़वी मअ़ना किया था,इस्तिलाही मअ़ना किया हो गये और उन के हक़ीक़ी मअ़ना किया थे,मजाज़ी मअ़ना किया हो गये और किया हो सकते हैं। उनके रोज़ मर्रा और मुहाविरे क्यों कर बने उन में मुख़्तलिफ़ औक़ात में किया तब्दिलियाँ हुयें। एक लफ़्ज़ अपने दामन में कितने मुआ़नी रखता है और एक माद्दा से कौन कौन से अल्फ़ाज़ किस किस तरह बन सकते हैं ?

(3)तीसरी शर्त यह है कि जिस एबारत या तस्नीफ़ का तर्जमा करना मक़सूद है उस के मौज़ू और फ़न्न से मुनासिब ह़द तक वाक्फ़ियत हो क्योंकि मौज़ू और फ़न के बदलने से बसा औक़ात बहुत से अल्फ़ाज़ के मअ़ना बदल जाते हैं कभी ऐसा होती है कि एक ही लफ़्ज़ या एक ही तरकीब के अदब में कुछ और मअ़ना होते हैं नह़वो में कुछ और होते हैं और सर्फ़ में कुछ और,और मन्तिक़ में कुछ और मअ़ना हो जाते है। मसलन लफ़्ज़ कलिमा को ले लिजीए लोग़त में बात,ख़ुत्बा और क़सीदा के मअ़ना में आता है। नह़वो सर्फ़ में उसका मत़लब होता है वह लफ़्ज़ जो मअ़ना मुन्फ़रिद रखता हो,और अहले मन्त़िक़ की इस्तिलाह़ में

कलिमा का वही मअ़ना है जो नहवियों के नज़दीक "फ़ेअ़ल" का है। अब अगर तर्जमा करने वाले को यह मालूम नहीं कि इस लफ़्ज़ का किस फ़न में किया मअ़ना और वह लोग़त की मदद से तर्जमा कर देगा तो कभी ऐसा भी हो सकता है कि एबारत का सारा मफ़हूम ग़ारत हो जाये और तर्जमा,तर्जमा के बजाये "रजम" (एबारत) की संगसारी और क़त्ल व ख़ून का बाइस हो जाये।

मौज़ूअ़ और फ़न की वाक़फ़ियत से मुराद सिर्फ़ यही नहीं है कि अगर एबारत इल्म मुअ़ाशियात की है तो मआशियात की चन्द इस्तिलाहें जान ली जायें,या अगर अदबी मौज़ूअ़ है तो पहले से थोड़ी बहुत अदबी सोझ पैदा की जाये,बल्कि असल मौज़ूअ़ से वाक़फ़ियत के मआ कुछ और भी हैं। उस के यह भी मअ़ना हैं कि अगर किसी साहिब तर्ज़ अदीब या मख़सूस रुजहान और ख़ास ज़हनियत के मुसन्निफ़ की तस्नीफ़ का तर्जमा करना हो तो इस अदीब या मुसन्निफ़ के तर्ज़ फ़िक्र से रुजहान ख़ास ज़हनियत से आगाही हो। ज़रूरी नहीं कि पहले से इस की तमाम तसानीफ़ का मुताला हो बलिक यह काफ़ी है कि उस की सवानेह उमरी या ज़िन्दगी के ख़ास हालात और उस के तर्ज़ बयान के मुतअ़ल्लिक़ दूसरों की रायें मालूम कर ली जाये। यह भी न हो सके तो कम अज़ कम शर्त यह है कि जिस तस्नीफ़ का तर्जमा करना है उसे ख़ूब ग़ौर से एक बार अव्वल ताख़िर पढ़ लिया जाये और अगर ज़ेरे तर्जमा तस्नीफ़ पर दूसरों की रायें,तबसरे या तन्क़ीदें या

तआरुफ़ मिल सकें तो उन पर एक नज़र डाल ली जाये,उस के बाद तर्जमा का काम शुरू किया जाये। यह अच्छी तर्जमा निगारी के लिए ज़रूरी और बुनियादी बातें हैं मुतर्जम तर्जमा निगारी के दौरान उनका जिस हद तक लिहाज़ करेगा और ख़ुद उसकी ज़ात उन औसाफ़ व शराइत पर जिस हद तक पूरी उतरेगी। उस का तर्जमा इतनी उमदा शान्दार और असल एबारत या तस्नीफ़ के मफ़हूम को अदा करने वाला होगा।

अब उसकी रौशनी में जब हम ताजुश्शरीआ मद्दज़ुल्लाहुआली की शख़्सियत को देखते हैं तो न सिर्फ़ ज़रूरी हद तक उन औसाफ़ व शराइत का जामे पाते हैं। बल्कि दोनों ज़बानों में ज़बर दस्त महारत और कमाल का हामिल पाते हैं। उर्दू तो उन की मादरी ज़बान ही है और अरबी या अंग्रेज़ी में वह अहले ज़बान जैसी महारत रखते हैं। इन दोनों ज़बानों में वह बिला झिझक और बरजस्ता लिखने और बोलने की सलाहियत रखते हैं। इसलिए तर्जमा निगारी के बाब में आप के नोके क़मल से कई अहम और शानदार कालम आलमे वजूद में आयें हैं।

जब हम इस हैसियत से आप की ख़िदमात का जाइज़ा लेते हैं तो दर्ज ज़ैल कारनामे हमारे सामने आते हैं और क़लब व निगाह के लिए सामान तस्कीन फ़राहम करते हैं।

1.तर्जमा : "अलमोअतकदुलमुन्तक़द"वलमुस्तनदुलमोअतमद"(अरबी से उर्दू)

2.तर्जमा : अज़्ज़ुलालुल अन्क़ा मिन बहरे सबक़तुलइतक़ा(अरबी से उर्दू)

3.तर्जमा "फ़िक़्ह शहनशाह बिअन्नलक़ुलूब बेदारिमहबूब बेअताअल्लाह"उर्दू (से अ़रबी)

4.तर्जमा : "अतायलक़दीर फ़ी हुक्मित्तसदीर" (उर्दू से अ़रबी)

5.तर्जमा : "अहलाकुलवहाबिईन"उर्दू से अ़रबी"

6. "तयस्सुरुलमाऊन"(उर्दू से अ़रबी)

7. "अलहादिलकाफ़ फ़ी अह्कामिलज़ुआफ़"

8. "शमुलुइस्लाम अलउसूलुर्रसूल किराम"(उर्दू से अ़रबी)

इन में से जो किताबें हमें दस्तियाब हो सकीं उनका तआरूफ़ पेश ख़िदमत है:

1. "अलमोअ़तकदुलमुन्तक़द"वलमुस्तनदुलमोअ़तमद"(बिना नुजातुलअबद)

"अलमोअ़तकदुलमुन्तक़द"अ़रबी ज़बान में ख़ातिमुलमुह़क़्क़िक़ीन अ़ल्लामा फ़ज़ले रसूल क़ादरी, बदायूँ अ़लैहिर्रह़मा वर्रिज़वान (1289हिजरी)की अ़रबी ज़बान में गिराँ क़दर और अ़ज़ीमुश्शान तस्नीफ़ है। यह किताब अ़क़ाइद व कलाम के मौज़ूअ़ पर बे नज़ीर और यगाना है। इस किताब में एक मुक़द्दमा,चार अबवाब और एक ख़ातमा है। मुक़द्मा में हुक्म की तीनों क़िस्म,अ़क़्ली,मादी,और शरई को बयान करने के बाद हुक्मे अ़क़्ली की अक़साम वग़ैरा को भी बयान किया गया है। जब कि बाब अव्वल इलाहियात,बाब दोम अ़क़ाइद नबुव्वत,बाब सोम मसाइल समइया और बाब चहारुम मसाइल इमामत क़ुबरा के बयान में है। और ख़ातमा किताब में ईमान व कुफ़्र और बिदअ़त व बिदअ़ती से मुतअ़ल्लिक़ कुछ अह्काम की तफ़सील है।

किताब की अहमियत व इफ़ादियत के पेशे नज़र हज़रत मौलाना क़ाज़ी अ़ब्दुलवहीद फिरदौसी,अ़ज़ीम आबादी

ने उसको छपवाने का इरादा फ़रमाया और मुम्बई का छपा हुआ एक नुस्ख़ा उन्हें दस्तयाब हुआ तो उन्हों ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान(1921ई1340हिजरी)की बारगाह में तस्हीह के लिए भेजा। तस्ही के दौरान आला हज़रत अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान ने महसूस किया कि उस पर जा बजा हवाशी और तअलीक़ात की ज़रूरत है,कसरत मसरूफ़ियात की वजह से आप ने उस पर बहुत ज़्यादा तफ़सीली हवाशी के बजाये जगह–जगह मुख़्तसर और जामेअ तअलीक़ात रक़म फ़रमायें और फिर बाज़ अहम मक़ामात पर अल्लामा शाह वसी अहमद मुहद्दिस सूरती अलैहिर्रहमा की गुज़ारिश पर तफ़सीली हवाशी भी लिखे। और उनका नाम" "वलमुस्तन दुलमोअतमद बिना नुजातुलअबद"रखा जिस से"1320 हिजरी के आदाद निकलते हैं। इमाम अहमद रज़ा कुद्दुस सिर्रुहु ने इतनी इजलत और सुरअत से यह तअलीक़ात लिखें कि ख़ुद फ़रमाते हैं : अन्नत्तबअ जार,वलक़लम सार, व फ़ुरसती मादूमा,व अशग़ाली मालूमा(यानी उधर तबाअत का काम जारी है और(उधर)मेरा क़लम रवाँ है। फ़ुरसत मादूम है और(मेरी)मसरूफ़ियात(सब को मालूम हैं)मगर उसके बावजूद यह तालीक़ात किताब की एक जामेअ,गिराँ क़द्र और शान्दार शरह इब्न गयें,और उस में उस दौर के बहुत से गुमराह और बद्दीन गिरोह हों का वाज़ेह हुक्म और जामेअ बयान भी आ गया। अलहम्दुल्लिाह। यह किताब मअ शरह जामिआ अशरफ़िया,मुबारकमुर की सर

बराही में तन्ज़ीमुलमदारिस अहले सुन्नत के लिए तशकील होने वाले जदीद निसाब तालीम में शामिल की जा चुकी है और उसके दर्स का सिलसिला भी जारी हो चुका है। 1420 हिजरी 1999ई में"अलमजमुउलइस्लामी"मुबारकपुर की ज़ेरे निगरानी रज़ा एकेडमी मुम्बई ने जब नये अन्दाज़ में उस की तबाअत करानी चाही तो उस्ताज़ गिरामी हज़रत अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही दाम जिल्लाहु सदुरुल मुदर्रिसीन जामिआ अशरफिया,मुबारक पुर की तस्हीह व तजदीद और गिराँ क़द्र आलिमाना अरबी मुक़द्दमा के साथ उसकी शान्दार तबाअत कराई।

इस किताब की अहमियत व इफ़ादीयत के पेशे नज़र हज़रत ताजुश्शरीआ अल्लामा अजहरी साहब दाम ज़िल्लाहुलआली ने उर्दू ज़बान में उन दोनों किताबों का शान्दार,गिराँ क़द्र और वकी तर्जमा फ़रमाया। यह तर्जमा इतना उमदा,सलीस और शश्ता है कि यह तर्जमा नहीं बल्कि उर्दू ज़बान में मुस्तकिल तस्नीफ़ की हैसियत रखता है। उस में असल के अलफ़ाज़ की मुकम्मल रिआयत के साथ मज़मून को बहुत वाज़ेह अन्दाज़ में इस तरह अदा किया गया है कि सलासत व रवानी कही भी मुतास्सिर होती नज़र नहीं आती। हर साहिब इल्म जानता है कि इल्मे कलाम की किताबों में फ़लसफ़ा व मन्तिक़ के मुबाहिस और इस्तिलाहें कसरत से इस्तेमाल की जाती हैं,जिन को अरबी ज़बान से मुन्तक़िल कर के उर्दू के क़ालिब में ढालना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन हज़रत ताजुशरीआ दाम ज़िल्लहु

ने अपने लिसानी व अदबी कमाल व महारत से उसको बहुत आसानी के साथ उ़मदा पैराये में उर्दू ज़बान में कर दिया दिखाया है अब ज़ैल में अस़ल किताब की एबारत के साथ तर्जमा का एक नमूना क़ारीइन किराम की ख़िदमत में पेश है जिस से तर्जमा की उ़मदगी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है अ़रबी एबारत अज़ इमाम अह़मद रज़ा कुद्दुस सिर्रुहु :

तर्जुमा:अज़ ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ दाम ज़िल्लहुः

"और उन्हें में से मिरज़ाई फ़िर्क़ा है और हम उन लोगों को मिरज़ा गुलाम अह़मद क़ादयानी की त़रफ़ मन्सूब कर के"ग़ुलामी"कहते हैं यह एक दज्जाल है जो उस ज़माना में निकला तो पहले उस ने ह़ज़रत ईसा मसीह़ अ़ला नबियना व अलैहिस्सलात वस्सलाम के जैसा होने का दअ़वा और ख़ुदा की क़सम उस ने सच कहा वह झूटे मसीह़ दज्जाल के मिस्ल है फिर उसकी ह़ालत ने तरक़्क़ी की,तो उसने अपनी त़रफ़ वह़ी का दअ़वा किया और बेशक वह ख़ुदा की क़सम सच्चा है इसलिए कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है। شياطين الانس والجن يوحى بعضهم الىٰ بعض زخرف القول غروراً(सूरतुलअन्आम आयत 112)

आदमियों और जिन्नों में के शैत़ान कि उनमें एक दूसरे पर ख़ुफ़िया डालता है बनावट की बात धोके को।(कन्ज़ुलईमान) रहा उसका उस दअ़वा(अ़ज़म) वह़ी को अल्लाह की त़रफ़ करना और अपनी किताब "बराहीने ग़लानिया"को कलामुल्लाह अ़ज़ व जल क़रार देना तो यह भी इन बातों

से है जो इब्लीस ने उस से चुपके से कह दीःकि तू मुझ से ले ले और आलाहुलआ़लामीन की त़रफ़ मन्सूब़ करदे"

फिर खुल कर उसने नबुव्वत व रिसालत का दअ़वा किया और कहा : वही है अल्लाह जिस ने अपना रसूल क़ादियान में भेजा और उसने यह कहा कि अल्लाह ने जो उतारा उस में यह आयत है कि हम ने उसको क़ादयानी में उतारा और वह ह़क़ के साथ नाज़िल हुआ। और यह गुमान किया कि यह वही अह़मद है जिस की बशारत मरयम के बेटे ने दी और वही अल्लाह तआ़ला के उस फ़रमान से मुराद है जिस में अल्लाह ने फ़रमाया उस रसूल की ख़ुश ख़बरी देने आया जो मेरे बाद होगा उस का नाम अह़मद होगा और उस का गुमान यह है कि अल्लाह तआ़ला ने उस से फ़रमाया,बेशक तुम इस आयत के मिस़दाक़ हो। आयत هو الذی ارسل رسوله بالهدیٰ و دین الحق لیظهره علی الدین کله۔(सूरतुल फ़तह आयत 28)वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे। (कन्ज़ुलईमान)फिर अपनी कमीन ज़ात को बहुत सारे अम्बिया व मुरसलीन स़लात अल्लाह अ़लैहिम व सलामहु से अफ़ज़ल बताने लगा और नबियों रसूलों में कलमतुल्लाह व रूहुल्लाह को ख़ास़ कर के कहा इब्ने मरयम के ज़िक्र को छोड़ो। इस से बेहतर ग़ुलाम अ़ह़मद है और जब उस से मुवाखिज़ा किया गया कि तो ईसा रसूलुल्लाह अ़लैहिस्स़लात वस्सलाम के जैसे होने का दावा करता है तो कहाँ हैं वह ज़ाहिर निशानियाँ जो ईसा

अ़लैहिस्सलाम लाये,जैसे मुरदों को ज़िन्दा करना, मादर ज़ाद आंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देना,और मिट्टी से परिन्दा की शक्ल बनाना,फिर उस में फूंक मारते तो वह अल्लाह के हुक्म से उड़ता परिन्दा हो जाता तो,उसने जवाब दिया ईसा यह काम मुसमर यज़म से करते थे(मुस्मर यज़म अंग्रेज़ ज़बान में एक क़िस्म का शोअ़बदा है तो उस ने कहा और अगर यह न होता कि मैं उन जैसी बातों को नापसन्द करता हूँ तो मैं भी ज़रूरी दिखाता और जब मुस्तक़बिल में होने वाली ग़ैब की ख़बरें बहुत बताने का आ़दी हो और उन पेशन गोइयों में उसका झूट बहुत ज़्यादा ज़ाहिर होता अपने मर्ज़ की उसने दवा यूँ की कि ग़ैबी ख़बरों का झूट होना नबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं इसलिए कि बे शक यह चार सो नबियों की ख़बरों में ज़ाहिर हुआ और सब से ज़्यादा जिन की ख़बरें झूटी हुयें ईसा(अ़लैहिस्सलाम)हैं और बद बख़्ती के ज़ीनों में चढ़ते चढ़ते उस दर्जा को पहुँचा कि वाक़िअ़तन हुदैबिया को उन्हें झूटी ख़बरों में शुमार किया,तो अल्लाह की ज़ात लोग़त हो उस पर कि जिस ने अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को ईज़ा दी, और अल्लाह की लअ़नत उस पर हो कि जो अम्बिया में से किसी को ईज़ा दे व सल्लल्लाहु तआ़ला आ़ला अम्बिया व बारिक वसल्लम''(5)

अलहादुलकाफ़ फी अहकामिज़्ज़ुआ़फ़ :

यह किताब आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा

क़ादरी,बरेलवी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के दर्ज जैल तीन रिसालों का अरबी में तर्जमा है।(1)मुनीरुलऐन फ़ी हुक्मे तक़बीलुअबहामीन (2)अलहादुलकाफ़ फ़ी हुक्मिज़ुआफ़ (3) मदारिज़ तबक़ातुलहदीस। यह तिनों रिसाले फ़तावा रज़विया जिल्द दोम,किताबुस्सलात,बाबुलआज़ान वलइक़ामतु में शामिल हो कर छप चुके हैं जो जहाज़ी साइज़ के एक सौ छः सफ़हात को घेरे हुये हैं। उन में पहला रिसाला मुस्तक़िल और बाद वाले दोनों ज़िम्नी रिसाले हैं।

पहले रिसाले में इस्म रिसालत सुन कर उंगूठे चूमने और आँखों से लगाने का जवाज़ व इस्तिहसान आलिमाना,फ़क़ीहाना और मुहद्दिसाना अन्दाज़ में आफ़ताब निसफ़ुन्नहार की तरह वाज़ेह और ऐयाँ किया गया है। और दूसरे रिसाला में तबक़ात हदीस के मदारिज को निहायत मुहद्दिसाना अन्दाज़ में बयान किया गया है। इन रिसालों में तीस जलीलुल क़द्र मुहद्दिसाना इफ़ादात और बारा अजीमुलमुरत्तब आलिमाना फ़वाइद हैं जिन में हदीस ज़ईफ़ के अहकाम बड़े शरह व बस्त से अइम्मा हदीस की वाज़ेह तसरीहात की रौशनी में बयान किए हैं। यह रिसाला सही मअनों में "मुनीरूलऐन"आखें रौशन करने वाला है।

हज़रत ताजुश्शरीआ दाम ज़िल्लुहुन्नूरानी ने उन रिसालों की अहमियत और इल्मी क़द्र व क़ीमत को महसूस करते हुये उन का फ़सीह अरबी में तर्जमा फरमाया और मौज़ू का लिहाज़ करते हुये असल नाम के बजाये तिनों के मजमूए का नाम"अलहादुलकाफ़ फ़ि अहकामिज़्ज़ुआफ़"रखा।

जैल में असल किताब की छः एबारत,फिर हज़रत ताजुश्शरीआ का अरबी तर्जमा कारईन किराम की ख़िदमत में बतौर नमूना पेश है ताकि वह खुद तर्जमा मुलाहिज़ा कर के उस की अहमियत महसूस कर सकें।

नमूना :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा रिसाला"मुनीरुऐन"में खुतबा के बाद फरमाते हैं:

हुज़ूर पुरनूर शफ़ीअे यौमुन्नुसुर,साहिबे लौलाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम पाक अज़ान में सुन्नते वक़्त अंगूठे या अंगुश्तान शहादत चुम कर आँखों से लगाना कतअन जाइज़ है। जिस के जवाज़ पर मक़ाम तबर्अ में दलाइल कसीर क़ाइम और खुद अगर कोई दलील ख़ास न होती तो मनआ पर शरअ से दली न होना ही जवाज़ के लिए दलील काफ़ी था। जो नाजाइज़ बताये सुबूत देना उसके जिम्मे है कि काइल जवाज़ के लिए दली काफ़ी था। जो नाजाइज़ बताये सुबूत देना इस के ज़िम्मे है कि काइल जवाज़ मुतमस्सिक ब असल है,और मुतमस्सिक बा असल मोहताज दलील नहीं। फिर यहाँ तो हदीस व फ़िक़्ह,इरशाद उलमा व अमल क़दीम सलफ़े सुलहा सब कुछ मौजूद। उलमा–ए–मुहद्दीसिन ने उस बाब में हज़रत ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यदिना सिद्दीक़ अकबर व हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यदिना इमाम हसन व हुसैन व हज़रत नक़ीबे औलिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला

अ़लैहि वसल्लम सय्यदिना अबूलअ़ब्बास ख़िज़्र अ़लल हबीबुलकरीम व अ़लैहिम जमीअ़न अस्सलातु वत्तस्लीम वग़ैराहुम अकाबिरे दीन से ह़दीसें रिवायत फ़रमायें जिस की क़दरे तफ़सील इमाम अ़ल्लामा शमसुद्दीन सख़ावी रहेमाहुल्लाहु तआ़ला ने किताब मुस्तताब "मक़ासिद ह़सना" में ज़िक्र फ़रमाई और जामेउर्रुमूज़,शरह़ निक़ाया, मुख़्तसुरुल वक़ाया व फ़तावा सौफ़िया व कन्ज़ुलऐबाद व रद्दुमुह़तार ह़ाशिया दुर्रे मुख़्तार वग़ैराह कुतुब फ़िक़्ह में इस फ़ेअ़ल के इस्तिह़बाब व इस्तिह़सान की साफ़ तस़रीह़ आई"। (2)

अ़त़ायलक़दीर फी हुक्मित्तस्वीर :

यह रिसाला आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी क़ुद्दिसा सिर्रुहु का एक शाहकार फ़तवा है,इस का मौज़ू है "तस्वीरों के अह़काम" 1331हिजरी को आप की बारगाह में यह सुवाल पेश हुआ कि किसी दीनी मुअ़ज्ज़ शख़्स की तस्वीर बत़ौर तर्बरुक मकानों में रखना जाइज़ या नहीं? उस के जवाब में आप ने जान्दार चीज़ों की तस्वीर के ह़राम होने पर वह आ़लिमाना तह़क़ीक़ पेश फ़रमाई जो आप की फ़क़ीहाना अबक़रियत व कमाल का मुंह बोलता सुबूत है।

इस रिसाले में आप ने यह बयान फ़रमाया है कि जान्दार की मम्नूअ़ तस़्वीरों की कराहत और मम्नूआ़त की मशाइख़ किराम ने एक तो यह इल्लत बताई है कि इस में एबादत स़नम की मुशाबिहत पाई जाती है दूसरी इल्लत यह है कि जहाँ मम्नूअ़ तस़्वीर रखी हो वहाँ मलाइका(फ़िरिश्ते)

नहीं जाते,और जिस मकान में फिरिश्ते न आयें वह हर जगह से बदतर है। तीसरी इल्लत तअ़ज़ीम और तशबीह है।

आगे इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी अ़लैहिर्रमा फ़रमाते :

"मुअ़ज़्ज़म तह़क़ीक़ यह है कि तह़रीमे त़स्वीर की अस़ल इल्लत ताज़ीम है ताज़ीम ही से तशबिह पैदा होता है और ताज़ीम ही से मलाइका रह़मत नहीं आते। व लिहाज़ा इहानत की सूरतें जाइज़ रखी गई हैं कि फ़र्श में हो जिस पर बैठें,खड़े हों,पाऊ रखें वग़ैरा,अगर्चे ऐसी तस्वीरों का भी बनाना बनवाना ह़राम है।

और तशबिह की दो क़िम्स है: एक अ़ाम कि मुत़लक़न तस्वीर मम्नूअ़ को बरोजा ताज़ीम रखने से ह़ासिल होता है। दूसरा तशबिह ख़ास़ कर उस के एलावा नफ़िल नमाज़ में मुसल्ला के किसी फ़ेअ़ल या हैयत से ज़ाहिर हो,मसलन तस्वीर को सामने रख कर उस की त़रफ़ अफ़आ़ल नमाज़ बजालाना यह अशद व अख़बस है।

तस्वीर की इल्लत कराहियत तशबिह एबारत है चाहे तशबिह ख़ास़ हो या अ़ाम,मगर इतना ज़रूर है कि वह तस्वीरें ऐसी हों जिन्हें मुश्रिकीन पुजते हैं और जिन्हें नहीं पुजते तो वह बुत के हुक्म में नहीं"

फिर आला ह़ज़रत ने ऐसी तस़्वीरों की चन्द क़िस्में बयान फ़रमाई हैं जिन्हें ताज़ीम से रखने या उन की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने से तशबिह एबादत व स़नम नहीं होता और लिखा है कि सब मुजिबे कराहत नहीं।

यह रिसाला अपने मौज़ूअ़ पर निहायत मुदल्लिल और मुहक़्क़िना रिसाला है,यह फ़तावा रज़विया,जिल्द नहुम, निस्फ़ आख़िर में शामिल है जो स.47 से स.62 तक फैला हुआ है इस तरह यह जहाज़ी साइज के उठठारह सफ़हात को मुहीत है।

रिसाला की इल्मी अहमियत और जलालत शान के पेश नज़र हज़रत ताजुश्शरीआ़ दाम जिल्लुहुलआ़ली ने रवा अरबी जबान में इस का तर्जमा फ़रमाया है। तर्जमा का नमूना मअ असल एबारत के ज़ैल में नज़र कारेईन है।

नमूना:

अल्लाह अ़ज्ज़ व जल्ल ! इब्लीस के मक्र से पनाह दे। दुनिया में बुत परस्ती की इब्तिदायूँ हुई कि सालेहीन की मोहब्बत में उनकी तस्वीरें बना कर घरवालों और मस्जिदें में तबर्रुकन रखें और उन से लज़्ज़त एबादत की ताईद समझी। शुदा शुदा वही मअ़बूद हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मुतवातिर हदीसों में फरमाया "لاتدخل الملائكة بينا فيه كلب"ولا صوره"रहमत के फिरिश्ते उस घर में नहीं आते जिस में कुत्ता या तस्वीर हो और उस में किसी मुअ़ज़्ज़म दीनी की तस्वीर होना या न उ़ज़्र हो सकता है,न इस वबाल अ़ज़ीम से बचा सकता है,बल्कि मुअ़ज़्ज़म दीनी की तस्वीर ज़्यादा मुजिब वबाल है कि उसकी ताज़ीम की जायेगी,और तस्वीर ज़ी रूह की ताज़ीम ख़ासी बुत पुरस्त की सूरत और गोया मिल्लते

इस्लामी से सरीह़ मुख़ालिफ़त है। अभी ह़दीस सुन चुके कि वह औलिया ही की तस्वीरें रखतें थे जिस पर उनको बदतरीन ख़ल्कुल्लाह फ़रमाया। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलात वस्सलाम से बढ़ कर कौन मुअ़ज़्ज़म दीन होगा,और नबी भी कौन?ह़ज़रत शैख़ुलअम्बिया ख़लील किबरिया सय्यदिना इब्राहीम अ़ला इब्निहिलकरीम अफ़ज़लुस्सलात वत्तस्लीम कि हमारे हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बाद तमाम जहान से अफ़ज़ल व आ़ला हैं,उनकी और ह़ज़रत सय्यदिना इस्माईल ज़बीहुल्लाह व ह़ज़रत बतूल मरयम अ़लैहिमुस्सलात वस्सलाम की तस्वीरें दीवार काबा पर कुफ्फ़ार ने नक़्श की थी,जब मक्का मुअ़ज़्ज़मा फत्ह हुआ,हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अमीरूल मोमिनीन फारूक़े आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को पहले भेज कर वह सब महव करा दें। जब काबा मुअ़ज़्ज़मा में तशरीफ फरमा हुये बाज़ के निशान कुछ बाक़ी पाये,पानी मंगाकर बा नफ़िस नफीस उन्हें धो दिया और बनाने वालों को "क़ातलहुमुल्लाह फरमाया(अल्लाह उन्हें क़त्ल करे)

शुमुलुलइस्लाम ले उसूलिर्रुसूलिलकिराम:

इस रिसाला का मौज़ूअ़"सुरूर कौनैन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के आबा किराम और मुहिम्मात मुकर्रमात का इस्लाम व ईमान"है। 21,शव्वाल1315हिजरी को आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी कुद्दुस सिर्रुहु

की बारगाह में ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद अ़ब्दुलग़फ्फ़ार क़ादरी मुदर्रिस आ़ला मदरसा जामेउ़लउलूम जामे मस्जिद, बंगलौर की जानिब से यह सवाल आया कि सरवरकाइनात मुह़म्मद मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के माँ बाप ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तक मोमिन व मौह़िद थे या नहीं ?

इस के जवाब में आप ने यह अ़ज़ीमुश्शान मुह़क्क़ाना रिसाला तह़रीर फ़रमाया और कुरआन व ह़दीस के दस मुस्तहकम दलाइल और मुतअ़द्दिद वजूह से सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के अबवैन करीमैन के ईमान को साबित फ़रमाया और यह भी लिखा है है पैंतीस जलीलुलक़द्र उलमा-ए-किराम व आइम्मा-ए-किबार का यही मज़हब मुख़्तार है फिर उन सभी के नाम भी ज़िक्र फ़रमाये और आख़ीर में ह़ज़रत आमना रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के कुछ अशआ़र भी नक़्ल किए हैं जो उन्होंने वक़्त वफ़ात अपने फर्ज़न्द करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की त़रफ़ नज़र कर के कहे थे,उन अशआ़र से भी उन का इस्लाम व ईमान साबित होता है।

यह रिसाला फ़तावा रज़विया की ग्यारहवीं जिल्द में सफ़हा नम्बर 154 से सफ़हा नम्बर 171 तक फैला हुआ है। इस त़रह़ यह बड़े साइज़ के उठठारह सफ़ह़ात को मुह़ीत है। इस में मजमूई त़ौर पर इक्तालीस ह़दीसें मौज़ूअ़ के सुबूत में पेश क़ी गई हैं। यह रिसाला निहायत रूह़ परवर

और ईमान अफ़रोज़ है और ईमान अबवैन के मौज़ू पर एक मुन्फ़रिद शान का हामिल है।

हज़रत ताजुश्शरीआ अल्लामा अज़हरी साहिब दामज़िल्लाहुआली ने फ़सीह व बलीग़ अरबी में इस का तर्जमा फ़रमाया है,यह तर्जमा निहायत वक़ीअ,सलीस और शस्ता है जो दोनों ज़ुबनों में हज़रत की महारत का रौशन सुबूत है।

असल रिसाला की कुछ एबारत बतौन नमूना हज़रत ताजुश्शरीआ दाम जिल्लाहु के अरबी तर्जमा के साथ नज़रे क़ारेईन है।

नमूनाः

"जब सहीह हदीसों से साबित हुआ कि हर क़र्न व तबक़ा रूये ज़मीन पर (कम अज़ कम)सात मुसलमान बन्दगाने मक़बूल ज़रूर हैं,और ख़ुद सहीह बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से साबित हुआ कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिन से पैदा हुये वह लोग हर ज़माने,हर क़र्न में ख़्यार क़र्न से थे और आयत क़ुरानिया नातिक़ कि कोई मुश्रिक अगर्चे कैसा ही शरीफ़ुलक़ौम, बिन्नसब हो किसी ग़ुलाम मुसलमान से भी ख़ैर व बेहतरीन नहीं हो सकता। तो वाजिब हुआ कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आया अमहात हर कर्न व तबक़ा में उन्हें बन्दगाने सालेह व मक़बूल से हों,वरना मआज़ल्लाह सही बुख़ारी में इरशादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम और कुरआन अज़ीम में इरशाद हक़ जल्ल व अ़ला के मुख़ालिफ़ होगा"। (6)

फ़िक़्हे शहिन्शाह व अन्नलकुलूब बेयदिलमहबूब बेअ़तायलल्लाह

महल्लाह फील ख़ाना,कानपुर से 1326 हिजरी को सय्यद मुहम्मद आसिफ़ साहिब ने दर्ज ज़ैल अल्फ़ाज़ में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान के पास इस्तिफ़ता भेजाः

"हामी–ए–सुन्नत,माही बिदअ़त,जनाब मौलाना साहिब दामत फीयूज़हुम,बाद सलाम मस्नूनुलइस्लाम इल्तिमास बरई कि इन दिनों जनाब वाला का दीवान नअ़तिया कम तरीन के ज़ेरे मुताला है। बसद आदाब मुलाज़िमान हुज़ूर की ख़िदमत बा बरकत में मुलतमिस हों कि दो मिसरा के अल्फ़ाज़ शरअ़न काबिल तरमीम मालूम होते हैं और ग़ालिबन इस हेच मदाँ की राये से मुलाज़िमान सामी भी मुत्तफ़िक़ हों और दर सूरत अ़दम इत्तिफ़ाक़ जवाब बा सवाब से तशफ़्फ़ी फ़रमायें। "हाजियों! आओ शाहिन्शाह का रोज़ा देखो"

इस मिस़रअ़ में लफ़्ज़"शाहिन्शा"ख़िलाफ़ हदीस मुमानिअ़त दर बार–ए–क़ौल"तिलकलमलूक" है बचाये शाहिन्शाहे अगर"मरे शाह"हो तो किसी क़िस्म का नुक़सान नहीं दूसरा यह मिस़्रअ़ हज़रत ग़ौसे आज़म कुद्दुस सिर्रुहु की तारीफ़ मेंः

"बन्दा मजबूर है,ख़ातिर यह है क़ब्ज़ा तेरा"

सहीह हदीस शरीफ़ से साबित है कि दिल ख़ुदावन्द

करीम के क़ब्ज़ा कुदरत में हैं और वह ज़ात मक़ल्लिबुकुलूब है। चुंकि इस हेच मदाँ,सराया इस्याँ को मुलाज़मान जनाब वाला से ख़ास अक़ीदत व इरादत है। लिहाज़ा उमीदवार है कि यह तहरीर महज़''अदि्दनुन्नसह'' पर महमूल फ़रमाई जाये। बख़ुदा फ़िदवी ने किसी और ग़र्ज से नहीं लिखा''

इन दोनों सवालों के जवाब में इमाम अहले सुन्नत सय्यदिना आला हज़रत अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान ने ऐसी तफ़सीली और मुहक़्क़ाना बहस फ़रमाई कि उस ने एक रिसाला की शक्ल इख़्तियार कर ली।

पहले मिसरा पर तन्क़ीद के जवाब में आप ने जो तहक़ीक फ़रमाई उसका ख़ुलासा यह है।

(1)''शहिनशाह''का अगर मअना मजाज़ी मक़सूद हो और अज़ राह तकब्बुर इस का इस्तेमाल न हो तो उसका इतलाक़ अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा और मुक़र्रब बन्दों पर बिला शुबह जाइज़ व दुरुस्त है।

(2) अगर कोई शख़्स तकब्बुर के तौर पर से अपने लिए इस्तेमाल करे तो बिला शुबह यह नाजाइज व ह़राम होगा। बल्कि मअना हक़ीक़ी इस्तिग़राक़ी की सूरत में कुफ़्र हो जायेगा।

और दूसरे मिस़रा पर 'तन्क़ीद के जवाब में जो तन्क़ीद पेश की उसका ख़ुलासा यह है कि:

''मक़ल्लिबुलकुलूब''मअ़ना ह़क़ीक़ी के एअतिबार से अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के लिए ख़ास है,लेकिन अल्लाह ने अपने ख़ास बन्दों को भी इस ताक़त व कुव्वत से नवाज़ा है,

इस लिए अताई मान कर उसका इतलाक़ ग़ैरुल्लाह पर भी हो सकता है,उस में शरअन कोई ख़राबी नहीं।

यह रिसाला अपने मौज़ूअ़ पर निहायत गिराँ क़दर, बेश और मुहक़्क़ाना है,इस से आला हज़रत अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान के इल्मी तबहर,कुव्वते इस्तिदलाल,हिफ़्ज़ व इस्तिहज़ार और आ़लिमाना ज़रफ़ निगाही और मुहक़्क़ाना फ़िक्र व बसीरत का बा ख़ुबी इज़हार होता है।

इस वक़्त रिसाले का जो नुस्ख़ा मेरे सामने है वह''शहिन्शाह कौन''के नाम से इदारा अफ़कार हक़,बाइसी बाजार पुरनिया(बिहार)का मत़बूआ है। यह 36×23/16 साइज़ के पचपन सफ़हात पर मुश्तमिल है।

हज़रत ताजुशरीआ दामत बरकातुहुमुलआ़लिया ने इस रिसाला के मौज़ूअ और मज़मून की अहमियत व इफ़ादीयत के पेशे नज़र अ़रबी ज़बान में उस का निहायत शान्दार तर्जमा फ़रमाया है। बतौर नमूना ज़ैल में असल ऐबारत मअ़ तर्जमा पेशे खिदमत है :

नमूनाः

आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी कुद्दुस सिर्रुहु ग़ैर ख़ुदा पर लफ़्ज़''शहिन्शा''का इत्तलाक़ व इस्तेमाल मुतअ़द्दिद उलमा–ए–किराम,मशाइख़े एज़ाम और अइम्मा एलाम के हवाले से पेश करने के बाद लिखते हैं :

''ग़र्ज़ कलिमात अकाबिर में उसके सदहा नज़ाइर मिलेंगे। हमें किया लाइक़ है कि उन तमाम आइम्मा व फ़ुक़हा व उ़लमा व उ़र्फ़ा रहिमाहुम अल्लाह तआ़ला व

कुदरत इसरार हुम पर तअ़न करें। वह हुम से हर त़रह़ से अ़रफ़ व आलम थे। लिहाजा वाजिब कि बतौफ़ीक़ इलाही नज़र फ़क़्ही से काम लें और इस लफ़्ज के मना व जवाज़ में तह़क़ीक़ मनात़ करें,कि मसअला क़तअ़न माक़ूलुल मअ़ना है न कि मह़ज़ तअ़बुदी।

फ़अक़ुल व बिल्लाहित्तौफ़ीक़: ज़ाहिर है कि अस़ल मन्शा से मना इस लफ़्ज़ का इस्तिग़राक़ ह़क़ीक़ी पर ह़मल है,यानी मौसूफ़ का इस्तिस्ना तो अ़क़्ली है कि ख़ुद अपने नफ़्स पर बादशाह होना माक़ूल नहीं,उस के सिवा जमीअ़ मलूक पर सुलत़नत और यह माना क़तअ़न मुख़तस़ ब ह़जरत इज़्ज़त अ़ज़्ज़ जलालोहु और उस मअ़ना के इरादे से अगर ग़ैर पर इतलाक़ हो तो स़राह़तन कुफ़्र है कि उस के इस्तिग़राक़ ह़क़ीक़ी में रब्ब अ़ज़्ज़ व जल्ल भी दाख़िल होगा। यानी मआ़ज़ल्लाह मौसूफ़ को इस पर भी सुलत़नत है। यह हर कुफ़्र से बदतर है। मगर ह़ाशा ना हर गिज़ कोई मुसलमान उस का इरादा कर सकता है न ज़नहार कलाम मुस्लिम सुन कर किसी का इस त़रफ़ ज़हिन जा सकता है,बल्कि क़तअ़न क़तअ़न ओ़हद या इस्तिग़राक़ उ़र्फ़ी ही मुराद,और वही मफ़हूम व मुस्तफ़ाद होता है कि क़ाइल का इस्लाम ही उस का इरादा पर क़रीना ह़ातिआ़ है,जैसा कि उ़लमा ने मुवहिद के अंबतुर्रबीउ़लबक़्ल(मौसम रबीअ़ ने सबज़ा उगाया)कहने में तस़रीह़ फ़रमाई" 8

अहलाकुलवहाबीईन अ़ला तौहीन कुबूरुलमुस्लिमीन :

मौलाना मुहम्मद उ़मरुद्दीन क़ादरी हज़ारवी

अलैहिर्रहमा के पास यह सवाल आया कि अहले सुन्नत के किसी क़दीम क़ब्रिस्तान की क़बरों को खोद कर अपने रहने के लिए मकान बनाना मज़हब हन्फ़ी की रुह से जाइज़ है या नाजाइज़ ? और ऐसा करने से क़बरों में मदफून मुरदों की तौहीन है या नहीं ?

इस के जवाब में मौलाना हज़ारवी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि अम्बिया,औलिया और शौहदा की क़ब्रें ढा कर उन की तौहीन करना फ़िर्का मुब्तदअ वहाबिया का शआर हो चुका है। वहाबिया के पेशवाओं की किताबें ऐसे मज़ामीन से भरी हुई हैं जिन से उन ख़ासान ख़ुदा की अहानत होती है। तो जब उन महबूबाने बारगाहे इलाही की तौहीन उनके मज़हब में रवा है तो आम मोमिनीन की क़ब्रों को ढाना और उनकी तौहीन करना उनके मकान बनाना,उन्हें ईज़ादेना और उनकी तौहीन करना हरगिज जाइज नहीं। फिर कसीर कुतुब हदीस व फ़िक़्ह व फतावा से अपने मौकिफ़ की ताईद में एबारतें पेश की हैं। आप का यह वक़ीअ फतावा मुतवस्सित साइज़ के सात सफ़हात को मुहीत है उस पर मौलाना अब्दुलग़फ़ूर,मौलाना मुहम्मद बशीरुद्दीन,मौलाना अब्दुर्रशीद देहलवी,मौलाना मुहम्मद फ़जलुलमजीद बदायूँनी, मौलाना अब्दुलमुक़तदिर बदायूनी,मौलाना मुहम्मद फ़ज़ले अहमद बदायूनी,मौलाना मुहम्मद हाफ़िज बख़्श मुदर्रिस मदरसा मुहम्मदिया बदायूनी और मौलाना मुहिब अहमद क़ादरी मुदर्रिस मदरसा शमसिया,जामेअ मस्जिद बदायूँ की तसदीक़ात हैं। आख़री तसदीक आला हज़रत इमाम अहमद

रज़ा क़ादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा की है जो मौलाना मुहम्मद अमरूद्दीन हज़ारवी अलैहिर्रहमा की दरख़्वास्त पर आपने क़लमबन्द फ़रमाई, इस तसदीक़ ने एक रिसाला की सूरत इख़्तियार कर ली और उसका तारीख़ी नाम "اهلاك الوهابيين علی توهين قبور المسلمين" है उस से 1322 के आदाद निकलते हैं।

इस रिसाले में दो फ़सल हैं फ़सल अव्वल में यह साबित किया गया है कि मुसलमानों की क़बरों की ताज़ीम ज़रूरी और तौहीन मम्नूअ और नाजाइज़ है और उस में उन उमूर का भी तफ़सीली बयान है जिन से असहाब कुबूर को अज़ीयत पहुचती है।

और फ़सल दौम में वहाबियों के बे सरोपा दलीलों पर तन्क़ीद और उस बात का वाज़ेह बयान है कि मुसलमानों के आम क़ब्रिस्तान में अपना रिहाइश के लिए मकान बनाना तो बहुत दौर कोई वक़्ती मकान बनाना भी नाजाइज़ व हराम है। फिर उस तस्दीक़ी रिसाला पर दर्ज ज़ैल उलमा अहले सुन्नत की गिराँ क़द्र तस्दीक़ात व ताईदात हैं (1) मौलाना मुहम्मद सुलतान अहमद ख़ाँ (2)मौलाना मुहम्मद अब्दुल्लाहि (3)मौलाना मुहम्मद नईम पशावरी (4)मौलाना सय्यद हैदर शाह क़ादरी (5) मौलाना मुहम्मद ज़फरुद्दीन रज़वी बिहारी अलैहिमुर्रहमा वर्रिज़वान।

यह मुहक़्क़िाना रिसाला बड़े साइज़ के चालीस सफ़हात पर फैला हुआ है और अपने मौज़ूअ के तमाम जरूरी गोशों को मुहीत़ है।

इस रिसाला की अहमियत व इफ़ादियत के पेशे नज़र हज़रत ताजुश्शरीआ दाम ज़िल्लाहु ने उस का अरबी में तर्जमा फ़रमाया है ताकि उर्दू से ना आशना अरबी दाँ तबक़ा भी उस से मुस्तफ़ीद हो सके नमूना के तौर तर्जमा मअ असल एबारत के कारीईन की ख़िदमत में पेश है।

नमूनाः

"बात यह है कि वहाबिया की निगाह में कुबूर मुस्लेमीन, बल्कि ख़ास मज़ारात औलिया किराम अ़लैहिमुर्रहमा वर्रिज़वान ही की कुछ क़द्र नहीं, बल्कि ह़त्तलवसीअ़ उन की तौहीन चाहते हैं और जिस ह़ीले क़ाबू चले उन्हें नेस्त व नाबूद व पामाल करने की फ़िक्र में रहते हैं। उन के नज़दीन इंसान मरा और पत्थर हुआ, जैसे वह ख़ुद अपनी ह़यात में हैं कि لا يسمع ولا يبصر و لا يغنى عنك شيئا۔ ह़ालाँ कि शरअ़ मुत्तहर हैं मज़ारात औलिया तो मज़ारात आ़लिया, आ़म कुबूर मुस्लिमीन मुस्तह़क़ तकरीम व मुमतनअ़उ़लतौहीन यहाँ तक कि उ़लमा फ़रमाते हैं : क़बरों पर पाओं रखना गुनाह है कि सक़फ़ क़ब्र भी ह़क़ मैयत है क़नीया में इमाम अ़लाउ तर कमानी से है। يأثم بوط القبور لان سقق القبر حق الميت۔

हत्ता कि मुह़म्मद रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम जिन की नअ़लैन पाक की ख़ाक अगर मुसलमान की क़ब्र पर पड़जाये तमाम क़ब्र जन्नत के मुश्क के मुश्क व अंबर से महक उठे। अगर मुसलमान के सीने और मुंह और सर और आँखों पर अपना क़दम अकरम रखें उसकी लज़्ज़त व नेअ़मत व राह़त व बरकत में अबदुल आबाद तक सरशार व सरफ़राज़ रहे। वह फरमाते हैं :

"لاامشتىٰ على جمرة أو سيف أحب الى من أن امشى على قبر مسلم" (बे शक चिंगारी या तलवार पर चलना मुझे इस से ज़्यादा पसन्द है कि किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलों) रवाहु इब्ने माजा बसनद जैद अ़न उ़क़बत बिन आ़मिर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

और वहाबिया को इस की फ़िक्र है किसी त़रह़ मुसलमानों की क़बरों पर मकान बनें, लोग चलें फिरें, क़ज़ाये ह़ाजत करें भंगी अपने टुकरे ले कर चलें।

"अगर इं अस्त पसन्द तो नसीह़त बादा" (10)

तयसुरुलमाऊ़न लिस्सुकुन फित्ताऊ़न :

26 / स़फ़र 1325 ई को मौलवी मुह़म्मद नफ़ीस इब्ने मुह़म्मद इदरीस क़स्बा निगराम ज़िला लखनऊ की जानिब से नौ सवालात पर मुश्तमिल एक,इस्तिफ़ता आ़ला ह़ज़रत इमाम अ़मदर रज़ा क़ादरी बरेलवी कुद्दुससिर्रुहु की बारगाह में आया जिस का ह़ासि़ल यह था कि त़ाऊ़न के ख़ौफ़ से किसी बस्ती से भागना शरअ़न कैसा है ?

आप ने उसके जवाब में कुरआनी आयात, अहादीस नबविया,शरह़ ह़दीस और फ़िक्ही जुज़ियात की रौशनी में जवाब दिया कि त़ाऊ़न से फ़रार गुनाह कबीरा है और फ़रार की तरग़ीब देने वाले पर फ़रार होने वाले से ज़्यादासख़्त वबाल है। और ह़दीसें इस मौकूफ़ की ताईद व तौसीक़ में पेश की गई हैं उन में ताऊ़न से भागने पर सख़्त वईद और सब्र किए ठहरे रहने की तरग़ीब व ताकीद है।

इस रिसाला का तारीख़ी नाम'' तयस्सिरुलमाऊ़न लिस्सुकने फ़ित्ताऊ़न''है जिस से 1325 के आ़दाद बर आमद होते हैं। यह रिसाला फ़तावा रज़विया, जिल्द नहुम,निस़्फ़ अव्वल में शामिल है और सफ़ह़ा नम्बर 157 से स़266 तक बड़े साइज़ के आठ सफ़ह़ात को मुह़ीत़ है।

ह़ज़रत ताजुश्शरीअ़ा दाम ज़िल्लोहुआ़ली ने उसका शान्दार फ़सीह़ अ़रबी में तर्जमा फ़रमाया है जो आप की फ़न्नी महारत व कमाल का मुंह बोलता

सुबूत है। बतौर नमूना कुछ एबारत मअ अरबी तर्जमा नज़रे क़ारेईन है।

नूमना :

जिन हिक्मतों की बिना पर हकीम करीम रऊफुर्रहीम अलैहि व आला आलेहिस्सलात वत्तस्लीम ने ताऊन से फ़रार हराम फ़रमाया उन में एक हिक्मत यह है कि अगर तन दुरूस्त भाग जायेंगे बीमार ज़ाइअ रह जायेंगे,उन का न कोई तीमार दार होगा न ख़बर गिराँ। फिर जो मरेंगे उन की तजहीज़ व तकफ़ीन कौन करेगा? जिस तरह ख़ुद आज कुल महारे शहर और गर्द व नवाह के हुनूद में मशहूर हो रहा है कि औलाद को माँ बाप,माँ बाप को औलाद ने छोड़ कर अपना रास्ता लिया। बड़ों बड़ों की लाशें मज़दूरों ने ठेले पर डाल कर जहन्नम पहुचायें। अगर शरअ मुत्तहर मुसलमानों को भी भागने का हुक्म देती तो मआज़ल्लाह यही है बे बसी बे कसी उन के मरीज़ों मय्यतों को भी घीरती,जिसे शरअ क़तअन हराम फ़रमाती है"। (12)

अरबी तर्जमा अज़ हज़रत ताजुशरीआ मदद्जुल्लाहु

"من جملة الحكم التى منع من أجلها الحكيم الكريم، الرؤف الرحيم عليه و علىٰ آله الصلوة و التسليم عن الفرار من الطاعون أنه لو فر الأصحاء لضاع المرضى و لا يبقى من يمرضهم و لا من يتعدهم،فمن يقوم يتجهير الموتىٰ و تكفينهم كما

شاع فى الوثنيين ببلندنا و نواحيه ان الأولاد و الآباء والأمهات اتخذ و اسبيلهم،والعمال حملوا جيف أكابرهم على العربات و واصلوهم النار ،ولوأن الشرع المهطر أذن المسلمين بالفرار لكان هذا العجز و فقد العون أحدق بالمرضى و الموتىٰ منهم الأمر الذى حرمه الشرع قطعاً۔ (١٣)

मराजेअ़

1.अलमोअ़तकुदुलमुन्तकद,मअ़ अलमुस्तनदुल मोअ़तमद अ़रबी स.223,224 नाशिरःरज़ा एकेडमी,मुम्बई 1422 हिजरी2001ई.

2.मुनीरुलऐन,मशमूला फ़तावा रज़विया,जि2स425,रज़ा एकेडमी मुम्बई 1415 हिजरी 1994 ई.

3.इलहादुलकाफ़ फी अह़कामिज़्ज़ुआफ़,स18,19

4.अ़तायलक़दीर फ़ी हुक्मे अह़कामित्तस्वीर,मशमूला फतावा रज़विया,जिल्द नहुम निस्फ़ आख़िर,स47,48 नाशिर रज़ा एकेडमी मुम्बई,1415हिजरी 1994ई

5.अ़तायलक़दीर फी हुक्मित्तस्वीर(मुतर्जिम अ़रबी)स.11–9 अलमजउर्रजवी सौदागिरान मरकज़े अहले सुन्नत बरेली शरीफ़

6.शुमूलिलइस्लाम अलउसूलुर्रसूलिलकिराम,मशमूला फ़तावा रज़विया,जि11/स.155मतबूआ रज़ा एकेडमी मुम्बई।

7.शुमूलुलइस्लाम अलउसूलुर्रसूलिलकरीम,(मुतर्जिम अ़रबी)स.13,मशमूला तअ़लीक़ात ज़ाहरा लिलशैख़ ला अज़हरी आ़ला सह़ीहुलबुख़ारी,मतबूआ,मज्लिसु लबरकात, अलजामिआ़ अशरफ़िया,मुबारकपुर,1428 हिजरी 2007 ई.

8.शहिन्शाहेकौन?स.17,नाशिरःइदारा अफ़कार ह़क़,बाइसी बाज़ार,पुरनिया,बिहार,1411हिजरी/1990ई.

9.फ़िक़्ह शहिन्शाह व अन्नलकुलूब बेदलमह़बूबबिअ़ताअल्लाह स.10,11 नाशिर अलमजउर्रज़वी मरकज़े अहले सुन्नतबरेली।

10.इहलाकुलवहाबीईन स,36,37 नाशिरःरज़वी कुतुब ख़ाना, मह़ल्ला बिहारीपुर,बरेली शरीफ़,बारपंजुम

11.अहलाकुलवहाबीईन(मुतर्जिम अ़रबी)मशमूला तअ़लीक़ात ज़ाहिरा आ़ला सह़ीहि़ल बुख़ारी,जि,1स98मतबूआ मज्लिसुलबरकात अलजामिअ़ तुल अशरफिया,मुबारकपुर

12.तयस्सिरुलमाऊ़न,मशमूला फ़तावा रज़विया,जि,9स.262, निस्फ़े अव्वल किताबुलख़त्र वालइबाह,नाशिरःरज़ाएकेडमी मुम्बई

13.तयस्सिरुलमाऊ़न(मुतर्जिम अ़रबी)मशमूला तअ़लीक़ात ज़ाहिरा आ़ला सह़ीहि़लबुख़ारी,जि1स.148

मिरातुन्नजदिया के आईने में

प्रोफ़िसर डाक्टर गुलाम यहया अन्जुम,सद्रे शोअ़बा उ़लूमे इस्लामिया,हमदर्द यूनीवरसीटी,नई देहली

इब्तिदा–ए–आफ़रीनश ही से ह़क़ व बात़िल बा हम दस्त व गरेबाँ हैं। यह दो ऐसी मुतज़ाद ह़क़ीक़तैन हैं जिन का इत्तिह़ाद रोज़े अज़ल से आज तक न कभी हुआ है और न ही मुस्तक़बिल में हो सकता है। ठीक इसी त़रह़ जिस त़रह़ रौशनी और ज़ुलमत,नशीब व फराज़ धूप और छाओं,सियाही व सफ़ेदी और झूट और सच कभी बा हम मुत्तह़िद नहीं हो सकते। लेकिन इस वाज़ेह़ और रौशन ह़क़ीक़त के बा वजूद कुछ सुलह़ पसन्द और मौक़ा परस्त ह़ज़रात इस ह़क़ीक़त पर पर्दा डालने की कोशिश में सर गर्म अमल में और रौशनी को ज़ुल्मत, धूप को छाओं,नशीब को फराज़,सियासी को सफ़ेदी और झूट को सच में ज़म करने की नापाक कोशिशें कर रहे हैं उनकी उस कोशिश बा हम से इत्तिह़ाद का अ़मल में आना तो दर किनार अलबत्ता एक नया त़बक़ा जिसे सुलह़ कुल्ली कहा जाता है ज़रूर वजूद में आ गया है। यह सुलह़ कुल्लियत दर असल मुनाफ़िक़त का ही दूसरा नाम है जो समाज के लिए इन्तिहाई ख़तरनाक है।

बरेलिवियत और नजदियत का इख़्तिलाफ़ भी उसी क़बील से यह दोनों ऐसी वाज़ेह़ और रौशन ह़क़ीक़तें हैं जिन में एक की बुनियाद ह़क़ और दूसरे की बुनियाद बात़िल पर है। जब ह़क़ और बात़िल में इत्तिह़ाद मुम्किन नहीं तो इन दोनों जमाअ़तों के नज़रियात बाहम क्यों कर

मुत्तहि़द हो सकते हैं।

अगर उन के दरमियान इख़्तिलाफ़ की बुनियादें ह़क़ व बाति़ल पर नहीं होते तो न जाने कब का यह मसअला ह़ल हो गया होता क्यों कि जो लोग बाहम इत्तिह़ाद की कोशिशें कर रहे हैं उन में कुछ लोग मुख़ल्लिस़ भी थे और हैं।

बरेलिवियत और नजदियत के बुनियादी इख़्तिलाफ़ किया हैं इस सिलसिला में जानीबैन के वह उ़लमा जिन के अफ़कार व ख़ियालात मुनाज़िराना हैं बहुत कुछ लिख चुके हैं अभी माज़ी क़रीब में लफ्ज़ बरेलिवियत और मसलके आ़ला ह़ज़रत को ले कर बरेलवियों के दरमियान काफी मुअ़र्का आराइयाँ हुयें,एक ओ़हद नो के परवरदा ने माज़ी के उन तमाम अकाबिर उ़लमा के ख़ियालात को जिन्होंने मसलक आ़ला ह़ज़रत को अपनी ज़िन्दगी का औढ़ना दिछोना बनाया उन पर तअ़न व तशनीअ़ के ख़न्जर चलाये और मौजूदा दौर में मसलक आ़ला ह़ज़रत के नअ़रा को ग़ैर ज़रूरी करार दे कर और इस से यह ज़हिन देने की कोशिश की कि उस से यह मालूम होता है कि मसलक आ़ला ह़ज़रत दीन में कोई एक जुदागाना मसलक है जिस की तशहर अहले सुन्नत व जमाअ़त के लिए ज़हरे हिलाहल है उस पर बा ज़ाबत़ा बह़स व मुबाहि़स भी हो जब इस सिलसिले में मेरी राय जानने की कोशिश की गई तो मुदीर पैग़ाम रज़ा मुम्बई की फ़रमाइश पर मसलक आ़ला ह़ज़रत की ताईद में राक़िमुस्सुतूर ने भी दर्ज ज़ैल सुतूर कलम बन्द किए।

"हिन्दुस्तान में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के मानने वाले रहते हैं और हर मज़ह़ब के मानने वालों को अपने मज़ह़ब के उसूलों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की भरपुर आज़ादी है मज़ह़ब इस्लाम के पैरों कार मुतअ़दि्द ख़ीमों में बटे हुये

हैं सुन्नी और जमाअतें तो अहदे सहाबा से ही मौजूद हैं ख़ैरूलकुरून का दर्द ख़त्म होते ही इस्लाम को लोगों ने मज़ीद मुख़्तलिफ़ ख़ानों में बांट कर रख दिया है। रवाफ़िज़,ख़वारिज,चकड़ालोवी,क़ादयानी,और ओहद हाज़िर के वहाबी,दैबन्दी और गैर मुक़ल्लिदीन की तरह बे शुमार फ़िरक़ों ने जनम लिया हिन्होंने किसी ख़ारीजी दबाओ या लालच की बुनियाद पर इस्लामी शरीअत को अपनी तबीअत के मुताबिक़ ढालने की कोशिश की जिस के नतीजे में यह फ़िर्के बसाऔक़ात बाहम दस्त व गिरेबाँ भी हुये लेकिन असल इस्लाम किया है उस का अमली नमूना सहाबा किराम ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से वालिहाना मोहब्बत कर के पेश किया जिस के बाइस ज़िन्दगी हदीस नबवी اصحابی کالنجوم بایہم اقتدیتم اہندیتم के मुताबिक़ दुनिया के मुसलमानों के लिए मीनारा–ए–राह हिदायत नबी ताबेईन व तबअ़ ताबेईन ने जिस पर सख़्ती से अमल किया उसी अक़ीदा व अमल और फ़िक्र व नज़रिया की नुमाइन्दगी इस दौर में उलाम--ए--अहले सुन्नत व जमाअत कर रहे हैं। यह इस्लाम मुख़्तलिफ नशीब व फ़राज़ से गुजरता हुआ हम तक पहुँचा कभी यज़ीदी फ़ितना ने उसकी शक्ल को मस्ख़ किया तो कभी सबाइयों ने उस का रंग ढुंदला किया,कभी क़ादियानियत ने उसके नक़्श व निगार को फीका,किया तो कभी वहाबियत और गैर मुक़ल्लदियत ने उसके मुस्लिमा उसूलों के साथ खिलवाड़ किया एक ज़माना तो वह आ गया कि नबी का मुर्दा मानना नहीं बल्कि मिट्टी में मिल जाना,नबी को मजबूर महज़ मानना नबी के इल्म को शैतान के इल्म से कमतर जानना जरूरतियात दीन से समझा गया और इस्लाम के पैरोंकारों को यह बताया गया कि अगर बिलफ़र्ज बाद ज़माना नबवी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमियत मुहम्मदी में कोई फ़र्क़ न आयेगा और यह भी इस्लामी अक़ीदा बताया गया है कि हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम के लिए इल्म गैब बिलवासिता कुल होगा या बाज़ कुल तो अक़लन मुहाल है और अगर बाज़ है ऐसा इल्म हर सबी(बचे)मजनून(पागल)हैवानात बहाइम (चोपायू) को भी हासिल है उसमें हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम की किया तख़ासीस है। नबी रहमत की लिलआलमीन पर भी कैंची चलाई गई और यह कहा गया कि वह आलमीन के लिए नहीं बल्कि मुसलमानों और मुसलमानों में वह लोग जो मुकल्लफ़ ब इस्लाम हैं सिर्फ़ उन के लिए रहमत हैं अलग़र्ज़ उन बातिल नज़रियात ने उन्नीसवीं सदी में इस्लाम का चेहरा बुरी तरह मसख़ कर के रख दिया उस सिरात मुस्तक़ीम पर बद अक़ीदगी की ऐसी दबीज़ चादर डाल दी गई कि इस्लाम का सही रास्ता किया है लोग तक़रीबन भूल गये थे ख़ुदा भला करे इमाम अहले सुन्नत आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी का जिन्होंने जहद मुसलसल से इस राहे हक़ से बदअक़ीदगी की दबीज़ चादर को न सिर्फ़ हटाया बल्कि अक़ाइद व नज़रियात की तरदीद और बीख़ कुनी कर के इस सिराते मुस्तक़ीम को उम्म मुस्लिमा के इस्तेमाल के क़ाबिल बनाया उनकी उसी मुजाहिदाना कारकुर्दगी की बुनियाद पर उन्हें इमाम अहले सुन्नत और उन के उस कारनामे को उन के लक़ब की मुनासिबत से"मसलके आला हज़रत"से ताबीर किया गया ठीक उसी तरह जिस तरह मौजूदा ज़माने में अगर किसी पुरानी गैर इस्तेमाल सड़क को कई क़ौमी लीडर अपने सरकारी फ़न्ड से साफ़ सुथरा करा के इस्तेमाल के क़ाबिल बना दे और फिर इस पर

अपने नाम का बोर्ड लगा दे ठीक यही हाल मसलके आला हज़रत का है जो दर असल सहाबा किराम,औलिया ऐज़ाम और उलमा–ए–ज़विलएहतिराम का मसलक है जिस की तजदीद इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा क़ादरी ने की और बाद के लोगों ने इस पर मसलके आला हज़रत का बोर्ड लगा दिया। मौजूदा दौर में मसलके आला हज़रत ही मसलक अरबाब हक़ की पहचान है हमें मसलक आला हज़रत को उसी तनाज़िर में देखने और समझने की ज़रूरीत है। (1)

इस तअल्लुक़ से मज़ीद तफ़सीलात का यह मक़ाला मुतहम्मल नहीं इसलिए उसी पर इक्तिफ़ा किया जा रहा है जो लोग मसलक आला हज़रत के तअल्लुक़ से किसी ग़लत फ़हमी या साज़िश के शिकारत हैं उन्हें ऐसी बयान बाज़ी सा ऐसी तहरीरों से एहतिराज़ करना चाहिए जो अरबाबे हक़ की दिल आज़ारी का बाइस बनें। बहर हाल इन तफ़सीलात से क़तअ़ नज़र यह जानना ज़रूरी है कि जब लफ़्ज़ नजदियत का इस्तेमाल इस दौर में किया जाता है तो इस सिलसिले में वहाबियत ग़ैर मुक़ल्लिदियत और दैवबन्दियत को शामिल मानते हैं और जब लफ़्ज़े बरेलियत का इस्तेमाल होता है तो इस से मुराद सिर्फ़ वही सुन्नी होते हैं जो आशिक़े रसूल,इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ा क़ादरी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के मसलक के पैर व कार हैं बाअल्फ़ाज़ दीगर बरेलवियों को ही"अहले सुन्नत व जमाअत"कहा जाता है दैबन्दी न तो अपने को सुन्नी कहलाना पसन्द करते हैं और न ही उन्हें इस लक़ब से पुकारा जाता है।

बरेलवियत और नजदियत कहिए या बरेलवियत और दैबन्दियत इन दोनों जमाअतों में जो इख़्तिलाफ़ की शिददत

एक सदी क़ब्ल थी वह अब नहीं है सब कुछ हालात व ज़माना के तक़ाज़ों के पेशे नज़र हुआ है निस्फ़ सदी क़ब्ल उलमा–ए–हक़ व बातिल आये दिन मैदान मुनाज़िरा में अकठ्ठे होते हैं और बग़ैर किसी नतीजे पर पहुँचे अपने अपने घरों को लूट जाते और फिर फ़तह मुबीन का एक क़द आदम पोस्टर हर एक जमाअत की तरफ़ से दूसरे दिन दीवरों पर आवीज़ाँ हो जाया करता था यह सिलसिला सालहा साल चलता रहा अब हालात काफी बदल चुके हैं ऐसा लगता है कि फ़रीक़ मुख़ालिफ़ ने थक हार के सुपुर्द डाल दिये हैं।

इब्तिदा–ए–इस्लाम के मुसलमानों और उस दौर के मुसलमानों में इम्तिदाद ज़माना के बाइस किरदार व अमल में नोई फ़र्क़ आ गया है। यह दोनों जमाअतें जो अपने को सवादे आज़म कहती हैं उनके इख़्तिलाफ़ात में जो ग़लत फ़हमियों का कलीदी किरदार रहा है और ऐसा सिर्फ़ एक दूसरे से इज्तिनाब और दूरी इख़्तियार करने के बाइस हुआ है इस ग़लत फ़हमी के सब से ज्यादा शिकार उलमा–ए–वहाबिया और सर बुराहान दियाबना और सिर्फ़ इसलिए कि उन्होंनें ने मसलक अहले सुन्नत के तअल्लुक़ से इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी अलैहिर्रहमा की तसानीफ़ का बुराहे रास्त मुतालअ नहीं किया या अगर किया है तो इल्मी होने के बाइस वह किताबें उन बे चारों की समझ में नहीं आई हैं। उलमा–ए–दैबन्द कहाँ,कहाँ ग़लत फ़हमियों के शिकार हुये हैं ऐसी कई एक मिसालें हैं यहाँ सिर्फ़ दो एक मिसालों का ज़िक्र फ़ाइदा से ख़ाली न होगा।

यह बात अहले हक़ और साहिबाने फ़हम व फ़रासत पर मख़फ़ी नहीं कि उलमा–ए–दैबन्द ने उलमा–ए–अहले

सुन्नत व जमाअ़त को बरेलवी कह कर बदनाम करने की भर पुर कोशिश कीं और अ़वाम में यह तास्सुर देने की कोशिश की कि यह इस्लाम में एक ऐसी नई जमाअ़त है जिस का इस्लाम से(मअ़ज़ल्लाह)कोई तअ़ल्लुक़ नहीं उन्होंने अपनी इस बात को भूले भाले अ़वाम के ज़हिन व दिमाग़ में बठाने के लिए न जाने कैसी कैसी मज़मूम ह़रकतें की मगर यह हक़ीक़त है कि आफताब ह़क़ व स़दाक़त पर पर्दा डाल कर उसकी किरनों को पाबन्द सलासुल नहीं किया जा सकता कुछ ऐसा ही मुआ़मला यहाँ भी पेश आया। उ़लमा–ए–अहले सुन्नत इस जुमले से बदनाम किया होते यह जुमला उनके ह़क़ में नेक शुगून साबित हुआ और अब बेह़म्दिही तआ़ला यह जुमला(बरेलवी)उलमा ह़क़ यानी उ़लमा–ए–अहले सुन्नत के लिए अ़लामती निशान के त़ौर पर इस्तेमाल किया जाने लगा।

लफ्ज़े बरेलवियत के तअ़ल्लुक़ से जब उ़लमा–ए–दैबन्द की यह मज़मूम ह़रकत नाकाम हुई तो उन्होंने फिर खिसयानी बिल्ली खंबा नोचे के बमिस्दाक़ उ़लमा–ए–अहले सुन्नत को बिदअ़ती और क़ब्र परस्त कहना शुरू किया और बाज़ अपनी निदामत की बात न ला कर जमाअत अहले सुन्नत(बरेलवियों)को क़ादयानियों की त़रह़ एक गुमराह फ़िर्क़ा लिख बैठे बहर ह़ाल आज उ़लमा–ए–दैबन्द उ़लमा–ए–अहले सुन्नत को बिदअ़ती कहने में किया ह़िक्मत है यह बात आज तक मेरी समझ में न आ सकी और वह इस लिए कि उ़लमा–ए–अहले सुन्नत से कही ज़्यादा उ़लमा–ए–दैबन्द गिरफ़तार हैं। इस वक़्त मेरा मौज़ू यह नहीं वरना मेरे पास इन बिदआ़त की एक त़वील फिहरिस्त है जिन की ईजाद का सेहरा खुद उ़लमा–ए–दैबन्द के सर बन्धता है मौक़ा अगर्चे इस का नहीं है लेकिन मौज़ू की

मुनासिबत से उलमा–ए–दैबन्द की ईजाम कर्दा कुछ बिदआत की तरफ़ एक हलका सा इशारा अपनी किताब तज़करा शैर बेशा–ए–अहले सुन्नत हज़रत मौलाना मुहम्मद हशमत अली अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के एक मुक़द्दमा से–– कर के गुज़र जाना चाहता हूँ जिसे अल्लामा अरशदुल क़ादरी ने क़ल्म बन्द किया है ताकि इलज़ाम बग़ैर सन्द न रहे।

1– दफ़अे बला और क़ज़ा–ए–हाजत के नाम पर मदरसा की माली मनफ़अत के लिए ख़त्मे बुख़ारी का मुजिद कोई और नहीं बल्कि ख़ुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

2– नमाज़े जनाज़ा के लिए इन्तज़िामी मस़लिहत की बुनियाद पर नहीं बल्कि ग़लत एअतिक़ाद की बुनियाद पर इहाता दारुलउलूम में एक जगह मख़सूस करने की बिदअत का मौजिद कोई और नहीं बल्कि ख़ुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

3– मुस्लिम मैयत के कफ़न के लिए खुदर की शर्त लगाना और खुदर के बग़ैर नमाज़ जनाज़ा पढ़ने और पढ़ाने से इन्कार क़र देने की बिदअत का मोजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद शैख़ दैबन्द मौलवी हुसैन अहमद हैं।

4– वरासत अम्बिया की सनद तक़सीम करने के लिए एहतिमाम व तदाई के साथ सद साला इजलास मुन्अक़िद करने और एक ना महरम व मुश्रिक औरत को(मज़हबी)स्टैज पर बुलाकर उसे कुर्सी पर बठाने और अपने मज़हबी अकाबिर को उसके क़दमों में जगह देने की बिदअत सय्इया का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद दैबन्द का दारुल उलूम है।

5– दीनी दर्स गाह के इहाते में मुश्रिकाना अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल क़ौमी तराने के लिए"क़ियाम तअ़ज़ीमी"की बिदअत सय्इआ का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद दैबन्द का

दारुलउ़लूम है।

6– कांग्रेसी उमीदवार का कामयाब बनाने के लिए इन्तिहाई जिद व जहद को मज़हबी फ़रीज़ा समझने की बिदअ़त का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद शैख़ दारुलउ़लूम दैबन्द हैं।

7– अपने अकाबिर की मौत पर एहतिमाम व तदाई के साथ जलसा तअ़ज़ियत मुन्अक़िद करने और ज़लालत व अबात़ील पर मुश्तमिल मन्ज़ूम मरसिया पढ़ने और पढाने की बिदअ़त का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद दारुलउ़लूम दैबन्द है।

8– बिलइल्तिज़ाम किसी मुतअ़य्यन नमाज़ के बाद नमाज़ियों को रोक कर उनके सामने तब्लीग़ी निसाब की तिलावत करने की बिदअ़त का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद उ़लमा–ए–दैबन्द हैं।

9– कलिमा व तब्लीग़ के नाम पर चिल्ला और गश्त करने और कराने की बिदअ़त का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि ख़ुद उ़लमा–ए–दैबन्द हैं।

10– दारुलउ़लूम दैबन्द में सद्र जमहुरिया की आमद के मौक़े पर क़ौमी तराने के एह़तिराम में खड़े होने का हुक्म स़ादिर करने वाले भी अकाबिरे दैबन्द हैं जो इस वक़्त स्टैज पर मौजूद थे।

यह और उसी त़रह के बे शुमार बिदआ़त व मुन्किरात हैं जिन की ईजाद का सेहरा उ़लमा–ए–दैबन्द के सर है लेकिन उसके बाजूद लोग इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा और उन के मुतबईन को बिदअ़ती कहते हुये नहीं थकते,उन्हें चाहिए कि वह अपने गिरेबान में मुंह डाल कर सोचे फिर अपने बारे में फ़ैसला करैं कि उन पर किया शरई हुक्म लगना चाहिए।

उ़लमा–ए–दैबन्द और वहाबी उ़लमा दोनों बड़े शुद व मद के साथ एक दूसरा अलफ़ाज़ जो सुन्नी उ़लमा व अ़वाम दोनों के लिए इस्तेमाल करते हैं वह क़ब्र परस्त है उलटे चौर कोतवाल को डांटने का मुहा़विरा पूरी त़रह उ़लमा–ए–दैबन्द पर सा़दिक़ आता है और इसलिए कि क़ब्र परस्ती के मुजिद और मुरक्कब दोनों ही उ़लमा–ए–दैबन्द हैं। ख़्वाजा हसन निज़ामी की शख़्सियत से तक़रीबन हर वह शख़्स वाकिफ़ है जिसे उर्दू अदब से अदना भी तअ़ल्लुक़ दुनिया–ए–अदब में मसव्वर फ़ितरत से शोहरत हासि़ल हुई बड़ी ख़ुबियों के मालिक थे अगर्चे उनकी विलादत देहली में हुई लेकिन मज़हबी तालीम के ह़ुसूल के लिए उ़लमा–ए–दैबन्द की सर परस्ती ह़ासि़ल की और कांधला जा कर मौलवी मुह़म्मद इस्माईल कांधलवी,मौलवी मियाँ यह़या कांधलवी के सामने ज़ानवे तिलमिज़ तह किया गंगोह का भी आप ने तालीमी सफ़र किया और वहाँ ढेढ़ साल मस़रूफ़ियत तालीम रहे।

ज़ाहिर है कि जिस की तालीम व तरबियत उ़लमा–ए–दैबन्द के ज़ेरे साया हुई हो जब वहाँ से फ़ारिगुत्तहसी़ल हो कर मैदान अ़मल में आयेगा तो बिला शुबह नहीं ख़तूत़ पर वह काम करेगा जिन खुतूत पर उन की तरबियत हुई होगी। यही सब कुछ ख़्वाजा ह़सन निज़ामी के साथ हुआ लेकिन चुंकि वह एक मुअ़ज़्ज़ज़ ख़ानक़ाह जहाँ हिन्दु व मुस्लिम सब जबीन अक़ीदत ख़म करते हैं सज्जादा नशी थे और ख़ानक़ाहे आम त़ौर पर उ़लमा–ए–अहले सुन्नत की मीरास समझी जाती हैं इसलिए ख़्वाजा ह़सन निज़ामी को भी अहले सुन्नत का एक फ़र्द समझा गया और वह सिर्फ़ इसलिए कि उन का तअ़ल्लुक़ एक ऐसी ख़ानक़ाह से था जो तकरीबन ऐसे

लोगों के क़ब्ज़ा में है जो किसी मसलक के पीर नहीं उनका अपना एक जुदागाना मसलकी नुक़्ता-ए-नज़र है लेकिन ख़्वाजा हसन निज़ामी की तालीम व तरबियत जुंकि उलमा-ए-दैबन्द में हुई इसलिए अफ़कार व नज़रियात की गहरी छाप लाज़मी थी। मसन्द सज्जागी को रौनक़ बख़्शने ही उन्होंने मुख़्तलिफ़ मैदानों में जिस तरह अपनी सलाहियतों और अफ़कार व नज़रियात का मुज़ाहिरा किया उसे बयान करते हुये बदन के रुंगुटे कांप उठते हैं उसकी तफ़सील किसी और मौक़ा के लिए उठाकर रखता हूँ उनकी उसी फ़िक्री ज़ोलीदगी का एक शाहकार क़ब्र परस्ती के तअल्लुक़ से मुरशिद को सज्जादा तअज़ीमी के जवाज़ और उसके लिए ठोस दलाइल की फ़राहमी भी है जब उन्होंने मुरशिद को सजदा-ए-ताज़ीम के नाम से किताब लिख कर क़ब्रिस्तान को जाइज़ क़रार दे दिया उलमा-ए-हक़ के दरमियान इन्तिशार हुआ किसी तरह ख़्वाजा हसन निज़ामी की वह तस्नीफ़ "मुरशिद को सजदा-ए-ताज़ीमी" इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान तक पहुँची तो इस किताब के मुतालअ के बाद आप ने सिर्फ़ इज़हार नाराज़गी ही नहीं फ़रमाया बलिक सजदा-ए-ताज़ीमी की हुरमत "الزبدة الزكية لتحريم سجود التحية" के नाम से ढाई सो सफ़हात पर मुश्तमिल एक मबसूत किताब लिख डाली और उसकी तरदीद में कुरआन व अहादीस और अक़वाल-ए-आइम्मा की रौशनी में क़ब्र परस्ती की हुरमत पर सैंकड़ों दलाइल व बराहीन के अंबार लगा दिए।

यह इन्तिहाई तअज्जुब और हैरत का मक़ाम है कि जिस मसलक के पेशवा ने क़ब्र परस्ती की हुरमत में सैंकड़ों सफ़हात तहरीर कर डाले हों आज उसे और उस के

मुत्तबईन को उलमा–ए–दैबन्द जो ख़ुद क़ब्रपरस्ती के मुजिद हैं क़ब्रपरस्ती कहते हुये नहीं थकते। यह बे चारे इतने ना समझ होते हैं कि जो चाहते हैं बक देते हैं हक़ीक़त हाल का उन्हें इल्म नहीं होता और न यह बेचारे उसे जानने की कोशिश करते हैं अगर यह नाम निहाद उलमा इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी की किताबों का मुतालअ हक़्क़ानियत व सदाक़त की ऐनक लगा कर किए होते तो शायद उन गलत फ़हमियों के शिकार न होते।

क़ब्रपरस्ती के तअल्लुक से तवील मक़ाला बउनवान "इमाम अहमद रज़ा और ख़्वाजा हसन निज़ामी नज़रिया सजदा ताज़ीमी का तक़ाबुली मुतालअ"माहनामा जहान रज़ा लाहोर जिल्द 3 शुमारा 34 माह ज़िहिज्जा1414हिजरी जून 1994ई में शाइअ हुआ तफ़सीली मालूमात के लिए इस का मुतालअ मुफ़ीद होगा। यह मक़ाला और उसी तरह के दूसरे मक़ालात का मजमूआ इमाम अहमद रज़ा के अफ़कार व नज़रियात एक तक़ाबुली मुतालअ के उनवान से जल्दी ही किताबी शक्ल में मन्ज़र आम पर आने वाला है।

उलमा–ए–दैबन्द की फ़िक्री जोलीदगी की एक बदतरीन मिसाल बरेलवियों को क़ादयानियों के मुशाबा क़रार देना है आज से तक़रीबन 12 साल क़ब्ल मुजल्ला राबता आलम इस्लामी के शुमारा फ़रवरी मार्च 1985 ई में एक रीया नज़र से गुज़रा जिस में मुदीर राबता आलम इस्लामी ने बरेलियों को क़ादयानियों की तरह एक फ़िर्क़ा क़रार दिया था। राक़िम ने जब उसकी इत्तिलाअ मरकज़ से शाय होने वाला माहनामा सुन्नी दुनिया के मुदीर को दी तो उस वक़्त अब्दुन्नईम अज़ीज़ी ने दिसम्बर 1985 के शुमारा में एक ज़बर दस्त इदारीया उसकी तरदीद में

लिखा।

"राबता आलम इस्लामी" वहाबिया दियाबना का मुश्तरिका मज़हबी तर्जुमान है जो हर माह पा बन्दी से मक्का मुकर्रमा से शाय होता है। इस मज़हबी तर्जुमान में उस क़िस्म की ला यानी बातों के छुपने की मुहर्रिक ग़ालिबन एहसान इलाही ज़हीर की किताब "अलबरेलिया" है जो उस किस्म के हफ़वात व अबातील का पुलिन्दा है। बहर हाल इस नुमाइन्दा तर्जुमान में यह बात शाय हुई इस इशाअत के पीछे किसी हिन्दुस्तानी आलम ऐजेन्ट की साज़िश कार फ़रमा है उस से हमें सरोकार नहीं लेकिन अगर हम इस की तह में जायें और इस मसअला पर सन्जीदगी से ग़ौर करें तो आप यह बावर किए बग़ैर न रह सकेंगे कि क़ादयानियत का दरवाज़ा दर असल उलमा–ए–दैबन्द के सरख़ील दारुलउलूम दैबन्द के ख़ुद साख़्ता बानी मौलवी मुहम्मद क़ासिम नानौतवी का खुला हुआ है उन्होंने अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ तहज़िरुन्नास में ख़ातिमुन्नबीईन की ऐसी तशरीह फ़रमाई जिस से क़ादयानियों को एलान नबुव्वत का मौक़ा मिल गया और मौसूफ़ की जिस एबारत को उन्होंने बतौर ढाल इस्तेमाल किया वह उनकी किताब तहज़ीरुन्नास नाशिर कुतुब ख़ाना इम्दादिया दैबन्द बा एहतिमाम मुहम्मद अली मालिक कुतुब मतबअ़ बरक़ी प्रेस दहली के स 24 पर इस तरह दर्ज है।

"अगर बिलफ़र्ज़ बाद ज़माना नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हुआ तो फिर भी ख़ातमियत मुहम्मदी में कुछ फ़र्क़ न आयेगा चे जायेकि आप के मुआसिर किसी और ज़मीन में या फ़र्ज़ किजीए उसी ज़मीन में कोई और नबी तजवीज़ किया जाये। (4)

कुरआन हकीम के किसी लफ़्ज़ से न इशारतन

किनायतन और न सराहतन यह मालूम होता है कि अभी और कोई नबी आने वाला है कई जगह वाज़ेह लफ़्ज़ों में यह बयान मिलता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सारे आलम के लिए क़ियामत तक के नबी हैं अब किसी नबी की ज़रूरत नहीं इस वाज़ेह एलान में कही किसी क़िस्म की तहरीफ़ की गुन्जाइश के सिवा यही ले दे कर माना ख़ातिमुन्नबीईन बच रहा फिर यह बात समझ में आ गई कि उस के माना की ऐसी ताबीर व तशरीह की जाये कि दूसरे नबी की गुन्जाइश निकल आये। चुनांचि यह कारे ख़ैर अंगरेज़ों या ख़ुदा जाने किस की साजिश की बुनियाद पर मौलवी मुहम्मद क़ासिम नानोतवी ने अन्जाम दिया उन की उस तशरीह से क़ादियानियों में मसर्रत की लहर दौड़ गई एक कादयानी मुसन्निफ़ अबूलअताया जालंधरी अपनी किताब इफ़ादात क़ास्मिया में लिखता है।

"य महसूस होता चौदवीं के सर पर आने वाला मुजद्दिद महदी और मसीह मौऊद भी था और उसके उम्मती को नबुव्वत के मक़ाम से सर फ़राज़ किया जाने वाला था इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी मस्लिहत ख़ास से हज़रत मोलवी मुहम्मद क़ासिम साहेब नानोतवी को ख़ातिमियत मुहम्मदिया के असल मफ़हूम की वज़ाहत के लिए रहनुमाई फ़रमाई और आप ने अपनी किताबों और अपने बयानात में आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ख़ातिमुन्नबिईन होने की निहायत दिलकश तशरीह फ़रमाई।

बहर हाल यह तशरीह चुंकि कादयानियों की हस्बे ज़रूरत थी इसलिए उन्होंने इस मौके को ग़नीमत समझा और 1891ई में मसीह मौऊद होने का दअवा पेश कर दिया

मौलाना अबूलहसन अली नदवी ने सीरतुलमहदी हिस्सा दौम के हवाले से लिखा है।

"मिरज़ा गुलाम अहमद साहब ने 1891 ई में मसीह मौऊद होने का दअवा किया फिर 1901ई में नबुव्वत का दअवा किया"

आज जो हिन्दुस्तान में उलमा-ए-दैबन्द तहरीक खत्मे नबुव्वत या कादयानियत के खिलाफ जलसे कर रहे हैं यह उसी दाग को धोने और अपने उसी संगीन जुर्म को छुपाने की नाकाम कोशिश है जो उन के अकाबिरीन कर गये हैं।

तेरहवी सदी के अवाइल में जब शाह इस्माईल देहलवी(1246हिजरी)ने अंग्रेज़ों की साज़िश से जनाब रिसालत मा अब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तअल्लुक से इम्कान नजीर की बहस छेड कर उम्मत मुहम्मदिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह तासिर देने की कोशिश की।

"इस शहिन्शा(रब्बुलइज़्ज़त)की यह शान है कि एक आन में एक हुक्म कुन से चाहे तो कड़ोरों नबी वली और जिन फिरिश्ता जिब्राईल और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बराबर पैदा कर डाले"

शाह साहिब की इस फ़िक्र से जिस तरह इहानत मुतरशह थी उस का दन्दान शिकन जवाब बतले हरीत मुजाहिद आज़ादी अल्लामा फ़ज़ले हक खैराबादी ने किताब"इम्तेनाए नज़ीर"लिख कर दिया और अक्ली व नक्ली दलाइल से अपने मुवक्कफ को मरबूत कर के फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मिस्ल व नज़ीर मुम्तनअ बिज़्ज़ात हो और जो मुम्तनअ बिज़्ज़ात है वह तेहत कुदरत दाख़िल नहीं। इम्तिनाअ नज़ीर

के नाम से अल्लामा फ़ज़ले हक़ ख़ैराबादी की किताब 1908 ई में ख़लीफ़ा आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी हज़रत मौलाना सुलैमान अशरफ़ अली गढ़ के तहशिया और तस्हीह के बाद जौनपुर से शाय हुई कुछ दिनों बाद इम्कान नज़ीर और इम्तनाअ़ नज़ीर से मुतअल्लिक़ बहसें वहीं रुक गयें मरग बरसों बाद फिर मौलवी मुहम्मद क़ासिम नानोतवी को बैठे बठाये न जाने किया सोझी फिर वह इस बहस को ख़ातिमुन्नबीईन के पस मन्ज़र में छेड़ बैठे इस बहस से मौसूफ़ को किया और कितना फ़ाइदा हुआ यह तो सेगा–ए– राज़ में है अलबत्ता इतना ज़रूर मालूम है कि उनकी उस फ़िक्र से एक गुमराह जमाअत ज़रूर वजूद में आ गई जिसे हम क़ादयानियत कहते हैं। लिहाज़ा अगर क़ादयानियत के मुहर्रिक अव्वल की हैसियत से"तहज़ीरुन्नास"किताब के मुसन्निफ़ मौलवी मुहम्मद क़ासिम नानौनी का नाम लिया जाये तो बेजा ना होगा। कादयानियत चुंकि इस वक़्त मौज़ूअ़ बहस नहीं इसलिए उस की तफ़सील में जाने से गुरेज़ कर रहा हूँ।

अब आइये उन उ़लमा की ख़िदमत में हाज़री दीजिए जिन्हें उ़लमा–ए–दैबन्द क़ादयानियों की तरह एक गुमराह फ़िर्क़ा क़रार देते हैं इस जमाअ़त के सरख़ैल इमाम अहले सुन्नत हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी क़ुद्दुस सिर्रुहु हैं उन के नोके क़ल्म से एक मोहतात रिवायत के मुताबिक़ पचासों उ़लूम व फ़नून पर मुश्तमिल छोटी,बड़ी हज़ारों किताबें मन्सा–ए–शहूद पर आयें अगर इन्साफ़ और हक़ पसन्दी की ऐनक लगा कर उन किताबों का मुताला किया जाये तो शायद ही किसी किताब में कोई ऐसी एबारत दस्तयाब हो सकेगी जिस से क़ादयानियों के गुमराह अक़ाइद की ताईद होती हो इस गुमराह और बातिल फ़िर्क़ा

की ताईद और हयायत में कोई एबारत मिलनी तो दर किनार कोई लफ़्ज़ और जुमला भी नहीं मिल सकता है हाँ अलबत्ता उन्होंने इस बातिल फ़िर्क़ा की तरदीद में दर्ज किताबें ज़रूर लिखी हैं जो बिहम्दिही तआला मौजूद हैं। और मुतअ़द्दिद बार छप चुकी हैं। अब अगर यह कम इल्म दैबन्दी बेचारे उन किताबों का मुताला न करें और फिर इस मज़हब हक़ के बारे में जो चाहें बातिल ख़्याल गढ़ लें तो उसका किया एलाज है? क़ादयानियत की तरदीद में इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा क़ादरी की तस्नीफ़ात दर्ज ज़ैल हैं जो किसी भी सुन्नी "मकतबा" से हासिल की जा सकती हैं।

١۔ السوء والعقاب علی مسیح الكذاب

٢۔قهر الديان على مرتد بقاديان

٣۔الصارم الربانی علی اسراف القادیانی

٤۔جزاء الله عدوه بآبایه ختم النبوة

٥۔الجراز الدیانی

इस खुली हक़ीक़त के बावजूद अगर कोई कहे बरेलवियत क़ादयानियत की तरह एक फ़िर्क़ा है तो इस की अक़्ल पर सिवाये मातम करने के और किया कहा जा सकता है। उसी को कहा जाता है कि "उलटे चौर कोतवाल को डालने"।

नज्दियों और दैबन्यों के अ़क़ाइद उसी क़िस्म की हफ़वात व अबातील पर मुश्तमिल हैं "मुश्ते नमूना अज़ ख़रवारे" के तौर पर सतूर बाला में सिर्फ़ तीन मिसालों का ज़िक्र हुआ है। उ़लमा–ए–दैवबन्द की इलज़ाम तराशियों और बुहतान तराज़ियों की तरदीद में उ़लमा–ए–अहले सुन्नत के नोक क़ल्म से सैंकड़ों किताबें मुतअ़द्दिद ज़बानों में

मनसा–ए–शहूद पर आयें, ज़ेरे नज़र किताब "मिरातुन्नज्दिया" उसी क़िस्म की एक तस्नीफ़ है इस किताब की अहमियत इस लिए है कि यह किताब अ़रबी ज़बान में है और आज के मरजअ़–ए–उ़लमा–ए–अहले सुन्नत,ह़ज़रत ताजुश्शरीआ क़ाज़ीयुलक़ुज़्ज़ात,फ़क़ीहे–ए–इस्लाम अ़ल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी के सालेह़ अफ़कार,पाकीज़ा ख़ियालात और मौमनाना नज़रियात की रौशन शाहकार है।

इस किताब पर चुंकि मुस़न्निफ़ का अस़ल नाम"अल्लामा इस्माईल अलअज़हरी"शाय हुआ है इसलिए ज़हिन इस त़रफ़ जल्दी मुतबादिर नहीं होता कि यह आप की तस्नीफ़ है क्योंकि आप के उ़र्फ़ी नाम को इस क़द्र शोहरत और मक़बूलियत ह़ासिल हुई कि लोग आप का अस़ल नाम भूल गये। आप के वालिद माजिद का नाम इस्मे गिरामी चुंकि"इब्राहीम"था इसलिए आप का नाम इस्माईल से ज़्यादा और कोई मौज़ों हो हो भी नहीं सकता था।

किताब मिरातुन्नज्दिया 25/रबीउ़स्सानी 1410 हिजरी 25/नोम्बर 1989ई. में तबअ़ हुई है अरबी ज़बान में मत़बअ़ का ज़िक्र नहीं अलबत्ता इसकी पहली त़बाअ़त दारुलइफ़ता अलमरकज़िया मह़ल्ला सौदागिराँ बरेली शरीफ़ यूपी के ज़ेरे एहतिमाम अ़मल में आई है।

आग़ाज़े किताब में मुस़न्निफ़ ने क़ादयानियत से मुतअ़ल्लिक़ अपने ऊपर लगाये गये इलज़ामात की तरदीद की है फिर उस तअ़ल्लुक़ से अपने मौक़िफ़ का इज़हार किया है और दलाइल व बराहीन से यह साबित किया है कि बरेलवियत,क़ादयानियत की तरह़ एक गुमराह फ़िर्क़ा नहीं बल्कि ख़ुद देवबन्दियत क़ादयानियत की त़रह़ गुमराह जमाअ़त है और इसलिए कि,"मौलवी मुहम्मद क़ासिम नानोतवी ने "तहज़ीरुन्नास"में ख़ातिमुन्नबईन की ऐसी

तशरीह फ़रमाई है जिस ने क़ादयानियों के रसूल की ख़ातमियत को महफ़ूज़ रखते हुये उन के बानी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी को एलाने नबुव्वत का मौक़ा फ़राहम किया और सुबूत के तौर पर यह लिखा है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिरबैग जो मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ के उस्ताद थे वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी के हक़ीक़ी भाई थे" हांलाकि इन दोनों के दरमियान दूर का भी तअल्लुक़ नहीं था मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिरबैग बरेली के रहने वाले थे आज भी उनका ख़ान्दान बरेली में मौजूद है। इसी ख़ान्वादा के एक चशम व चिराग़ मिर्ज़ा अ़ब्दुलवहीद बैग(एडूकेट)थे। जिनका चन्द साल पेशतर इन्तिक़ाल हो गया उन से राक़िमुस्सुतूर के इल्मी मरासिम थे कई बार उन के घर भी जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है मुसन्निफ़ ने इस इलज़ाम की तरदीद में लिखा है।

"قد كذب هذا الواشى فيما ادعى من ان غلام قادر بيگ وبين غلام احمد قاديانى قرابة فضلا ان يكون هذا شقيق ذلك"

और जहाँ तक रही बात क़ादयानियों को अपने अक़ाइद व अफ़कार को इज़हार करने का मौक़ा फ़राहम करने की तो इस सिलसिले में मुसन्निफ़ किताब ने दलाइल व बराहीन की एक तवील फ़िहरिस्त पेश की है इस के बाद लिखा है।

"انه (امام الديوبندية المولوى محمد قاسم النانوتوى)هو الذى مهد للقاديانى المتنبى سبيله"

मसअला क़ादयानियत के एलावा नज़र व नियाज़, करामत -ए-औलिया इस्तिआनत,तसव्वुर, हैयात बाद मुम्मात,और तसर्रुफ़ात औलिया से मुतअ़ल्लिक़ उलमा--ए--देवबन्द के मुफ़सिद नज़रियात और बातिल अफ़कार व ख़ियालात को बयान कर के क़ुरआन व अहादीस और

अक़्वाल अइम्मा की रौशनी में उनकी तरदीद की है। और फिर अपने मौकफ़ की ताईद में किताब व सुन्नत से मुस्तहकम दलाइल पेश किए हैं।

चुंकि इस क़िस्म के मुबाहिस से मुतअल्लिक़ उ़लमा-ए-अहले सुन्नत के प्लैट फ़ार्म से मुनाज़िरा के मौज़ू से दिलचस्पी रखने वालों के रुशहात क़ल्म से कई एक किताबें मनस-ए-शुहूद पर आ चुकी हैं उन मबाहिस की तफ़सीली बहसे से यहा गुरेज़ किया जा रहा है,अलबत्ता एक मौज़ू पर मरातुन्नज्दिया में तफ़सीली बहस है और वह है सुन्नी और दैवबन्दी इख़्तिलाफ़ के अस्बाब वजूह का मुसन्नफ़ाना जाइज़ा, इस मौज़ू पर मुसन्निफ़ किताब ने कई सफ़हात में मुदल्लिल तफ़सीली गुफ़्तगु की है और उस की इब्तिदा-ए-तमाम इन्साफ़ पसन्द मुसन्निफ़ीन की तरह शैख़ मुहम्मद इब्ने अ़ब्दुलवहाब नजदी के ग़ैर इस्लामी रविया से की है और लिखा है कि हिन्दुस्तान में यह मज़हबी इख़्तिलाफ़ अंग्रेज़ों की मुनज़्ज़म साज़िश के नतीजे में रुनूमा हुआ है अंग्रेज़ चुंकि हिन्दुस्तान की सियासी, मुआशी,समाजी,और मज़हबी बुनियादों को मुतज़लज़ल करना चाहते थे इसलिए अगर एक तरफ़ उन्होंने इस मुल्क में सियासी चालें चल कर मुल्क के अन्दरूनी निज़ाम को दिरहम बरहम किया तो दूसरी तरफ़ वह उ़लमा जो किसी ज़माना में उनकी हुकूमत में वज़ीफ़ा ख़ौर थे उन को एअतिमाद में ले कर मज़हब के तअल्लुक़ से ऐसी नफ़रत की लहर फ़ैलाई जिस की पैलट में हिन्दुस्तानी उ़लमा के एलावा अ़वाम भी आ गये एक दूसरे के तैस यह मज़हबी मुनाफ़िरत रोज़ अफ़ज़ु बढ़ती रही जिस के नतीजे में अ़क़ीदा और एलाक़ा की बुनियाद पर कई एक मज़हबी,तन्ज़ीम और जमाअ़तें वजूद में आ गयें। वहाबियत,

दैवबन्दियत,क़ादयानियत, नेचरियत और सुलह कुल्यित वग़ैरा उसी दौर की पैदावार हैं।

वहाबियत की बुनियाद कि उसूलों पर रखी गई इस की वज़ाहत के लिए कई सफ़हात दरकार हैं मगर इस का एक वाज़ेह उसूल यह था कि मुसलमानों में से जो भी बसर व चशम उन के अक़ीदा को क़बूल नहीं कर लेता था उनका माल व मताअ़ शैख़ मुहम्मद इब्ने अ़ब्दुलवहाब के लिए हलाल होता उस्ताज़ जाफ़र सुब्हानी अपनी किताब" आईन वहाबियत"के स़23 पर रकम त़राज़ हैं।

"शैख़ मुहम्मद अपने अक़ाइद को तस्लीम न करने वाले मुसलमानों पर न सिर्फ़ हमला कर के उन के माल व मताअ़ माल को लूटना जाइज ख़्याल करता था बल्कि वह उन मुसलमानों से हासिल कर्दा माल व मताअ़ माल ग़नीमत से ताबीर करता था और उस माल ग़नीमत को इस्तेमाल करने का मुकम्मल इख़्तियार सिर्फ़ शैख़ ही को हासिल था। (10)

ज़ाहिर है कि शैख़ नज्द ने मुसलमानों के सामने तौहीद की जो तौजिह पेश की थी चुंकि वह मर गढ़त थी इस में उन के हवा व होस का अमल दख़ल ज़्यादा था। इस लिए आम मुसलमानों के नज़दीक उसका क़ाबिले क़बूल होना मुम्किन न था इसी वजह से उन्हें जंगी काफ़िर क़रार दे कर उन की जान लेना और उन का माल लौटना हलाल व मुबाह समझा गया और शर व फ़साद के नतीजे में क़ौम का जमाअ़तों में बट जाना और ढड़ा बन्दी इख़्तियार कर लेना लाज़मी अम्र था अगर्चे इस क़िस्म की शुरूआत शैख़ नज्द ने कर दी थी लेकिन हिन्दुस्तान में शैख़ नज्दी की इस फ़िक्र को परवान चढ़ाने के लिए अंग्रेज़ों ख़ान्दान वलियुल्लाह के एक चशम व चिराग़ मौलवी मुहम्मद इस्माईल दैहलवी का सहारा लिया इस फ़िक्र के फ़रोग़ के

सिलसिले में शाह इस्माईल के इन्तिख़्वाब में हिकमत यह थी कि मौसूफ़ का तअ़ल्लुक़ एक इल्मी ख़ानवादे से था अंग्रेज़ यह समझते थे कि जो बात उनकी ज़बान से कहलवाई जायेगी क़ौम इस पर आमन्ना स़दक़ना ज़रूर कहेगी लेकिन तारीख़ ही रही है कि अहले ह़क़ कभी बात़िल के सामने सरनिगों नहीं हुये हैं जैसे ही उन्होंने ने रसूले अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की अ़ज़मत को कम करने के लिए इमकान नज़ीर का तस़व्वुर पेश किया तो उनके ही हमदर्स साथी अ़ल्लामा फ़ज़ले ह़क़ ख़ैराबादी ने "इम्तेनाअ़ नज़ीर" किताब लिख कर उनका सहारा ख़ान्दानी इल्मी तनतुना ख़ाक में मिला दिया और बेबांग दहल इमाम अहले सुन्नत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान क़ादरी की ज़बान में यह फ़रमा दिया।

तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अज़ीम कहा
तेरी ख़ुल्क़ को ह़क़ ने जमील कहा
कोई तुझ सा हुआ है न होगा शहा तरे
ख़ालिके हुस्न अदा की क़स्म

इस सिलसिले में थोड़ी सी गुफ़्तगु सुतूर बाला में गुज़र चुकी है तफ़स़ीली मालूमात के लिए राक़िमुस्सुतूर का मुक़ाला अ़ल्लामा फ़ज़ले ह़क़ ख़ैराबादी और शाह इस्माईल देहलवी के बा हमी इख़्तिलाफ़ात का जाइज़ा"का मुत़ाला मुफ़ीद होगा। जो माहनामा हिजाज़ जदीद देहली के शुमारा जनवरी फ़रवरी 1991 ई में शाय हो चुका है।

मौलवी इस्माईल दैहवी ने अंग्रेज़ों के तआ़ऊन से किसी त़रह़ गिरोह साज़ी का फरीज़ा अन्जाम दिया इस सिलसिले में मौलाना अख़्तरत शाहजहाँपुरी का यह ख़्यिाल क़ाबिले तवज्जोह है फ़रमाते हैं।

"ह़क़ीक़त यह है कि हिन्दुस्तान में फ़िर्क़ा साज़ी और

गिरोह बन्दी का संग बुनियाद अंग्रेज़ों ने अपनी ज़रूरत के तिहत मौलवी मुहम्मद इस्माईल दैहलवी से रखवाया क्योंकि मुक़द्दस सर ज़मीन अरब में वहाबियत का फ़ितना कामयाब साबित हो चुका था। मौसूफ़ शाह अब्दुलअज़ीज़ मुहद्दिस दैहलवी(1239 हिजरी 1824ई.) के भतीजे और शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस दैहलवी(1176हिजरी1762 ई.)के पोते थे। इस ख़ान्दान आली शान की मुल्क के गोशे गोशे और बैरूने ममालिक में भी शोहरत थी।

अंग्रेज़ों ने इस आली शान ख़ान्दान के चशम व चिराग़ शाह इस्माईल दैहलवी पर किस तरह डोर डाले और किस तरह उन्हें अपना हमनवा बनाया यह मसअला बहर हाल ग़ौरतलब है चुकि यह सेग़ा राज़ की चीज़ थी इसलिए इस सिलसिले में हत्मी तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन क़रीन–ए–क़ियास यही है कि हज़रत शाह अब्दुलअज़ीज़ मुहद्दिस दैहलवी,के दामाद मौलवी अब्दुलहैय दैहलवी(1243हिजरी)जो मेरेट में ऐस्टइन्डिया कमपनी के मुलाज़िम थे उन्हीं की मअरफ़त यह मुआमला पाया तकमील को पहुँचा होगा इस सिलसिले में सालसी का फ़रीज़ा किस ने अन्जाम दिया इस से बहस नहीं बहस यह है कि हवा वही जो अंग्रेज़ चाहते थे यानी शाह इस्माईल दैहलवी ने नया दीन राइज करने और बरतानवी मफ़ाद की ख़ातिर जो जीने मरने का अहोद किया था इस पर साबित क़दम रहे उनकी बाक़ी ज़िन्दगी इस पर शाहिद है।

मुसलमानों में इफ़्तिराक़ व इन्तिशार पैदा करने के तअल्लुक़ से जब अंग्रेज़ों की गुफ़्तगू शाह इस्माईल दैहलवी से पक्की हो गई तो फिर शाह साहिब ने मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब नज्दी की इस फ़िक्र की तरवीज की जिस में कलमा गो इंसानों का ख़ून बहाना जाइज़ और हलाल था

और तौहीद का वही मफ़हूम पेश किया जो उसने सर जमीन नज्द आले सऊद की हिमायत में किया था इस तरीक़े तब्लीग़ का हिन्दुस्तानी मुसलमानों पर किया असर हुआ खुश अक़ीदा मुसलमानों पर अया है उसे बयान करने की ज़रूरत नहीं,चुंकि तरीक़ा तब्लीग़ में शाह साहिब ने वही सारे उसूल अपनाये थे जिसे मुहम्मद अब्दुलवहाब नज्दी ने अपना कर आलम इस्लाम में अफरातफरी का माहूल पैदा किया था इसलिए हिन्दुस्तानी मुसलमानों के दरमियान इन्तिशार व इफतिराक़ का माहोल बन्ना लाज़मी अम्र था। ख़ान्दान के लोग मुख़ालिफ़ हो गये असातिज़ा ने बरहमी का इज़हार किया,बुज़ुर्गों ने उस नज्दी अक़ीदे की नशर व इशाअत से बाज़ रहने की तलक़ीन फ़रमाई,मगर शाह साहब धन के इतने पक्के थे उन्होंने अपने बड़ों में किसी की एक न मानी और जो कुछ अंग्रेज़ों से तै हुआ था वह सब कुछ कर दिखाया। इस से जब ख़ान्दान के लोग नाराज़ हो गये असातिज़ा ने मुंह मौड़ लिया तो फिर शाह साहिब ने अपना मिशन किस तरह आगे बढ़ाया उस राज़ का इन्किशाफ़ कबीले के एक साहिब क़लम मिर्ज़ा हैरत देहलवी ने उन लफ़्ज़ों में बयान किया है।

"आप ने सब से पहले चन्द बड़े बड़े बद मआशों के सरग़नों को अपनी जादू भरी तक़रीर सुना के मुरीद किया और उन्हें ऐसा मोअतक़िद बनाया कि वह अपनी जान कुरबान करने पर आमादा हो गये मसलिहत उसी की मुतक़ाज़ी थी कि यह कारवाई की जाये क्योंकि दिन बदिन मुख़ालिफ़त की आग भड़कती जा रही थी।

यह भी वह कहानी जिस के सबब मुसलमानों में इन्तिशार हुआ और रफ़्ता रफ़्ता यह मिल्लत इस्लामिया धड़ाबन्दी की शिकार हो गई और जिस मुहम्मद इब्ने

अ़ब्दुलवहाब नज्दी ने सऊद की मदद और उस की मुशारिकत से सर ज़मीन हिजाज़ में ज़हनी व फ़िक्री इन्तिशार बर्पा किया और जंग व जदाल के ज़रीअ़ा लोगों के ख़ून बहाये ठीक उसी त़रह शाहइस्माईल दैहलवी ने सय्यद अह़मद राय बरेलवी क़ी मुशारिकत से ज़हनी व फ़िक्री इन्तिशार बर्पा कर के गिरोह बन्दी कराई और उन के मोअ़तकिद पर अ़मल न करने और सय्यद अह़मद राय बरेलवी को अमीरूलमोमिनीन न मानने की सूरत में जिहाद का रुख़ सिखों की बजाये मुसलमानों की त़रफ़ मौड़ दिया फिर किया हो इस की तफ़सीली शाह हुसैन गरदेज़ी की ज़ुबानी सुनिये वह फ़रमाते हैं।

"अब सिखों को नज़रे अन्दाज़ कर के मुसलमानों को मुसलमान बनाने की तह़रीक शुरू हुई यहीं से तफ़रीक़ बैनलमुस्लिमीन की इब्तिदा हुई मुसलमान सुन्नी वहाबी दो गिरोहों में तक़सीम हो गये और मिल्लते इस्लामिया को ना क़बले तलाफ़ी नुक़सान पहुँचाया

चुंकि तमाम ज़हनी व फ़िक्री इन्तिशार के मुजिद हिन्दुस्तान में शाह इस्माईल दैहलवी थे इसलिए मिरातुन्नज्दिया के मुसन्निफ़ ह़ज़रत ताजुश्शरीअ़ा शैख़ इस्माईल अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी ने उस मौज़ू पर सीरे ह़ासिल बह़स फ़रमाई है और कुतुब का एक तिहाई ह़िस्सा उन्ही नाम निहाद शुयूख़ की फ़िक्री बे राह रवी से मुतअ़ल्लिक़ है इस फ़िक्री बे राह रवी के इन्सेदाद के लिए उ़लमा–ए–हक़ ने जो किताबें लिखी हैं उन की तादाद मिरअतुन्नज्दिया के मुसन्निफ़ ने 42 बताई है। मुसन्निफ़ ने सिर्फ़ तादाद की वज़ाह़त पर ही इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि मुसन्नफ़ीन के नामों के साथ किताबों की फिहिरस्त भी पेश की है और आख़िर में यह लिखा है कि यह फ़िहरिस्त अभी

नाक़िस है क्योंकि उस में हिन्द व पाक के एलावा और दूसरे ममालिक के उ़लमा की तस़ानीफ़ शामिल नहीं। लिखते हैं।

"بهذا الفهرس يعلم القادرى ما بلغت محمد بن عبد الوهاب من البشدة وكم قاومها الكرام(جزاهم الله تعالىٰ خيرا)من كل ناحية على ان الفهرس لم يستوعب كل من رد عليه من العلماء العرب فضلا من الاعاجم فانه لم يشتمل من رد عليه من علماء الهند وبا كستان وغير هما من البلاد"

फिर मुसन्निफ़ ने हैरत व इस्तिअजाब का इज़हार करते हुये लिखा है कि यह किस क़द्र तअ़ज्जुब की बात है कि उ़लमा–ए–अहले दैवबन्द मुह़म्मद इब्न अ़ब्दुलवहाब के मज़हबी अफ़कार व ख़ियालात की तरदीद भी करते हैं और उसके उसूलों को अपने लिए मज़हबी रहनुमा ख़ुतूत़ भी समझते हैं यहाँ चुंकि बह़स का मौक़ा नहीं इसलिए उसकी तफ़स़ील से ग़ुरेज़ किया जा रहा है।

किताब के आख़िर में वह तमाम मज़हबी मसाइल जिस में उलमा–ए–अहले सुन्नत और दूसरी मुस्लिम जमाअ़तों के दरमियान इख़्तिलाफ़ है उनकी वज़ाह़त कर के उस के सुबूत में सलफ़ के अक़वाल पेश किए हैं सुबूत में जिन उ़लमा की तह़रीरें पेश की हैं उन की इ़ल्मी अज़मत और फ़िक्री जलालत पर तमाम मुसलमानों का इत्तिफ़ाक़ है। उन उ़लमा–ए–एलाम के अक़वाल को मुख़्तलिफ़ फ़ीह मसाइल के तअ़ल्लुक़ से पेश कर के मुस़न्निफ़ किताब ने यह बावर कराने की कोशिश की है कि उ़लमा–ए–अहले सुन्नत व जमाअ़त(बरेलवियत)अल्लाह तआ़ला जल्ल जलालोहु पैग़म्बर–ए–इस्लाम रसूले मक़बूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और बुज़ुर्गाने दीन रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन के सिलसिले में जो अक़ीदा

रखते हैं वह कोई नया अक़ीदा नहीं बल्कि यही अक़ीदा तमाम अकाबिर उ़लमा–ए–अइम्मा किराम और असह़ाब रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का था। और शैख़ नज्द मुह़म्मद अ़ब्दुल नज्दी के वजूद में आने से क़बल शीओंके एलावा तमाम मुसलमानों के नज़रियात व ख़ियालात मज़हबी एअ़तिबार से तक़रीबन यकसाँ थे अगर कोई इख़्तिलाफ़ था तो वह फ़िक़्ही था ज़ेरे बह़स किताब में इस इख़्तिलाफ़ की तारीख़ और उसके अस्बाब व वुजूह पर मुदल्लिल आ़लिमाना बह़स है।

शैख़ुलइस्लाम ताजुश्शरीअ़ा अ़ल्लामा अख़्तर रज़ा अज़हरी स़ाह़ब क़िबला का यह अक़दाम लाइक़ तह़सीन ही नहीं बल्कि क़ाबिले तक़लीद है फ़ाज़िल बरेलवी, हुज्जतुलइस्लाम वलमुस्मिीन इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी की शख़्स़ियत और उन के फ़िक्री ख़ियालत को निशाना बना कर मुख़ालिफ़ीन व मुआ़निदीन हम पर एअ़तिराज़ करते हैं अगर अक़ाइद के मौज़ूअ़ पर लिखी गई उन की और तस़ानीफ़ को दलाइल व बराहीन और मराजअ़ के साथ बा ज़ाबत़ा ऐडट कर के अ़रबी ज़बान में शाय की जाये और फिर उन्हें अ़रब दुनिया और ख़ास़ त़ौर से वह ममालिक जहाँ उनके मुख़लिफ़ीन की कसरत है इरसाल की जायें तो हमारे ख़ियाल से वह नाम निहाद उ़लमा जो उन के हिन्दुस्तानी ऐजेन्ट हैं और ह़क़ाइक़ पर पर्दा डाल कर उ़लमा–ए–ह़क़ के अ़क़ाइद की ग़लत़ तौज़ीह़ व ताबीर पेश करते हैं उनकी पर्दा दरी हो सकती है। मिरअतुन्नज्दिया की त़बाअ़त में क़दीम त़रीक़ा कार को अपनाया गया है इसलिए इस्तिफ़ादा निस्बतन मुश्किल है अगर अवाइल किताब में मुदर्जात की फ़िहरिस्त और प्रेस रेलीज़ दी जाती और आवाख़िर किताब में इशारा दे दिया जाता तो किताब की

इफ़ादीयत दो बाला हो जाती। किताब के सुरूक़ पर किताब का नाम"मिरअतुन्नज्दिया"छपा हुआ है लेकिन दरमियान किताब के सफ़हात के बालाई हिस्सा पर एक तरफ़ इमाम अहमद रज़ा अलबरेलवी और दूसरे सफ़हा पर वसाइसुलवहाबिया फिल हिन्द वलअर्ब"मरकूम है जिस से किताब का असल नाम मशकूक हो जाता है। यह किताब ग़ालिबन बदनाम ज़माना मुसन्निफ़ एहसान इलाही ज़हीर (पाकिस्तान)की किताब अलबरेलविया के जवाब में लिखी गई है इसलिए इस किताब का असल नाम मिरअतुन्नज्दिया ही ज़्यादा मुनासिब मालूम होता है।

मिरअतुन्नज्दिया किताब अपने मौज़ूअ के एअतिबार से भरपूर है इसकिबात में उन के तमाम अक़ाइद व ख़ियालात की वज़ाहत है जिन पर उन का अमल है और किताब व सुन्नत से मुतसादिम हैं उन में दर्ज ज़ैल मबाहिस अहम हैं।

١-الامام احمد رضا يشدد النكير على كل من انكر ختم النبوة و اهان منصب الرسالة

٢-تاريخ نشاة الوهابية و افكارها الزائغة

٣-محمد بن عبد الوهاب ينكر الاجماع و القياس

٤-الوهابية يخالفون سلفيهم فى كرامات الاولياء

इन मर्कज़ी मौज़ूआत के तहत कई एक ज़ैली बहसें हैं जिन के ज़िमन में हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने तमाम मबाहिस का इहाता कर लिया है इसलिए किताब मतुवस्सित साइज़ के 173 सफ़हात पर फैल गई है।

सफीना-ए-बख़्शिश की फ़न्नी और अदबी झलक

मौलाना मुफ़्ती शमशाद हुसैन रज़वी,सद्र मुदर्रिस शमसुल उलूम बदायूँ

सफ़ीना-ए-बख़्शिश अल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा अजहरी साहिब का मजमूआ नअत व मन्कबत है। इस मजमूआ पर गुफ्तगू करने से पहले इस बात की वज़ाहत ज़रूरी है कि अल्लामा मौसूफ़ किन हैं और उनकी शख़्सियत किन खुबियों की मालिक है। कुन अवामिल व जज़बात से मुतास्सिर हो कर उन्हों ने नग़मा सराई की है? तो आइये पहले उन की शख़्सियत के बारे में थोड़ी सी मालूमात कर लें।

हज़रत ताजुश्शरीआ साहिब क़िब्ला एक ऐसे ख़ानवदा के फ़र्दे कामिल हैं जिन का ख़ान्दान कई सदियों से इल्म व फ़न,तहक़ीक़ व तन्क़ीद,तहज़ीब व तमद्दुन के एअतिबार से आला मक़ाम रखता है। सय्यदी मौलाना नक़ी अली ख़ाँ,सय्यद इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ,सय्यदी हुज़ूर मुफ़्ती आज़म,सय्यदी मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ,सय्यदी मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ वग़ैरा इस ख़ान्दान के वह तांबन्दा व दरख़्शिन्दा माह नजूम हैं जिन की पुरनुर किरनों ने मन्ज़िल हयात की निशान्दही और क़ौम व मिल्लत की सही कियादत की। उन बुज़ुर्गों की ज़िन्दगियाँ चाँदी की चाँदनी, फ़ितरात शब्नम की तरह साफ़ और शफ़ाफ़ थीं। इशक़ व महब्बत,ख़ुलुस व वफ़ा,प्यार और उलफ़त उन की ज़िन्दगी का अज़ीम सरमाया था। इल्मी मैदान में उन्होंने वह जो हर दिखलाये कि आज तक अरबाबे इल्म व दानिश तबक़ा से मुतस्सिर हैं। नीज़ अपनी शबिश्तानों में उन्हीं के इल्म व फ़न का चिराग़ जलता हुआ देख रहे हैं। वह ऐसे गुलाब थे कि सालों गुज़र जाने के बावजूद उनकी खुशबू आज भी

महसूस की जा रही है। माहिरीन नफ़सियात इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर चुके हैं कि जो बच्चा इस ख़ान्दान में पैदा होगा वह बहुत कुछ होगा। नई शान और नई आन वाला होगा। वरासत में इस बच्चा को बहुत कुछ मिलेगा जिन्हें वह गैर शऊरी तौर पर महसूस करेगा। यह तो मुशाहिदा की बात है कि मछली के बच्चे को कोई तैरना नहीं सिखाता है। बल्कि पैदा होते ही वह फ़ितरी तौर पर तीरने लगता है और समन्दर की सतह पर खेल कुद शरह कर देता है। मैं इस बात को यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि अल्लामा अज़हरी मियाँ साहब क़िबला ने इस ख़ान्दान से वरासत में बहुत कुछ लिया है। बल्कि हिस्सा व अफ़राद लिया है। इल्म व फ़न,तहक़ीक़ व तन्क़ीद,तजज़िया व तौज़ीह,ख़ुलूस व प्यार,इशक व मोहब्बत,शैर व सुख़न के फ़ितरी रुजहानात और जबली मैलानात आप को वरासत में मिले हैं। इन फ़ितरी रुजहानात को तरक़्क़ी देने और उन में इन्जलाती कैफ़ियत बेदार करने में आप के ज़ाती तजर्बात ने एक अहम रोल अदा किया है। घर से ले कर मदर्सा तक और मदर्सा से ले कर ज़ामिअे अज़हर मिस्र तक आप के तजर्बात फैले हुये हैं,तजर्बात की उस वुस्अत ने आप की शख़्सियत में बे पनाह वुस्अत अता कर दी है,यह सिर्फ़ हुस्न अक़ीदत नहीं बल्कि एक ऐसा नज़रिया है जो सिर्फ़ मेरा ही नहीं बल्कि तमाम अरबाबे इल्म व दानिश का है मैंने हज़रत अजहरी मियाँ के बारे में जो कुछ राये क़ाइम की है। जो नज़रिया पेश किया है। उनके किरदार व अमल से इस नज़रिया की तौसीक़ हो चुकी है। अगर तबअ़ नाज़ुक पर बारगिराँ महसूस न हो तो उस को पढ़िये।

जो तहरीर में क़ल्म बन्द करने जा रहा हूँ। वह मेरी आप बीती है। कोई सुन्नी सुनाई बात नहीं है बल्कि मेरा

तजर्बा है और बहुत ही क़रीब से मैंने उसका मुशाहिदा किया है जामिआ ह़मीदिया रज़विया बनारस हिन्दुस्तान में एक मशहूर व मअ़रुफ़ इदारा है जो किसी तआ़रुफ़ का मोह़ताज नहीं। बल्कि वह आप रौशन है और कितनों को रौशन कर चुका है ख़ास़ बात सिर्फ़ इस क़द्र है कि हुज़ूर शमसुलउ़लमा क़ाज़ी शमसुद्दीन स़ाह़िब क़िबला जौनपुरी मुस़न्निफ़ "क़ानून शरीअ़त" अपनी उ़म्र का ज़्यादा तर हिस़्सा इसी इदारा में गुज़ार चुके हैं। औ़र अ़र्सा दराज़ तक आप ही शैख़ुल ह़दीस रहे हैं। 1972 ई से ले कर 1981 ई तक उसी इदारा का त़ालिब इल्म रहा हूँ ह़ज़रत शमसुलउ़लमा के दर्स व तदरीस में किया लुतफ़ व मज़ा था,किस त़रह़ ज़ौक़ व शौक़ मचलता था,दिल में किया किया कैफ़ियात उभतरी और डूबती थीं। जिन को हम सिर्फ़ मह़सूस कर सकते हैं। अलफ़ाज़ की स़ूरत में उनका कैफ़ियात को पेश करना जुये शेर लाने के मुतरादिफ़ है। ह़ज़रत क़ाज़ी स़ाह़िब ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद यामीन स़ाह़िब, ह़ज़रत मौलाना नज्मुद्दीन स़ाह़िब व दीगर असातिज़ा किराम के ज़रीआ़ में बरेली से मुतआ़रिफ़ हुआ। मगर त़ालिब इल्म का ज़हिन ही किया बे परवाह,ला अबाली में कोई नक़्श अभरा और आन वाह़िद में मिट गया।

हाये गियूरी दिल की अपने दाग़ किया है खुद सर ने
जी ही जिस के लिए जाता है उस से बे परवाह है दिल

हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कहिये एक दिन हम तमाम त़ालिबे इल्म ह़ज़रत क़ाज़ी स़ाहिब के दर्स में मौजूद थे औ़र ह़ज़रत पढ़ा रहे थे कि एक बुज़ुर्ग सिफत इंसान तशरीफ़ लाये। क़ाज़ी स़ाह़िब ने खड़े हो कर उनका इस्तिक़बाल किया। आप आने वाले को अपनी मस्नद पर बठाया औ़र ख़ुद मुअददब हो कर बैठ गये और त़ालिब इल्मों के ज़हिन व

दिमाग़ में किया तास्सुर उभरा?उसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैं ने यह महसूस किया। क़ाज़ी साहिब जैसी शख़्सियत। अल्लाह अल्लाह उनकी इल्मी शान व शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े उन के सामने तिफ़ल मकतब मालूम होते थे उनका इल्मी वक़ार मुस्लिम था। लेकिन आज किया हो गया कि इल्मी जाह व जलाल और फ़न्नी तमतराक़ नियाज़ मन्दी के सांचे में ढल गया है। अपने असातिज़ा में से किसी से मैंने दरयाफ़्त किया।

हज़रत यह कौन है?उन्होंने जवाब दिया।

यह हज़रत अज़हरी मियाँ है उस वक़्त तक नाम तो सुना था मगर देखा नहीं था फिर हज़रत अज़हरी मियाँ साहब ने अर्बी ज़बान में एक मन्क़बत पढ़ी। ग़ालिबन यह मन्क़बत हज़रत मुजाहिदे मिल्लत की शान में लिखी गई थी पढ़ने का लब व लेहजा इस क़द्र दिल कश था। अल्फ़ाज़ के ज़ेर व बम में ऐसी मौज़ूनियत थी कि नग़मा व तरन्नुम का समाँ छा गया हमारे तमाम असातिज़ा किराम इस मन्क़बत से मुतास्सिर हुये और बुहत ज़्यादा मुतास्सिर हुये यही से हज़रत अज़हरी मियाँ के इल्मी लियाकत का और बा कमाल सलाहियत का नक़्श मेरे दिल में उभरता है।

1979 ई की बात है,मैं जमाअत राबिआ का तालिब इल्म था मदरसा हमीदिया रज़विया बनारस के सालाना इम्तिहान के लिए हज़रत अज़हरी मियाँ साहिब तशरीफ़ लाये हुये थे। मिशकात शरीफ़ का अपने इम्तिहान लिया। मैं इम्तिहान देने वालों में शरीक था लोगों का मेरे बारे में ख़्याल था कि नाचीज़ तमाम तालिब इल्मों में बा सलाहियत है। ख़ैर यह उनका हुस्न ज़न था।

हज़रत अज़हरी मियाँ साहिब क़िब्ला ने फ़रमाया कहीं से कोई हदीस पढ़ो, तमाम साथियों का इशारा पाते ही मैंने

वह हदीस पढ़ी जिस का मुताला मैं ख़ास तौर पर कर के आया था। हदीस तो मैंने सही ऐराब के साथ पढ़ी और तर्जमा भी कर दिया। उस के बाद हज़रत ने जो सवालात इस हदीस के मुतअ़ल्लिक किए। यह यक़ीन जानिये मैंने यह महसूस किया। मैं अभी तक इल्म व फ़न से बे बहरा हूँ। इन दो वाक़िआत ने मेरे ज़ेहन व दिमाग़ को इस तरह मुतास्सिर किया लेकिन तासिर की बुनियाद पर उनकी इल्मी सलाहियत के बारे में कोई राय क़ाइम नहीं की जा सकती है। इस लिए कि तालिब इल्म और उसकी हैसियत ही किया ?

अभी चन्द साल क़ब्ल कि बात है हज़रत मौलाना मदनी मियाँ अशरफ़ी साहब क़िब्ला ने टी वी पर दिखाई जाने वाले मुनाज़िर को मशरूत तौर पर जाइज़ करार दे दिया और स्क्रीन पर दिखाये जाने वाली तस्वीर को मुतहर्रिक और ग़ैर कार कह कर हुरमत वाली नस से मा वरा कर दिया। इस पर अल्लामा अज़हरी मियाँ ने जो इरादात काइम किये हैं जिस अन्दाज़ से बहस की हैं इस से मालूम होता है कि आप इल्म व फ़न में इन्तिहा दर्जा की दस्तर्स रखते हैं आप की इल्मी क़ाबिलयत और सलाहियत का लोहा तमाम अरबाब इल्म व फ़न से तस्लीम कर लिया है और मैंने टीवी के मुतअ़ल्लिक लिखे गये तमाम तहरीरात को मुताला करने के बाद अपनी यह राय क़ाइम की है कि हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म और इमाम अहमद रज़ा की तहरीरात की झलक आप के फ़तवा में मिलती है। वही शान व शौकत,वही आन बान और वही तमतिराक़ जवान बुज़ुर्गों का था। वही आप की तहरीरों में नज़र आता है। शैर व सुख़्न और अदबी ज़ौक़ व शौक़ से भी अल्लामा अज़हरी का वक़ार बलन्द है। बल्कि अगर यह कहा जाये तो कोई

बे जाना होगा कि शैर व शाइरी से आप को फ़ितरी लगाओ है। शाइरी की तरफ़ यह फ़ितरी रुजहान भी आप को वरासत में मिला है उस मैदान में आप ने किसी से भी बा ज़ाबता इस्लाह नहीं ली है बल्कि दिल में उभरने वाले जज़बात व एहसासात अल्फ़ाज़ के पैराये में ढलते गये हैं। आप की शाइरी दिल की शाइरी है। जज़बात की शाइरी है ऐसी शाइरी है जिस में ख़ून जिगर शामिल है उनका दीवान जो सफीना–ए–बख़्शिश से मोसूम है। मेरे सामने मौजूद है। इस का मैंने बिलइस्तिआब मुताला किया है। इस के एक एक शैअर में कही तो जज़ब व कशश और दिलकश है जो दिल को मोह ले रही है। और कही जज़बात की हलकी सी आंच है जो रह रह के उठती है और जिन से मीठा मीठा दर्द पैदा होता है और कही जज़बात का ऐसा शौला उठता है कि दिल कबाब हो जाता है। और इस से उठने वाला धुँवा इश्क़ व मस्ती की ख़बर देता है ताजुश्शरीआ की शाइरी में फ़िक्र व तख़ील की बुलन्द परवाज़ी,अल्फ़ाज़ की सहर कारी,कैफ़ आवर लब व लेहजा और सादगी भी बला की है। उन के कलाम में यह तिनों अनासिर इस बात की निशान्दही कर रहे हैं। अल्लामा मौसूफ़ ने इमाम अहमद रज़ा से रफ़अते ख़ियाल मौलाना हसन बरेलवी से जोश व सादगी का इस्तिफ़ादा किया है। आइये उनकी शाइरी से चन्द ऐसे इक़्तिबासात पेश करते हैं जिन से हमारे मज़कूर दअवों की ताईद होती है।

1– रफ़अते ख़ियालः से मुराद वह कुव्वत है जो पहले से मौजूद तजर्बात,मुशहिदात और एहससात के मा बैन ऐसी तरतीब करती है जो आम रविश से अलग हो और कारेईन को मुतास्सिर के जिस शाइरी में ख़्याल जिस क़द्र बुलन्द होगा। उसी क़द्र उसकी शाइरी भी बुलन्द व बाला होगी।

जब हम इस नुक़्ता-ए-नज़र से हज़रत ताजुश्शरीआ की शाइरी का तन्क़ीदी जाइज़ा लेते हैं तो महसूस होता है कि उन की शाइरी में ख़्याल की बुलन्दी पाई जाती है। अशहब फ़िक्र की ऐसी परवाज़ नज़र आती है कि दिल ख़ुश हो जाता है। रिफ़अत ख़्याल इंनसान का फ़ितरी वसफ़ है और वह शिक्म मादर से ले कर आता है। इस का इक्तिसाब नहीं किया जा सकता है। हाँ यह मुम्किन है कि इक्तिसाब से इस फ़ितरी वसफ़ में अन्जुलाई कैफ़ियत तो आ जाये लेकिन अज़ सरे नो इस का इक्तिसाब मुम्किन नहीं है। आइये और ताजुशरीआ की शाइरी में रफ़अत ख़्याल की तलाश व जिस्तजु करें आप लिखते हैं।

वही जो रहमतुलल्लिल आलमीन हैं जाने आलम हैं
बड़ा भाई कहे उनको कोई अंधा बसीरत का

हमारे शाइर को यह मालूम था कि सरकार अबदे क़रार सारी दुनिया की रहमत है और आलम की जान हैं गोया वह आलम और सारी काइनात को मर्कज़ हैं क्योंकि सारा आलम उन्हें के तुफ़ैल में पैदा वार है। इस मालूमात में जदीद तरतीब दे कर यह ख़्याल पेश किया है कि इस हैसियत को तस्लीम कर लेने के बाद उन्हें भाई कहना किसी तरह जाइज़ नहीं क्यों कि यह एक मुसल्लमा उसूल है कि उन दो के मा बैन अख़वत का रिशता होता है जब वह दोनों एक ही हैसियत रखते हों और यहाँ ऐसा नहीं है एक को तो मर्कज़ी हैसियत हासिल है और दूसरे को नहीं। जो भाई है वह मकर्ज़ नहीं बन सकता और जो मरकज है वह भाई नहीं उन दोनों के मा बैन तज़ाद की निस्बत से इस के बावुजूद उन्हें भाई कहना अंधी बसीरत का नतीजा तो हो सकता है लेकिन बसीरत नहीं यह ख़्याल किसी क़द्र बलन्द है और बुलन्द होने के साथ साथ इस में जो

लताफ़त,पाकीज़गी है वह बयान से बाहर है।

झुके न बार सदा हसाँ से क्यों बनाये फ़लक
तुम्हारे ज़र्रे के पर तो सितार हाये फ़लक
यह ख़ाक कोचा–ए–जाना है जिस के बुसा को
न जाने कब से तरस्ते हैं दीदा हाये फ़लक

इन अश्आर को पढ़िये और बार बार पढ़िये,इन में ख़ियाल की जो रिफ़अत है,जो बलन्दी है वह क़ाबिल सद्र रश्क है। आम तौर पर यह ख़्याल किया जाता है कि आस्माँ सिर्फ़ इस लिए झुका हुआ मालूम होता है कि वह करवी शक्ल का है लेकिन हमारा महबूब शाइर उसकी तौज़ीह आम ख़ियाल से हट कर कर रहे हैं फ़लक इसलिए झुका हुआ है कि उस पर मेरे सरकार के एक दो नहीं बल्कि सद एहसानात हैं। वह एहसान यह हैं कि सितार हाये .फ़लक किया हैं। उनके ज़रीं के पर तू हैं। गोया ज़र्रे असल हैं और सितारे साया हैं। और एक तस्लीम शुदा हक़ीक़त है कि साया उधर ही झुकता है जिधर को उसकी असल शय होती है। फ़लक के सितारे इसलिए ज़मीन की तरफ़ झुके हुये हैं कि वह ख़ाक कोचा जानाँ का बोसा लेना चाहते हैं और न मालूम वह कब से उस बुसा के लिए तर्स रहे हैं। उसकी कोई इब्तिदा नहीं बे ऐनेही उस ख़्याल को इमाम अहमद रज़ा ने इस तरह पेश किया है।

वही तो अब तक छलक रहा है वही तो जोबन टपक रहा है
नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिए थे
ज़र्रे झड़कर तेरी पैज़ारों के
ताज सर बनते हैं सय्यारों के

बतौर नमूना मैंने चन्द अशआर पेश कर दिये हैं। ताजुश्शरीआ साहिब के दीवान में ऐसे बहुत से अशआर हैं जिन में बुलन्द से बुलन्द ख़ियालात पेश की गयें हैं,इन

अशआर को इस दीवान में तलाश कीजिए उसका बख़ूबी अन्दाज़ा हो जायेगा।

2– मुताला काइनातः

बक़ौल जामी शाइरी की तीन शर्तें हैं। तख़ील,मुताला काइनात और सादगी उन में से पहली शर्त का तज़करा क़दरे तफ़सील के साथ हो चुका है। अब रही बात मुताला काइनात की। इस मैदान में भी वह किसी से कम नहीं। उन का ज़हिन निहायत ही वसीअ और खिला हुआ है। मौसूफ़ ने काइनात के एक एक ज़र्रे,गुल व बुलबुल सर्द,क़मरी तबस्सुम,लताफ़त और पाकीज़गी का मुताला किया है। फिर ख़ियाल की आमीज़िश से उस में मन्तक़ी तरतीब दी है जो निहायत ही फ़रहत अंगेज़ है और दिल में उतर जाने वाली है। नीज़ इस मुताला काइनात से जाना का जो तसव्वुर,जो ख़ियाल पेश किया गया है वह बिल्कुल लतीफ़ तर है। आइये उसका भी जलवा देखते जायें।

वही तबस्सुम वही तरन्नुम वही निज़ाकत वही लताफ़त
वही हैं दज़दीदा सी निगाहें कि जिन से शौखी टपक रही है
गुलों की खुशबू महर रही है दिलों की कलियाँ चटक रही हैं
निगाहे उठ उठ के झुक रही हैं एक बिज्ली चमक रही है

इन अशआर में मुताला काइनात की जो जलवा नुमाई है। उसे फ़रामूश नहीं किया जा सकता। इन मख़्तलिफ़ औसाफ़ से जो रुख़ ज़ेबा तैयार हो रहा है हुसन शौख़ या सूरत का रम्ज़ बयान किया गया है वह निहायत ही ख़ूब सूरत का रम्ज़ बयान किया गया है। वह निहायत ही ख़ुब सूरत और अछूता है जो दिल को भा जाने वाला है।

3– सादगी

कलाम में शाइरी में सादगी का होना कोई ऐब नहीं है बल्कि यह भी एक क़िस्म की परकारी है और हज़ार तस्नअ़ व बनावट से बेहतर है। अल्फ़ाज़ की तराश ख़राश में मज़ामीन को पैचीदा दर पैचीदा बना देना कोई दानिशमन्दी नहीं है। कभी कभी सादगी भी ज़ेवर का काम देती है।

तकल्लुफ़ से बुरी है हुस्न ज़ाती
क़बाये गुल में गुल बोटा कहाँ है

ताजुश्शरीआ़ ने कभी भी जज़बात के बयान में ख़ियालात के पेश करने में किसी क़िस्म की बनावट और तस्नअ़ से काम नहीं लिया है बल्कि हलके फुलके अल्फ़ाज़ में उन जज़बात व ख़ियालात को पेश कर दिया है। जिस से उनकी शाइरी में जज़ब व कशिश लफ़्ज़ व रअ़नाई,शौख़ी बांकीन पैदा हो गया है। वह सादगी की जिस राह से गुज़रते हैं तो फ़ितरी त़ौर पर लोग एहसास करने लगते हैं कि इस ज़मीन में और हलके फुलके अल्फ़ाज़ में शाइरी कोई मुश्किल नहीं मगर जब मैदान में उतरते हैं तो महसूस होता है वह सहल मुम्तनअ़ के मुमताज़ शाइर हैं कि उन की तक़लीद उन के लब व लहजा की पैरवी और ज़ौक़ व शौक़ का हुसूल इतना आसान नहीं है जितना कि वह समझते हैं।

तख़्त ज़रीं है न ताज शाह है
किया फ़क़ीराना बादशाही है

फ़क़ीर पर शान यह कि ज़ेरे नगीं
माह से ले कर करता बमाही है

इक निगाह करम से मिट जाये
दिल पर अख़तर के जो सियाही है

शहिन्शाह दो आलम का करम है
मेरे दिल को मयस्सर उन का ग़म है

यहाँ क़ाबू में दिल को अख़तर
यह दरबार शाह उम्म है

अहले दिल ही यहाँ नहीं कोई
किया करें हाल ज़ार की बातें

पी के जाम मोहब्बत जा नाँ
अल्लाह अल्लाह खुमार की बातें

हर घड़ी वजद में रहे अख़तर
कीजिए इस दियार की बातें

वाह किया सादगी है,किया ख़ुलूस़ व पैयारा है। अल्फ़ाज़ हैं कि जो निहायत ही स़हल और आसान हैं जिस से दिल बाग़ बाग़ हो रहा है। ज़हिन व दिमाग़ में कैफ़ व सरवर का आ़लम है। मैंने जिन उसूल तन्क़ीद के तेह़त इस मजमूआ़ नअ़त का जाइज़ा लिया है इस से यह अन्दाज़ा हो गया होगा कि ताजुश्शरीआ़ एक फ़न कार शाइर हैं। एक कामयाब और फ़िलबदीह गो शाइर हैं। लेकिन इस ह़क़ीक़त का इन्किशाफ़ भी ज़रूरी है ताजुश्शरीआ़ ऐसे शाइरों और अदीबों में नहीं हैं जो शाइरी तो करते हैं अदबी तख़लीक़ में हिस्स़ा लेते हैं मगर समाज मुआ़शिरा और इर्द गिर्द के ह़ालात से नावाक़िफ़ हैं लेकिन हमारे मह़बूब शाइर की समाजी ह़ालात और इर्द गिर्द के माह़ोल से ला तअ़ल्लुक़ नहीं। बल्कि अपनी तख़लीक़ में वह ऐसा नुस्ख़ा कीमया पेश करते हैं जिस से समाज की इस़्लाह़ हो सकती है। वह समाज के उ़यूब पर तन्ज़ भी करते हैं लेकिन ऐसा तन्ज़ जो नशरत का भी काम करे और चुभने से दर्द का भी एहसास न हो। वह दुनिया के त़ौर त़रीक़े पर जिस ख़ुबसूरती से तन्ज़ करते हैं जिस अछूते पैराये में बयान करते हैं इस से

दिलकशी और रानाई का पहलू नुमाया होता है। वह फ़रमाते हैं।

कौन होता है मुसीबत में शरीक व हमदम
होश में आया नशा सा तुझे हर दम किया है
कैफ़ व मस्ती में यह मदहोश ज़माना वाले
ख़ाक जानें ग़म व आलाम का आलाम किया है
इन से उम्मीद वफ़ा हाये तेरी नादानी
किया ख़बर उन को यह किरदार मुअज़्ज़म किया है
वह जो हैं हम से गुरेज़ा तो बला से अपनी
जब यही तौर जहाँ है तो भला ग़म किया है
मीठी बातों पे न जा अहले जहाँ के अख़तर
अक़्ल को काम में ला ग़फ़लत पैहम किया है।

शाइरी सिर्फ़ क़ाफ़िया पैमाई का नाम नहीं है। ख़ुबसूरत अल्फ़ाज़ और शौअला बदामाँ जुमलों के इस्तेमाल का नाम नहीं है। बल्कि इस में हुस्न सूरत के साथ साथ हुस्न मअ़ना भी हो। ज़ियाऐ लफ्ज़ी के साथ साथ ज़ियाऐ मअ़नवी भी हो। बड़े बड़े दानिशमन्दों,फ़लसफ़ियों,मुदब्बरों और मुफ़क्किरों ने शाइरी की अज़मत का ऐतिराफ़ किया है और उन अस्बाब की तलाश की है जिस से शाइरी में अज़मत बलन्दी और तरफ़अ़ पैदा होता है। मैं सिर्फ एक फ़लसफ़ी का क़ौल नक़्ल कर रहा हूँ। लान जाती नस जो एक बड़े फ़लसफ़ी थे और उन्होंने अदब का खुले दिल से ऐतिराफ़ किया है। उनके नज़दीक पाँच ऐसे अस्बाब हैं जिन से शाइरी में अज़मत और तर्फ़ा आता है। वह यह हैं।

1– ख़्याल बुलन्द हो
2– सनअ़तों का इस्तेमाल हो
3– मेहनत और तवज्जोह से अलफ़ाज़ का इन्तिख़ाब किया गया हो

4– जज़बात में ऐसी शिद्दत हो कि पढ़ने वाले के दिल में उतर जायें

5– लफ़्ज़ों की तरतीब से हम आहिंगी ज़ाहिर हो और नग़मगी पैदा हो जो न सिर्फ़ कानों को भाती हो बल्कि जज़बात को भी बेदार करती हो।

किया यह तमाम अस्बाब अ़ल्लामा अज़हरी की शाइरी में पाये जाते हैं इस सवाल का जवाब अ़मली तौर पर ही दिया जा सकता है। में इस सवाल के जवाब में कहूँ। हाँ। इस से बेहतर है कि उसका एक सरसरी जाइज़ा लेते चलें। ताकि उनकी शाइरी में अ़ज़मत के जो राज़ हाये सर बस्ता हैं वह तशत अज़बाम हो जायें इन पाँचों में से अव्वल यानी "ख़्याला बलन्द हो"उसकी वज़ाहत हो चुकी है। मज़ीद इस पर गुफ़्तगु करना सई ला हासिल होगी।

अरबाबे इल्म व दानिश की नज़र में

मौलाना अहमद अ़ली क़ादरी रज़वी,बांसा शरीफ़ ज़िला बाराबंकी

(1) **हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्दः** अख़तर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम इस काम को आन्जाम दो। मैं तुमहारे सुपुर्द करता हूँ''

लोंगों से मुख़ातिब हो कर मुफ्ती आज़म ने फ़रमायाः

''आप लोग अब अख़तर मियाँ सल्लमहु से रजूअ़ करें उन्हीं को मेरा क़ाइम मक़ाम और जानशीन जानें''(मुफ़्ती आज़म और उन के ख़ुलफ़ा जि.1सः152)

(2) **हुज़ूर कुतबे मदीनाः** हुज़ूर कुतबे मदीना अ़ल्लामा मुफ़्ती ज़ियाउद्दीन रज़वी अ़लैहिर्रह़मा फ़रमाते हैंःमुझे मेरे मुरशिद हुज़ूर आला ह़ज़रत रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से जो कुछ मिला उन के ख़ान्वादे के शहज़ादों मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ,मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ और मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ को अ़ता कर दिया। (सवानेह़ कुतब मदीना)

(3) **हुज़ूर सय्यदुलउ़लमाः**हुज़ूर सय्यदुल उ़लमा मुफ़्ती सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा बरकाती मारहरवी अ़लैहिर्रह़मा ने(हुजूर ताजुश्शरीआ़ को)जमीअ़े सलासुल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और दुआ़ओं से नवाज़ा(मुफ़्ती आज़म और उन के ख़ुलफ़ा सः162)

(4) **हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लतः**एक स़ाह़िब की वालिदा हुज़ूर मुजाह्दिे मिल्लत से मुरीद होना चाही तो आप ने फ़रमाया

मियाँ!सरकार आ़ला ह़ज़रत के शहज़ादे ह़ज़रत अज़हरी मियाँ की मौजूदगी में ऐसा कैसा हो सकता है कि मैं मुरीद करूँ,उन्हें से मुरीद करवाइये"

दूसरी रिवायत है कि"ह़ज़रत ने फ़रमाया कि मैं ह़ज़रत अज़हरी मियाँ स़ाह़ब के सामने से हो कर कैसे गुज़र सकता हूँ आख़ीर कार उ़कुबा दरवाज़े से ह़ज़रत अन्दर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाते कि कोई तेज़ आवाज़ में न बोले कि ह़ज़रत अज़हरी मियाँ तशरीफ़ फ़रमा हैं, आहिस्ता बोलो शहज़ादे कि़याम फरमा हैं"(रावी मौलाना अ़ब्दुलमुस़्तफ़ा ह़शमती, रदोली शरीफ़)

(5) **क़ाज़ी शमसुलउ़लमा**:एक दिन हम तमाम त़ालिब ह़ज़रत क़ाज़ी(क़ाज़ी शमसुलउ़लमा अ़ल्लामा शमसुद्दीन रज़वी,जौनपुरी,तिलमीज़ हुज़ूर स़दरुश्शरीअ़ अ़लैहिमुर्रह़मा) स़ाह़ब के दर्स में मौजूद थे और ह़ज़रत पढ़ा रहे थे। एक बुज़ुर्ग सिफ़त इंसान तशरीफ़ लाये। क़ाज़ी स़ाह़ब ने खड़े हो कर उन का इस्तिकबाल किया आने वाले को अपनी मसन्द पर बठाया और ख़ुद मुअद्दब हो कर बैठ गये और त़ालिब इल्मों के ज़हिन व दिमाग़ में किया तास्सुर उभरा? उसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैंने मह़सूस किया। क़ाज़ी स़ाहि़ब जैसी शख़्सियत। अल्लाह अल्लाह उनकी इल्मी शान व शौकत का यह आ़लम था कि बड़े बड़े उन के सामने ति़फ़्ल मकतब मालूम होते थे अपने असातिज़ा में से किसी से मैंने दरयाफ़्त किया,ह़ज़रत कौन हैं फ़रमाया यह ह़ज़रत अज़हरी मियाँ कि़बला हैं। (रावी मौलाना शमशाद हुसैन रज़वी बदायूँ)

(6) **हुज़ूर अहसनुल उ़लमा** :14/15/नोम्बर 1984 ई. को मारहरा मुत्तहरा में उर्स क़ास्मी की तक़रीब में ह़ज़रत अह़सनुल उ़लमा मौलाना मुफ़्ती सय्यद ह़सन हैदर मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन,ख़ान्क़ाह बरकातिया मारहरा(अ़लैहिर्रहमा)ने जानशीन-ए-मुफ़्ती आ़ज़म का इस्तिक़बाल क़ाइम मक़ाम मुफ़्ती आज़म अ़ल्लामा अज़हरी ज़िन्दाबाद के नअ़रा से किया और मजमा कसीर में उ़लमा व मशाइख़ और फ़ुज़्लाव दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ़्ती-ए-आ़ज़म को यह कह कर।

''फ़क़ीर आस्ताना आ़लिया क़ादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से क़ाइम मक़ाम मुफ़्ती आ़ज़म अ़ल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब को सिलसिला -ए-क़ादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम ख़िलाफ़त व इजाज़त से माज़ून व मजाज़ करता हूँ। पूरा मजमा सुन ले तमाम बरकाती भाई सुन लें और यह उलमा-ए-किराम(जो उर्स में मौजूद हैं)इस बात के गवाह रहें।(''मुफ़्ती आ़ज़म और उन के ख़ुलफ़ा अज़ मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी)

(7) हुज़ूर मुफ़स्सिर-ए-आ़ज़म हिन्द:डाक्टर अ़ब्दुलनईम अ़ज़ीज़ी लिखते हैं:''वालिद माजिद मुफ़स्सिर-ए-आ़ज़म हिन्द ने अपने फ़रज़न्द अरजमन्द को क़ब्ले फ़राग़त इल्म आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा का जानशीन बनाया एक तह़रीर भी ऐनायत फ़रमाई।''

ह़ज़रत रह़मानी मिया अ़लैहिर्रह़मा माहनामा आ़ला ह़ज़रत में बेउ़नवान कवाइफ़ दारुलउ़लूम में तह़रीर फ़रमाते

हैं''बवजहे अ़लालत(वालिद माजिद)यह तवक़्क़अ नहीं कि अब ज़्यादा ज़िन्दगी हो बिना बरीं ज़रूरत थी कि दूसरा क़ाइम मक़ाम हो। लिहाज़ा अख़तर रज़ा सल्लमहु को क़ाइम मक़ाम,व जानशीन आला ह़ज़रत बना दिया गया,जानशीन का अ़मामा बांधा गया और अ़बा पहनाई गई।

(8) अ़ल्लामा तह़सीन रज़ा ख़ानः अलहम्दु लिल्लाह कि ह़ज़रत अ़ल्लामा अज़हरी मियाँ सल्लामा ने बावजूद गोना गों मसरूफ़ियात और अ़लालत त़बअ़ इस का तर्जमा (मोअ़तक़िद) फ़रमाया ताकि उसका फ़ाइदा आ़म हो जाये। उस का बिलइस्तिआ़ब मुत़ाला तो मैं न कर सका मगर जस्ता जस्ता जिन मक़ामात को मैंने देखा उन से बड़ी ख़ुशी हुई कि बहुत सलीस और बिलमुह़ावरा तर्जमा किया है।(अल मोअ़तक़िद स:38)

(9) शारेह़ बुख़ारीः ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफुल ह़क़ अमजदी साबिक स़द्र शौअ़बा अलजामिअ़ातुल अशरफ़िया मुबारक पुर ज़िला आ़ज़म गढ़ जो तक़रीबन ग्यारह साल तक बरेली शरीफ़ में हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म हिन्द की सर परस्ती में फ़तावा लिखते रहे और जिन्हें मुफ़्ती आ़ज़म की उ़म्र ही में नाइब मुफ़्ती आज़म कहा और लिखा जाता रहा उन की ज़बानी राक़िमुस्सुतूर ने कई बार उन का यह तासिर सुना कि''ह़ज़रत मुफ़्ती आ़ज़म हिन्द को अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी पच्चीस सालों में जो मक़बूलियत व हर दिल अ़ज़ीज़ी ह़ासिल हुई वह आप के विस़ाल के बाद अज़हरी मियाँ को बड़ी तेज़ी के साथ इब्तिदाई सालों ही में ह़ासिल हो गई और बहुत जल्द लोगों के दिलों में अज़हरी

मियाँ ने अपनी जगह बना ली(अ़ल्लामा यासीन अख़तर मिस्बाही)

(10) **अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी**:अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर अज़हरी मियाँ को ज़बर दस्त मक़बूलियत दी है। ऐसी मक़बूलियत तो देखने में न आई। देखो तो सही कि अज़हरी मियाँ को मुख़्तलिफ़ जगह प्रोग्राम में जाना था राँची ऐयरपोर्ट पर उतरे फिर बज़रीआ़ कार फ़लाँ जगह पहुँचना था मगर राँची में उन से मिलने के लिए हज़ारों मुश्ताक़ों की भीड़ जमा हो गई थी। जब कि रान्ची में रुकना न था। सिर्फ़ वहाँ गुज़रना था। मगर आनन फ़ानन इतने लोगों का इकठ्ठा हो जाना बड़ी बात है। मालूम होता है कि कोई दूसरी मख़लूक़ लोगों के कानों तक बात पहुँचा देती है और आनन फ़ानन सब जमा हो जाते हैं।(रावी मुफ़्ती आ़बिद हुसैन नूरी–टाटा)

(11)' **अ़ल्लामा मुहम्मद मुशाहिद रज़ा ख़ाँ हशमती**: फ़क़ीर हक़ीर ने .केताब बनाम''टाई का मसअला''(मुसन्निफ़ा अ़ल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी मद्द ज़ुल्लाहुलआ़ली)बग़ौर व ख़ौज़ मुताला किया अपने दलाइल के लिहाज़ से वह फ़तावा(अ़ल्लामा **अज़हरी मियाँ** स़ाहब क़िबला का फ़तवा टाई का मसअला'')किसी की तस्दीक़ का मोहताज नहीं है फिर भी इम्तिसाल अम्र के लिए फ़क़ीर तस्दीक़ करता है। (टाई का मसअला)

(12) **अ़ल्लामा ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी**: हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने उन अहम मुबाहिस का सलीस उर्दू ज़बान में ऐसा बर जस्ता तर्जमा(अलमोअ़तक़िदुल मुन्तक़िद)फ़रमाया

है कि तर्जमा ही से मफ़हूम वाज़ेह हो जाता है उसके बा वजूद जा बजा पेचीदा मसाइल की ऐसी अक़दा कुशाई की है कि बे इख़्तियार ज़ुबान से निक्ल पड़ता है कि यह आला ह़ज़रत और मुफ़्ती–ए–आज़म के फ़ैज से ताजुश्शरीआ ही का ख़ास्सा है। (अलमोअतक़िद स:46)

(13)**अल्लामा अ़ब्दुलहकीम शर्फ़ क़ादरी**:हुज़ूर ताजुश्शरीआ से ह़जरत के रवाबित बहुत गहरे थे सफ़र पाकिस्तान के मौक़ा पर वालिद गिरामी अलैहिर्रह़मा से मसाइल शरइया पर सन्जीदा माहोल में गुफ़्तगु हुआ करती थी ह़ज़रत वालिद माजिद कुद्दुस सिर्रुहु हुज़ूर ताजुश्शरीआ के इल्म व फ़ज़ल,फ़िक़्ही बसीरत और ह़दीस दानी के मोअतरिफ़ थे। (बरिवायत डाक्टर मुम्ताज़ सदीदी)

(14) **मुफ़्ती–ए–आज़म राजिस्थान**:अल्लाह रब्बुल इज़्जत ने ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अख़तर रज़ा क़ादरी अज़हरी मद्द ज़ुल्लाहुल आली को बे शुमार फ़ज़ाइल और मुनाक़िब जलीला से नवाज़ा है मैं आप के इल्म व फ़ज़्ल ह़ज़्म व इत्क़ा,तस्नीफ़ी,फ़िक़्ही तब्लीग़ी ख़िदमात से बहुत मुतास्सिर हूँ इस वक़्त आप मरज–ए–उ़लमा व फ़ुक़्हा व मुफ़्तियाने ऐज़ाम हैं अरबी अदब में आप हुज़ूर हुज्जतुलइस्लाम ह़ज़रत अ़ल्लामा अश्शाह मुफ़्ती ह़ामिद रज़ा क़ादरी अ़लैहिर्रह़मा के परतू हैं नीज़ हुज़ूर सय्यदिना आला ह़ज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी का आप पर ख़ुसूसी फ़ैज़ान है जिस की वाज़ेह नज़ीर यह है कि एशया यूरौप की बलन्द आहिंग चोटियों पर आप की अ़ज़मतों के

परचम लहरा रहे हैं। और आप की इल्मी जलालत व शख़्सी वजाहत के आगे बड़े बड़ों के सरे ख़म नज़र आते हैं।(मुआ़रिफ़ मुफ़्ती आज़म राजिस्थान स:383)

(15) **अल्लामा फ़ैज़ अहमद ववैसी:**हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने अलमोअतक़द और अलमुस्तनद का तर्जमा फ़रमाया फ़क़ीर ने सआ़दत समझ कर किताब मज़कूर का मुत़ाला किया। उस से फ़क़ीर इल्मी त़ौर पर खुब मुस्तफ़ीद हुआ। फ़क़ीर यकीन और निहायत वसूक़ से अ़र्ज करता है कि अ़वाम के लिए तो अक़ाइद के मुआ़मलात में बिला शुबह यह तर्जमा शरीफ़ रहबर व हादी है लेकिन उ़लमा–ए–किराम के लिए भी बेहतरीन दस्तावीज़ है। (अलमोअतक़िद स:52)

(16) **मुफ़्ती अ़ब्दुल्लत़ीफ़ गौजरानोला:**फ़क़ीर ने किताब मुस्तत़ाब का उर्दू तर्जमा कही कही से मुलाहिज़ा किया अलहम्दु लिल्लाह जानशीन मुफ्ती आज़म हिन्द ताजुश्शरीआ़ ह़जरतुल अ़ल्लाम मुफ़्ती मुह़म्मद अ़ख़तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी मद्द ज़ुल्लाहुल आ़ली ने बड़ी अ़र्क़ रेज़ी से यह तर्जमा फ़रमाया है।

यकीनन हुज़ूर ताजुशरीआ मद्दज़ुल्लाहुलआ़ली हर ह़वाले से अपने आबा व अजदाद के सच्चे जानशीन हैं। अल्लाह तआ़ला उन का साया अहले सुन्नत पर दराज़ फ़रमाये। (अलमोअ़तक़िद स:66)

(17) **अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह ख़ाँ अ़ज़ीज़ी:** ह़ज़रत अ़ल्लामा व मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अख़रत रज़ा ख़ाँ साह़िब क़िबला मद्दजिल्लाहुलआ़ली,जनशीन हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द

अ़लैहिर्रह़मा वर्रिज़वान के रिसाले मुबारका मुस्तमात(टाई का मसअला)पाके मुत़ाला का शर्फ़ ह़ासिल हुआ। हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द के फ़तवा और ह़ज़रत मुस़न्निफ़ अ़ल्लामा के दलाइल व बराहीन से अह़क़र को इन्शिराह़ स़द्र ह़ासिल हुआ कि टाई का इस्तेमाल करना नाजाइज़ व ह़राम है। मुसलमानों को उस से एह़तिराज़ करना चाहिए।(टाई का मसअला 41)

(18) **मौलाना सय्यद वेवैस मुस़्तफ़ा वास्त़ीः** फ़क़ीर क़ादरी को जानशीन मुफ़्ती आ़ज़म हिन्द ह़ज़रत ताजुशरीआ़ अ़ल्लामा अज़हरी मियाँ स़ाह़ब से बारहा मुलाक़ात का शर्फ़ ह़ासिल होता रहता है यह मुलाक़ात और राबते़ देरीना तअ़ल्लकुस के बाइस हैं जो ख़ान्क़ाह बलगिराम और ख़ान्क़ाह बरेली में हमेशा से रहा है।

मौसूफ़ को ख़ानवादा–ए–रज़वियत में वह मक़ाम ह़ासिल है कि ताजुश्शरीआ़ और क़ीज़ियुलक़ुज़्ज़ात जैसे आ़ला ख़िताब से याद किए जाते हैं। (अलमोअ़तक़िद सः43)

(19) **अ़ल्लामा अबुन्नस़र ख़लीफ़ा क़ुतब मदीनाः** ह़ज़रत अ़ल्लामा अख़रत रज़ा ख़ाँ स़ाह़िब ख़ान्दान आ़ला ह़ज़रत के फ़ाज़िल मुह़क़्क़िक़ हैं जिन के फ़ैज़ान से एक ज़माना मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ हो रहा है अब अहले सुन्नत का यह फ़रीज़ा है कि वह इस किताब(अलमोअ़तक़द)का मुताला कर के उसे दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करें(अलमोअ़तक़द सः55)

(20) **मुफ़्ती नईम अख़तर नक़्शबन्दी लाहूरीः** हुज़ूर मुफ़्ती अख़रत रज़ा स़ाह़ब को इल्मी मक़ाम का किया कहना इस

किताब(अलमोअ़तक़द)के बारे में सिर्फ़ इतना ही कहूँगा कि यह किताब ह़ज़रत के अ़र्बी अदब पर महारत की दलील है। और यह किताब साबित करती है कि आप वाक़ैई जानशीन –ए–मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द हैं(अलमोअ़तक़द स.58)

(21)**अ़ल्लामा सय्यद अ़लवी मालिकी**: जानशीन–ए–मुफ़्ती –ए–आज़म अ़ल्लामा मुह़म्मद अख़तर रज़ा ख़ा अज़हरी क़ादरी बरेलवी दामत बरकातुहुमुलक़दरिया1407 हिजरी 1988ई. में जब ह़ज व ज़ियारत के लिए तशरीफ़ ले गये तो अ़ल्लामा सय्यद मुह़म्मद अ़लवी मालिकी ने अपनी तस्नीफ़ कर्दा किताबें एनायत फ़रमायें और बहुत ही क़द्र व मन्ज़िलत की नज़र से देखा इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी बरेलवी के पोते होने की हैसियत से और हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रुहु के जानशीन की वजह से बहुत इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाई और दुआ़इया कलिमात से नवाज़ा (मुफ़्ती आज़म और उनके ख़ुलफ़ा स517)

(22) **प्रोफ़ीसर मसऊद अह़मद मज़हरी** :(इमाम अह़मद रज़ा)के जानशीन उन के पर पोते अ़ल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी हैं,बड़े मुत्तक़ी और आ़लिमे बा अ़मल1983 ई में पाकिस्तान तशरीफ़ लाये। अज़ राह करम ग़रीब ख़ाने पर ठठ भी तशरीफ़ लाये, एक अ़रबी नअ़त की फ़रमाईश की। क़लम बरदाशता उसी वक़्त लिख दी,उस से अन्दाज़ा होता है अ़रबी ज़बान ने इमाम अह़मद रज़ा के घराने में घर कर रखा है,यह उसी घराने का इम्तियाज़ ख़ास़ है।(उजाला स:26)

(23) **शैख़ अबूबक्र क़ादरी (केरला)**:समाह़तुलमुफ़्ती ह़ज़रत

अल्लामा शैख़ मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अलअज़हरी साहिब मुतअनल्लाह बतौल हयातिल्मुबारका की शख़्सियत आलमे इस्लाम में मरकज़ी हैसियत रखती है आप इमाम अहले सुन्नत मुजदिददे आज़म की मसनद के सच्चे जानशीन और क़ाबिले एअतिमाद मुफ़्ती हैं। आप ने जामिअतुर्रज़ा बरेली शरीफ़ क़ाइम कर के अहले सुन्नत पर एहसाने आज़ीम फ़रमाया है। (इक्तिबास तक़रीर इमाम अहमद रज़ा कांफ्रेंस बमौक़ा उर्स रज़वी)

(24) **अल्लामा मुहम्मद गुफ़रान सिद्दीक़ी(अमरीका):**फ़क़ीर हक़ीर गफ़रलहु आज आस्ताना–ए–आलिया रज़विया हाज़िर हुआ तो हुज़ूर जानशीन सरकार मुफ़्ती आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर ताजुश्शरीआ क़ाज़ियुक़ुज़्ज़ात हज़रत अल्लामा अज़हरी मियाँ साहब दामत बरकातोहुमुलआलिया की क़दम बोसी नसीब हुई। सरकार मद्दज़ुल्लाहुलआली ने फ़तावा टाई के मुतअल्लिक़ अता फ़रमाया हक़ीक़त यह है कि हज़रत ने (**GROLIER ENCYLPEDIA**)की असल फ़ोटो स्टेट कापी दे कर अहले इस्लाम पर हुज्जत क़ाइम कर दी है और फिर शरई हैसियत से जो हुक्म फ़रमाया है वह आप का ही हिस्सा है। मौला करीम अहले इस्लाम को अपना ज़ाहिर और बातिन अपनी सरोकारों की तरह बनाने की तौफ़ीक़ व हिम्मत अता फ़रमाय।(टाइ का मसअला 36)

(25) **मुफ़्ती मुजीब अशरफ़ रज़वी:**हज़रत वाला मरतबत जानशीन हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द ताजुश्शरीआ क़ाज़ियुलक़ुज़्ज़ात अल्लामा, मौलाना अख़्तर रज़ा साहिब क़िब्ला का तहक़ीक़ी जवाब टाई के अदम जवाज़ के बारे में नज़र से गुज़रा जो बिला शुबह हक़ व सवाब और दलाइल शरइया से मुबरहन है।(टाई का मसअला स42)

(26)अ़ल्लामा **बदरुलक़ादरीः** हालैन्डःहालैन्ड और बलीजीम के अन्दर सिलसिला रज़विया की इशाअ़त हो रही है। कई ख़ानवादों को बरेली शरीफ़ भेज कर दाख़िल सिलसिला कराया गया है। बाज़ लोगों ने ह़रमैन त़य्यबैन की सर ज़मीन पर जानशीन मुफ़्ती आ़ज़म ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी दामत बरकातुहुमुल आ़लिया के दामन से वाबस्तगी ह़ासिल की है और एक बार के सफ़र हालैन्ड के दौरान ह़ज़रत जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म ने"क़ादरियत रज़वियत"के अन्वार से उस ख़ित्ता तारीक को ख़ुद रौनक़ भी बख़शी है।

रहे यह जारी क़ियामत तक उन का फ़ैज़ आम
जहाँ में फूले फले बाग़ रज़वी नूरी (बदर)

(ताजदारे अहले सुन्नत स225)

अख़्तरे कामिल है दोस्तो

फ़ल्के रज़ा अख़्तर कामिल है दोस्तो
किस दर्जा पुर ज़िया है अख़तर रज़ा की ज़ात
जिस तरह बे मिसाल है अख़तर रज़ा की ज़ात
इस तरह बा कमाल है अख़तर रज़ा की बात
चुप रह रक़ीब रु सियाह बद ख़्वाह बद नसीब
सोने के मोल तल्ती है आखिर कहीं यह धात
नग़मा रज़ा का गोंजे क्योंकर न धर में
फ़िक्र रज़ा की बीन है अख़रत रज़ा की बात
अदआ–ए–शेर न इरफ़ान शाइरी
कहदी वफ़ूरे इश्क में अख़तर रज़ा की बात

अज़ : मौलाना इरफ़ान मशहदी(इंगलैन्ड)

हैं वह शेरे रज़ा शाह अख़्तर रज़ा

नाइबे मुस्तफ़ा शाह अख़तर रज़ा
ज़िल्ले ग़ोसुलवरा. शाह अख़तर रज़ा
जिस से मिलती हमको बराबर ज़िया
है वह रौशन दिया शाह अख़तर रज़ा
वारिस व आशना–ए–उलूमे रज़ा
रब ने तुमको किया शाह अख़तर रज़ा
गुस्ले काबा में शिरकत हुई आप की
वाह वा मरहबा शाह अख़रत रज़ा
देखते ही जिसे भागते हैं अदू
हैं वह शेरे रज़ा शाह अख़तर रज़ा
शर्क़ में ग़र्ब में जिस तरफ़ देखिये
नाम है आपका शाह अख़तर रज़ा
सब के दिल की कली खिल उठी
पहुँचे हैं जिस जगह शाह अख़रत रज़ा
दरमियाने मशाइख़ हैं मिस्ले क़मर
मेरे अख़तर रज़ा शाह अख़तर रज़ा
ख़ाली कासा लिये क़ादरी है खड़ा
भीख कर दो अता शाह अख़तर रज़ा

अज़:अमीरे शरीअत मुफ़्ती अशफ़ाक़ हुसैन क़ादरी देहली

वह है ताजुश्शरीआ हमारा

अलहे सुन्नत का दुलारा   आला हज़रत का है प्यारा
मुफ़्ती–ए–आज़म ने जिसको संवारा   वह है ताजुश्शरीआ हमारा

मिस्र में इनकी अज़मत का ढंका बजा   फखरे अजहर का एवार्ड इनको मिला
अहले दानिश ने माना इन्हे पेशवा   गोसे आजम के सदके यह मनसब मिला
इनके दामन में आ जाआ गोसे आज़म के हो जाओ
ग़ोस व ख़्वाजा रज़ा का प्यारा वह है ताजुशरीआ हमारा

नाम जिनका है अख़तर रज़ा अज़हरी   देखकर इन को खिलती है दिल की कली
वह शरीअत की करते है बस पैरवी   हिन्द में चीफ जस्टिस की कुर्सी मिली
इनकी सूरत भी हंसी है इनकी सिरत भी हंसी हैं
जिनका फ़तवा शरीअत की धारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

जिसने काबे के अन्दर नमाज है पढ़ी   गुस्ले काबा की खिदमत भी अन्जाम दी
मेरे मुरशिद की काबे से इज्जत बढ़ी   हासिदों के दिलों में मची खलबली
इनकी अज़मत को पहचानो इन के मनसब को भी जानो
अलहे सुन्नत का है जो सहारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

गुलशने रज़वियत का जो रैहान है   इन पे कुरबान सुन्नी मुसलमान है
मदह ख़्वाह अपने मुरशिद का नोअ़मान है   मेरे मुरशिद का हासिद परेशान है
इनका कहना दिल से मानो इनको अपना आका जानो
आला हज़रत की आखों का तारा वह है ताजुश्शरीआ हमारा

अज़:मौलाना अबूनोअ़मान इस्राईल रज़वी मिस्वाही बहैड़ी

चशम-ए-फ़ैज़े रज़ा

ख़ुदा आगाह मर्दे बा ख़ुदा अख़तर रज़ा खाँ हैं
हक़ीक़त में आशना अख़तर रज़ा ख़ाँ हैं
बदल देता है तक़दीरें इशारा जिन निगाहों का
यह वह साहिबे नज़र,वह बा सफ़ा अख़तर रज़ा ख़ाँ

रब की रमज़े ज़िन्दगी से आशना-ए-अख़तर रज़ा
सर ता पा इश्क़े मुहम्मद मुस्तफ़ा अख़तर रज़ा
मुफ़्ती-ए-आज़म के हैं क़ाइम मक़ाम वह जानशीन
चश्म-ए-फ़ैज़े रज़ा बिलवस्ता अख़तर रज़ा

दिल शिकस्ता दर्द से बीमारे ग़म के वास्ते
आप का दर है दर दारुशिशफ़ा अख़तर रजा
मेरी जानिब जब हवादिस का बढ़ा सेले गिराँ
आ गया लब पर मेरे बे साख़्ता अख़तर रज़ा

अज़ः ज़की परवाज़ रिछा ज़िला बरेली

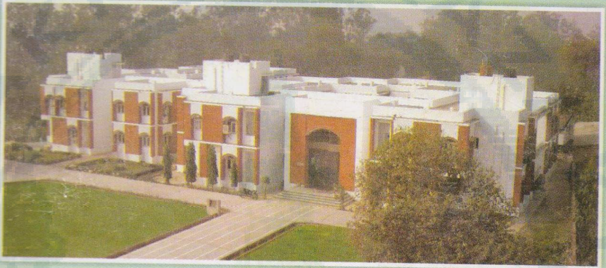
بانی وسرپرست: قاضی القضاۃ فی الہند تاج الشریعہ جانشین مفتی اعظم ہند حضرت علامہ مفتی الحاج محمد اختر رضا قادری ازہری مدظلہ العالی



مرکز الدراسات الاسلامیہ جامعۃ الرضا

CENTRE OF ISLAMIC STUDIES JAMIATUR-RAZA

Markaz Nagar, CB Ganj, Bareilly Sharif- 243502 U.P. (India)



तसानीफे हुज़ूर ताजुश्शरीया

हज़रत की उर्दु और अरबी ज़बान में लिखी हुई जुम्ला तसानीफ़ की तरतीब का काम बहुत तेज़ी से हो रहा है। इन्शा अल्लाह कुछ ही माह में दीदाज़ेब टाइटल, उमदा कागज़ और खूबसूरत तबाअत के साथ छप कर मन्ज़रेआम पर आ रही हैं। ख्वाहिश मंद हज़रात दिये गए पतें पर राब्ता कायम करें।

Published by

ISLAMIC RESEARCH CENTRE

58, Kasgran, Sodagran, Bareilly Sharif U.P.
Mob:. 09837549282, 09897385339, 08923721109
Website: www.alahazratbooks.com • E-mail: mrazvi.razvi@gmail.com